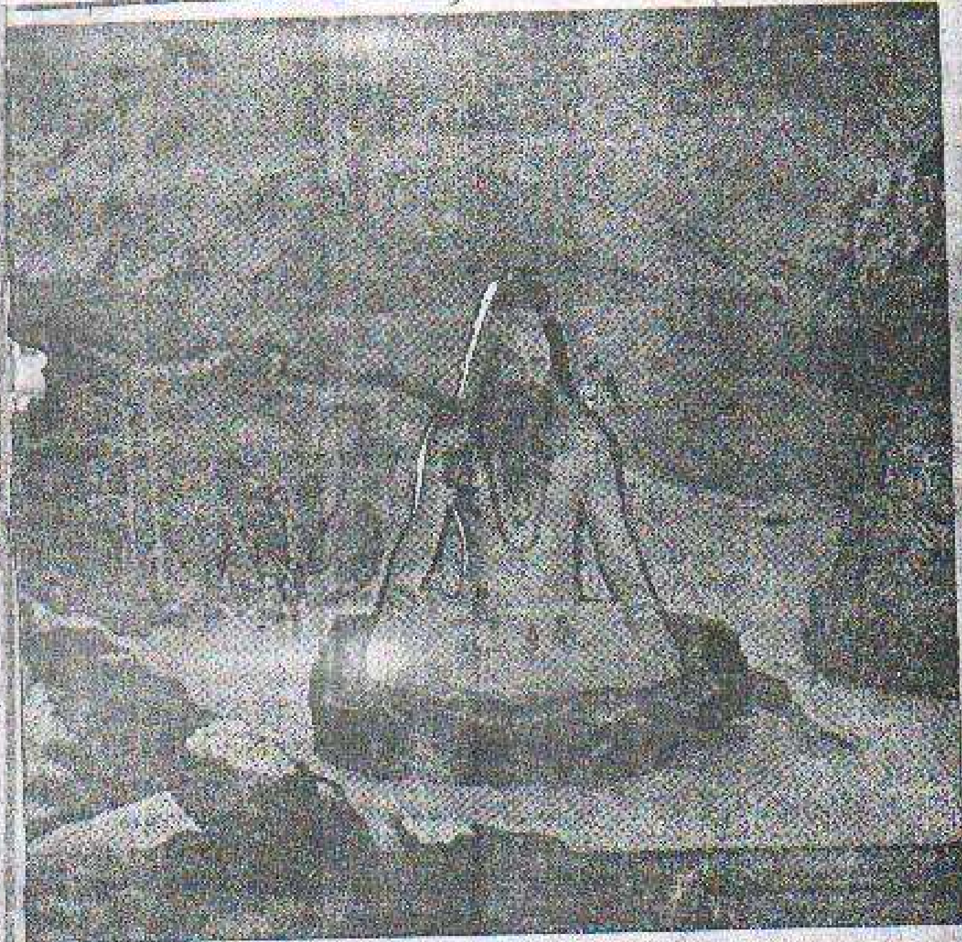
जनवरी, फरवरी 1984

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान



पूज्य गुरुदेव





सम्पादकीय......

मन्त्र तन्त्र यन्त्र विज्ञान पत्रिका का गोपनीय 'तन्त्र विशेषांक' आपके हाथ में है, विश्व में सैकड़ों ऐसी घटनाएं घटित होती रहती है, जो अपने आप में रहस्यपूर्ण है और जिनका उत्तर अब तक भी विज्ञान खोज नहीं पाया है, कुछ ऐसी ही दुर्लभ जानकारी इस पत्रिका के माध्यम से आपके सामने प्रस्तुत है।

जनवरी १९८१ से इस पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया था, प्रारम्भ करने के मूल में न तो किसी प्रकार का कोई स्वार्थ था और न किसी प्रकार की अहं तुष्टि, देख रहा था कि धीरे धीरे समाज में दुष्प्रवृत्तियां हावी होती जा रही है, गलत प्रकार के विचार, लूट-खसोट, हत्या, अपराध आदि से सम्बन्धित घटनाएं मानसिक खुराक के रूप में नयी पीढ़ी को प्राप्त हो रही है और धीरे-धीरे वे अपने मूल उत्स और संस्कृति को भूलते जा रहे है, इसी पीड़ा से छटपटाकर इस पत्रिका का प्रकाशन किया था।

और मैं आज प्रसन्नता, उमंग और हर्षातिरेक से ओत-प्रोत हूं कि आप लोगों का सहयोग मुझे मिला, आपने इस पत्रिका को ललक कर उठाया, सहयोग दिया, स्वयं सदस्य बने, दूसरे साथियों और परिचितों को सदस्य बनाया और इस प्रकार पत्रिका को जो दृढ़ आधार आप सब ने दिया है, वह अविस्मरणीय है, हमने आपके विचारों की रक्षा की है, आपने देखा होगा कि हमने किसी प्रकार का विज्ञापन स्वीकार नहीं किया, यद्यपि विज्ञापन के लिए लोग स्वयं आगे बढ़े, परन्तु अभी तक हम अपनी नीति पर दृढ़ है कि पत्रिका के पृष्ठ विज्ञापन से न भरे जांय, अपितु उनमें ठोस मौलिक और ज्ञानवर्द्धक गोपनीय सामग्री ही दी जाय, जिससे कि वे लाभ [illegible] सकें, और आने वाली पीढ़ियां इसके प्रकाश में जीवन प्रशस्त कर सकें।

पिछले वर्ष महत्वपूर्ण साधना शिविर लगाये थे और इसके माध्यम से सदस्यों ने पहली बार साधना का क्रम, स्तर और जानकारी अनुभव की, इन शिविरों में जिन साधकों ने भाग लिया था वे पूरे विश्व में साधना के प्रामाणिक आधार है, उनमें इतनी क्षमता है कि वे अन्य लोगों को साधना के मूल स्वरूप और साधना के बारे में पूरी जानकारी दे सकें उनका पथ प्रशस्त कर सकें, उन सभी साधकों को यह बीड़ा उठाना चाहिए और अपने जीवन का कुछ भाग ऐसे कार्यों में अवश्य लगाना चाहिए, जिससे कि अन्य व्यक्ति भी साधना, साधना के रहस्य, साधना की विधि और साधना का क्रम समझ सकें, तदनुकूल उसमें सफलता पा सकें।

मेरी इच्छा यह है कि प्रति माह यह पत्रिका लगभग सौ पृष्ठों की प्रकाशित हो और फिर भी इसका मूल्य न बढ़ाया जाय, इतने ही मूल्यों में लगभग सौ पृष्ठों की पत्रिका देने के लिए हम प्राणप्रण से प्रयत्नशील है, पर यह तभी सम्भव हो सकता है, जब इस पत्रिका की सदस्यता काफी बढ़े, ऐसा होने पर ही 'आफ सेट प्रिंटिंग' भी करवाई जा सकती है, पर यह तो आप लोगों पर ही निर्भर है, यदि आप इस अंक को प्राप्त कर यह संकल्प ले लें, कि एक महीने के अन्दर-अन्दर तीन नये द्विवार्षिक सदस्य बनाने ही है, और यदि सोच लें तो यह कोई मुश्किल कार्य नहीं है, पर ऐसा करते ही हमारा जो लक्ष्य है, हम उसे निश्चित रूप से प्राप्त कर सकेंगे और प्रत्येक महीने ज्यादा से ज्यादा पृष्ठों में महत्वपूर्ण सामग्री आपको प्रदान कर सकेंगे, यदि आप ऐसा करते है तो पत्रिका स्थायित्व और स्थिरता प्राप्त कर सकती है, मैं आपको यह विश्वास दिलाता हूं कि मैं अंतिम श्वास तक भी इस पत्रिका का प्रकाशन बनाये रखूंगा।

मैं आपसे सहयोग चाहता हूं, सहयोग के लिए आपके सामने उपस्थित हूं और मुझे विश्वास है कि आप में से प्रत्येक सदस्य उपरोक्त संकल्प ले कर मुझे सहयोग देंगे।

आपके दो शब्द ही मेरे लिए उत्साहवर्धक होते है, आप यह लिखें कि आपको यह अंक कैसा लगा ?

—[illegible]

शतचण्डी युक्त

महा भगवती साधना शिविर

महालक्ष्मी काली और महासरस्वती सम्पुट युक्त

१८-३-८८ से २५-३-८८ तक

इस वर्ष विक्रमी सम्वत् के प्रारम्भ में जो चैत्र नवरात्रि प्रारम्भ हो रही है, वह शास्त्रों के अनुसार सकाम्य कामदा नवरात्रि है इस नवरात्रि में जिस कामना के साथ साधना सम्पन्न की जाती है, वह कामना भगवती दुर्गा अवश्य ही पूर्ण करती है।

ज्योतिष की दृष्टि से भी इस वर्ष नवरात्रि का अपने आप में आश्चर्यजनक महत्व है, कहा गया है—

चैत्रे प्रतिपदा शुक्रे मीनेश्चन्द्र यदा यथः।
सर्व सिद्धि भवेत्तस्य नवरात्रौ स दुर्लभः॥

अर्थात्–यदि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को शुक्रवार हो और मीन का चन्द्रमा हो, तो इस प्रकार का योग पूर्णतया दुर्लभ कहलाता है और जो साधक ऐसी नवरात्रि में साधना सम्पन्न करते हैं, उसे निश्चय ही समस्त प्रकार की सिद्धियां प्राप्त होती है।

और आप स्वयं देख लें, कि इस बार चैत्र प्रतिपदा को शुक्रवार है, और मीन राशि पर ही चन्द्रमा गतिशील है, ऐसी स्थिति में यह नवरात्रि का पर्व अपने आप में दुर्लभ अद्वितीय और महत्वपूर्ण है।

दुर्लभ योग

वास्तव में ही इस नवरात्रि में यदि एक दिन भी विधि विधान के साथ साधना की जाय तो निश्चय ही उसे पूर्ण सिद्धि तो प्राप्त होती ही है, उसकी सभी प्रकार की मनोकामनाएं भी सफल होती है।

चैत्रे शुक्ला भृगु वारे प्रतिपदा या यदि भवेत्।
मीने चन्द्र रवौ यांति स योगं दुर्लभं नरः॥

विद्वानों के अनुसार–यदि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को शुक्रवार हो और मीन राशि पर ही सूर्य और चन्द्र दोनों हो तो ऐसा योग अत्यन्त दुर्लभ कहा जाता है और सौभाग्यशाली व्यक्ति और साधक ही ऐसे दिनों में गुरु चरणों में बैठ कर साधना सम्पन्न करने का सौभाग्य प्राप्त करते हैं।

और इस वर्ष ये सभी योग समाहित है, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का शुक्रवार है और एक ही राशि पर सूर्य चन्द्रमा का संयोग होने से अमृत तुल्य सकाम्य सिद्धि-

दायक योग बन गया है, ऐसे अद्वितीय और महत्वपूर्ण अवसर पर तो सौभाग्यशाली साधक ही शिविर में भाग ले कर पूर्णता प्राप्त करने में सफल हो पाते है ।

सूर्य ग्रहण

साधकों के लिए ग्रहण का अत्यधिक महत्व है और फिर यदि सूर्य ग्रहण हो और ऐसे "श्रीवर्धन सूर्य ग्रहण" में महालक्ष्मी साधना सम्पन्न की जाय तो ऐसे साधक की जन्म जन्म की दरिद्रता मिटाकर वरदायक लक्ष्मी प्रसन्न होती है और उसके समस्त दुःखों को दूर करती है ।

ॐ सर्वत्र सूर्यग्रहणे लक्ष्मी सिद्धि प्रकीर्तिते ।
सर्व दुःख हरे देवी साधकी देव दुर्लभः ॥

इस वर्ष नवरात्रि के प्रारम्भ में ही अमृतोपम सूर्यग्रहण है, जो कि साधकों के लिए अत्यन्त ही सौभाग्यदायक है, साधकों को चाहिए कि सूर्यग्रहण के अवसर पर उच्चकोटि की लक्ष्मी साधना सम्पन्न कर अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त करें ।

नवरात्रि प्रारम्भ

प्रातःकाल साधक स्नान आदि से निवृत्त हो कर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जायेंगे और फिर विशेष मन्त्रों से युक्त शास्त्रीय विधान के अनुसार पंचघट स्थापित करेंगे । (१) भगवती दुर्गा घट स्थापन (२) महालक्ष्मी घट स्थापन (३) महाकाली घट स्थापन (४) सरस्वती घट स्थापन (५) सर्वसिद्धिदायक "श्री" घट स्थापन ।

शास्त्रीय प्रमाण के अनुसार इन पांचों घटों का स्थापन साधकों के द्वारा होगा और सभी साधक अपनी मनोकामना उच्चरित कर नवरात्रि का प्रारम्भ करेंगे, जिससे कि भगवती दुर्गा प्रत्यक्ष सिद्धिदायक हो, और वे साधना में पूर्णता, सफलता एवं श्रेष्ठता प्राप्त करें ।

प्रथम दिन दुर्लभ सूर्य ग्रहण का अवसर उपस्थित हुआ है, अतः लक्ष्मी प्राप्ति के लिए यह अवसर गंवाना उचित नहीं । विश्वामित्र द्वारा सिद्ध की हुई विशेष गोपनीय "सहस्र लक्ष्मी आवाहन सिद्धि साधना प्रयोग" सम्पन्न कराया जायेगा, नवरात्रि का अव- सर होगा, कई सौ वर्षों बाद ऐसे महत्वपूर्ण अवसर पर सूर्यग्रहण का विधान होगा, और फिर विश्वा मित्र द्वारा गोपनीय साधना प्रयोग के द्वारा लक्ष्म प्राप्ति का विशेष प्रयोग सम्पन्न किया जायेगा, ऐसे प्रयोग की प्रतीक्षा तो देवता तक करते है । उच्च कोटि के योगी, सन्यासी और गृहस्थ लोगों ने अभी तैयारियां प्रारम्भ कर दी है, दक्षिण के प्रसिद्ध श्री शैल पर्वत पर तो पिछले दो महीनों से तैयारियां प्रारम्भ हो गई है, जिससे कि सूर्य ग्रहण और नवरात्रि संयोग अवसर पर भगवती महालक्ष्मी की साधना सम्पन्न जाय, और मनोवांछित सफलता एवं पूर्णता प्राप्त की जा वास्तव में ही यह दुर्लभ अवसर है, और ऐसे महत्व पूर्ण अवसर पर तो मैं पत्रिका के सभी पाठकों औ साधकों का इन पंक्तियों के माध्यम से आवाह कर रहा हूं कि वे हर हालत में ऐसे दुर्लभ अवसर और नवरात्रि पर्व पर उपस्थित हों, ऋषि तुल्य जीवन जीते हुए, अपने पूर्व जीवन के और इ जीवन के सभी पापों का क्षय करें तथा नवरा शिविर में भाग लेते हुए पूर्णता के साथ सि प्राप्त करें ।

नवरात्रि का प्रत्येक दिन : एक महत्वपू साधना पर्व

हां, इस बार नवरात्रि के प्रत्येक दिन को हमने ऐ साधना पर्व के रूप में तैयार किया है, जिससे कि साध इन दिनों का पूरा पूरा लाभ उठा सकें, जहां १८ मा को सूर्य ग्रहण और नवरात्रि के प्रारम्भ के अवसर भगवती महालक्ष्मी की साधना सम्पन्न कर पूर्ण लक्

सिद्धि प्राप्त करेंगे, वहीं १९ मार्च को दुर्लभ चन्द्र दर्शन पर्व होने के कारण कामना सिद्धि युक्त भगवती दुर्गा के सप्तशती विधान को सम्पन्न करेंगे जो कि रोग, अकाल मृत्यु, दुःख और दरिद्रता को मिटाने में समर्थ है, एक तरफ उच्च कोटि के पंडित सप्तशती पाठ करते हुए दिखाई देंगे, वहीं दूसरी ओर साधक पूर्ण ऋषि बन कर यज्ञ में आहुतियां देते हुए, भगवती दुर्गा को प्रत्यक्ष सिद्ध करने का सफल प्रयास करेंगे।

२० मार्च को विशेष पर्व होने के कारण दस महाविद्या प्रयोग सम्पन्न करायेंगे, आप स्वयं अनुमान लगा लें कि पूज्य गुरुदेव द्वारा दस महा विद्या सिद्धियों का पूजन अर्चन और साधना सम्पन्न होगी जिसमें- (१) काली (२) तारा (३) षोडशी त्रिपुर सुन्दरी (४) भुवनेश्वरी (५) छिन्नमस्ता (६) त्रिपुर भैरवी (७) धूमावती (८) बगलामुखी (९) मातंगी तथा (१०) कमला महाविद्या साधना को सम्पन्न किया जायेगा।

२१ मार्च को दुर्लभ योग होने के कारण "ब्रह्म सिद्धि प्रयोग" सम्पन्न [illegible] जायेगा, जिससे कि शरीर के समस्त चक्र जाग्रत हो सकें और मूलाधार से लगाकर सहस्रार तक शरीर स्थित सभी चक्रों के जागरण से साधक स्वयं तेजस्वी पुरुष बन सकेंगे।

२२ मार्च को "[illegible]सप्तमी" होने के कारण सूर्य साधना सम्पन्न कराई जायेगी, एक ऐसी साधना जिसके द्वारा पूर्ण प्रकृति, साधक के नियन्त्रण में हो जाती है और वह प्रकृति से मनोवांछित कार्य सम्पन्न कराने में समर्थ हो पाता है।

२३ मार्च को शुभ योग एवं बुधवार होने की वजह से दरिद्र विनाशक गणपति प्रयोग के साथ साथ हरिद्रा गणपति सिद्धि सम्पन्न कराई जायेगी, इस प्रकार भगवती लक्ष्मी और गणपति की संयुक्त साधना जीवन का सौभाग्य कही जा सकती है।

२४ मार्च को "नवसिद्धि प्रयोग" दिवस मनाया जायेगा जिसमें देव दुर्लभ साधनाएं अणिमा, महिमा आदि प्रयोग सम्पन्न होंगे जो कि पत्रिका पाठकों और समस्त साधकों को पूज्य गुरुदेव पहली बार सम्पन्न करायेंगे, ऐसा अद्वितीय अवसर और ऐसी दुर्लभ साधना तो पहली बार ही इस नवरात्रि शिविर में सम्पन्न हो रही है।

२५ मार्च को दुर्गा अष्टमी पर्व मनाने के साथ साथ पूज्य गुरुदेव प्रत्यक्ष सिद्धि प्राप्त करने हेतु साधकों के शरीर में उस दिव्य तेज का प्रवाह प्रदान करेंगे जिसके माध्यम से प्रत्येक साधना पूर्ण हो सके, सिद्धिप्रद हो सके, और साधक भगवती दुर्गा के प्रत्यक्ष दर्शन करने में समर्थ हो सके।

नवरात्रि के ये नौ दिन अपने आप में दुर्लभ है, प्रत्येक दिन अपने आप में एक पर्व है, साधना की ऊंचाइयां प्राप्त करने का प्रयोग है, एक-एक दिन पूर्ण रूप से सिद्धिदायक एवं देव दुर्लभ बनाने का प्रयास हमने किया है।

अभी से स्थान सुरक्षित करा लें

स्थान की कमी की वजह से यह सम्भव नहीं है कि भारत में सभी साधकों को इस शिविर में प्रवेश दिया जा सके और फिर इस शिविर में तो विदेशों में रहने वाले भारतीय भी भाग लेने के इच्छुक है तो उच्च कोटि के सन्यासी और योगी भी, अतः स्थान-न्यूनता स्वाभाविक है।

ऐसी स्थिति में आप अभी से पीछे दिया हुआ "साधना प्रवेश प्रपत्र" भर कर हमें भेज दें जिससे कि आपका स्थान रिजर्व हो सके।

कमाना और भाग-दौड़ के लिए तो पूरी जिन्दगी पड़ी है, ऐसा दुर्लभ अवसर तो सौभाग्य से ही प्राप्त होता है, और फिर शास्त्रों में कहा गया है कि हजार काम छोड़ करके भी चैत्र नवरात्रि में तो भाग लेना ही चाहिए क्योंकि यह दुर्लभ नवरात्रि कही जाती है।

आज ही प्रपत्र भरिये और हमें भेज दीजिये, हम आपको बतायेंगे कि यह नवरात्रि का पर्व आपके लिए कितना अधिक महत्वपूर्ण, दुर्लभ और सौभाग्यशाली हो सकता है।

-: नियम :-

१- शिविर में प्रवेश का सर्वाधिकार संचालक के हाथों सुरक्षित है।
२- पन्द्रह साल से कम उम्र के बालक, अत्यधिक वृद्ध, बीमार व अशक्त साधक भाग न लें।
३- शिविर में केवल साधक ही प्रवेश पा सकेंगे, उनके साथ यदि सम्बन्धी या रिश्तेदार होंगे तो वे शिविर के बाहिर कोई कमरा किराये पर रह सकेंगे।
४- शिविर के नियमों का कड़ाई के साथ पालन करना प्रत्येक साधक के लिए जरूरी होगा।
५- शिविर में भाग लेने के लिए नीचे प्रकाशित शिविर में भाग लेने का प्रपत्र भरकर उसे फाड़कर अलग कर लें व एक सौ रुपये का मनीआर्डर कर उसकी रसीद इस प्रपत्र के साथ लगा लें, या सौ रुपये का ड्राफ्ट नत्थी कर रजिस्टर्ड डाक से भेज दें।
६- मनिआर्डर या बैंक ड्राफ्ट "मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान" के नाम से बनाकर भेजें। बैंक ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो सकता है, चेक स्वीकार्य नहीं होगा।
७- सम्बन्धित यन्त्र व चित्र की पंक्तियों से मन्त्र सिद्ध या प्राण प्रतिष्ठा आदि के लिए आते ही ५६०) पांच सौ साठ रुपये शिविर संचालक के पास जमा कराने होंगे, ये पांच सौ साठ रुपये पूर्व में भेजें, सौ रुपये के अतिरिक्त होंगे।
८- शिविर तक रहने भोजन आदि की व्यवस्था शिविर व्यवस्थापक की तरफ से होगी।
९- अपने साथ बिस्तरा-पहिनने के कपड़े, दो धोती, टार्च आदि अपने साथ लेते आवें।
१०- शिविर में किसी प्रकार का व्यसन सर्वथा वर्जित है, यह आध्यात्मिक साधना है, अतः किसी प्रकार का राग द्वेष, छल-कपट, शत्रुता, विरोध आदि वर्जित है।
११- केवल पत्रिका के सदस्य ही इस शिविर में भाग ले सकेंगे, नियमों में संशोधन, परिवर्तन, आकस्मिक शिविर स्थगित या अन्य सभी अधिकार शिविर संचालक के हाथों सुरक्षित है।

यहां से काटिये

महा भगवती साधना शिविर

१८-३-८८ से २५-३-८८ तक

पत्रिका सदस्य संख्या.....................

मैंने आपके सभी नियम पढ़ लिए हैं मैं इन नियमों का पालन करूंगा, तथा इस प्रपत्र के साथ सौ रुपये का मनिआर्डर/बैंक ड्राफ्ट भेज रहा हूं, कृपया मुझे शिविर में भाग लेने व मेरा स्थान सुरक्षित रखने की अनुमति प्रदान करें।

मेरा नाम...

मेरा पूरा पता...

....

यहां से काटिये

वर्ष—८

अंक—१-२

जनवरी-फरवरी १९८८

आनो भद्राः क्रतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

सम्पादक
नन्दकिशोर

—

स० सम्पादक
योगेन्द्र निर्मोही

प्रार्थना

ॐ वरै वर्धतु है ववाम्यहे सः श्रिय
स देवान् पुत्रो च कीर्तिश्च वै सहः

यह वर्ष हमारे लिये मंगलमय हो, वरदायक हो, लक्ष्मी युक्त हो हमारे पुत्र योग्य हो, हमारा परिवार कीर्तिवान् हो, स्वस्थ हो, सफल हो।

सम्पर्क—

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग,
हाईकोर्ट कोलोनी,
जोधपुर- ३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : २२२०९

मुद्रक:- अरविन्द प्रकाशन डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

विषय-सूची

विश्व की दुर्लभ

कृत्या साधना-सिद्धि

पत्रिका में पिछले सात वर्षों में सैकड़ों प्रयोग प्रकाशित हुए हैं, और उनमें से अधिकांश प्रयोगों को पत्रिका पाठकों और साधकों ने अपनाया, उन्हें सिद्ध किया और समाज तथा देश के सामने हजारों लोगों की भीड़ में उन प्रयोगों को सिद्ध करके दिखा दिया कि आज भी ये प्रयोग यथार्थ हैं, प्रामाणिक हैं और पूर्ण सिद्धि देने में सहायक हैं, इन प्रयोगों के माध्यम से उन्होंने अपने जीवन की समस्याओं को सुलझाया है, समाज के लोगों का दुख दर्द दूर किया है, और इस वैज्ञानिक युग में भी विविध रोगों से ग्रस्त असाध्य रोगियों को रोग मुक्ति दिलाई है।

पर कृत्या प्रयोग जैसी उच्चकोटि की साधनाओं को पत्रिका में देने से मैं निरन्तर बचता रहा हूं, क्योंकि यह प्रयोग अत्यधिक तीक्ष्ण, शीघ्र प्रभाव देने वाला और अपने आप में अचूक होता है, जिस प्रकार तोप का गोला सही निशाने पर लग कर विध्वंस कर देता है उसी प्रकार यह प्रयोग भी अचूक निशाने से आश्चर्यजनक परिणाम उत्पन्न कर साधक के मनोरथ को पूर्ण कर देता है।

कृत्या

कृत्या उच्चकोटि का तांत्रिक-मांत्रिक प्रयोग है, जब भगवान शिव ने दक्ष का यज्ञ विध्वंस करने के लिए अपने गणों को भेजा और वीरभद्र जैसे बलशाली गण भी दक्ष के मंत्रों के आगे बेबस और असहाय हो गये तब भगवान शिव ने अपनी जटा में से एक कृत्या का निर्माण किया जो कि अत्यन्त विभत्स डरावनी, भयानक और पूरी सृष्टि का प्रलय करने में समर्थ थी, जमीन पर पैर रखते ही पृथ्वी अपने आप में नीचे धसकने लगी, दसों दिशाएं उसकी हुंकार से डोलने लगी और सम्पूर्ण विश्व में खलबली सी मच गई, वह शिव की आज्ञा पा कर दूसरे ही क्षण दक्ष की यज्ञ शाला में जा पहुंची और सारे यज्ञ को तहस-नहस कर दिया, अन्य लोगों की तो बात क्या, वहां बैठे सैकड़ों देवी देवताओं तक को उठा उठा कर फेंक दिया, और यज्ञ के आयोजन कर्ता दक्ष का सिर एक ही झटके से काट दिया, ऐसा लग रहा था कि मानो कृत्या के रूप में कोई प्रलय उपस्थित हो गया हो जिसके आगे न तो देवताओं की सिद्धि चल पा रही थी, और न दक्ष के मंत्रों का ही कोई प्रभाव व्याप्त हो रहा था, उस कृत्या के सारे शरीर से आग की लपटें निकल रही थी, जिससे पूरा संसार झुलस रहा था, उसके क्रोध के आगे आकाश और पृथ्वी, पवन और दसों दिशाएं थरथर कांप रही थी और ऐसा लग रहा था कि इसको शान्त करना अत्यधिक कठिन ही नहीं, अपितु असंभव है।

तब सभी देवता भगवान शिव के आगे गिड़गिड़ाने लगे, हाथ जोड़ कर क्षमा मांगने लगे, तब जाकर शिव का क्रोध कुछ शान्त हुआ और उन्होंने कृत्या को पुनः शान्त कर अपने पास बुला लिया।

बहुत ही कम, या यों कहा जाय कि गिने चुने साधकों या उच्चकोटि के सन्यासियों को ही कृत्या प्रयोग के बारे में जानकारी है, यद्यपि मेरे पास हजारों सन्यासियों ने तांत्रिकों और योगियों ने अनुनय विनय किया कि उन्हें

कृत्या प्रयोग समझा दिया जाय, परन्तु मैं हमेशा इसे टालता रहा, पर इस विशेषांक में मैं कोई ऐसा अद्भुत चमत्कारिक प्रयोग देना चाहता था, जो कि पाठकों के लिए चिरस्मरणीय रहे, और इसके माध्यम से वे अपने जीवन की सारी कामनाओं को पूर्ण कर सकें।

कृत्या प्रयोग के नियम

जैसा कि मैंने यह कहा यह उच्चकोटि का तांत्रिक प्रयोग है, परन्तु आप पिछले कई वर्षों से साधक हैं और आप जैसे कई साधकों ने तो गुरु दीक्षा और ब्रह्म दीक्षा तक प्राप्त की है, अतः आप में से प्रत्येक साधक इस साधना को सिद्ध कर सकता है।

१– यह साधना ११ दिन की है, रात्रिकालीन साधना है, और इसमें काली धोती पहिन कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर काले आसन पर बैठ कर सामने तेल का दीपक लगा कर 'कृत्या' माला से मन्त्र जप आवश्यक है, यह कृत्या माला अद्भुत तरीके से गुंथी हुई होती है, और इसका प्रत्येक मनका अपने आप में मंत्र सिद्ध होता है, एक माला पर व्यय मात्र एक सौ पचास रुपये आता है।

२– यह कृत्या माला केवल इस प्रयोग में ही नहीं अपितु किसी भी प्रकार की महाविद्या साधना में और उच्चकोटि के तांत्रिक प्रयोगों में प्रयोग की जा सकती है, वास्तव में ही यह माला साधनात्मक संसार का अद्भुत रहस्य है, जिसके गले में भी मात्र यह माला पड़ी होती है, उसके द्वारा स्वतः अद्भुत चमत्कार होते रहते हैं।

३– इसके सामने पंच महाग्रन्थों से अनुप्राणित शिव शक्ति साधना से सिद्ध और प्राणश्चेतना युक्त "कृत्या यन्त्र" किसी तांबे के पात्र में स्थापित कर देना चाहिए और उसकी पंचोपचार पूजा करनी चाहिए, पंचोपचार में जल, कुंकुम, अक्षत, पुष्प और नैवद्य आता है।

हिमाचल : कुछ नवीन तथ्य

१६-१७-१८ नवम्बर ८७। भुन्तर में पूरे हिमाचल के साधकों का अद्भुत सम्मेलन। इन तीन दिनों में पूज्य गुरुदेव ने कई नवीन तथ्य उजागर किये, उन्होंने बताया कि मैं इस घाटी में चार पांच साल तक विचरण कर चुका हूं, और यहां के चप्पे चप्पे से परिचित हूं, इसी क्रम में अपने प्रवचनों में उन्होंने वहां उगने वाली विभिन्न वनस्पतियों और उनसे रोग मुक्ति के बारे में विस्तार से बताया, उन्होंने जानकारी दी कि मणि-कर्ण में जो गर्म पानी का सोता है, वह पीछे पहाड़ों से आता है, ऊपर पहाड़ों में "गन्धकेश्वर महादेव" का प्राचीन मन्दिर है, उस गुफा में छत से पानी की एक एक बून्द गिरती है, और नीचे गन्धक से निर्मित शिवलिंग का आकार बनता रहता है, यह गन्धक से बना शिवलिंग लगभग सात फीट लम्बा और दोनों बाजुओं में आने लायक घेरे से युक्त अद्भुत प्रभावकारी शिवलिंग है, जिस प्रकार काश्मीर में बर्फ से निर्मित शिवलिंग अमरनाथ का महत्व है, उसी प्रकार संसार में यह एक मात्र स्थान है, जहां पानी की बून्द से गन्धकेश्वर महादेव का निर्माण होता है।

उन्होंने आगे बताया कि मनाली से रोहतांग जाने वाली सड़क पर एक ऐसी गुफा है, जिसमें दो हजार साधक बैठ कर साधना कर सकते है, इसकी विशेषता यह है कि गुफा सर्दियों में अत्यन्त गर्म और गर्मियों में अत्यन्त शीतल रहती है, इसका द्वार बहुत छोटा सा है पर अन्दर से यह इतनी विशाल गुफा होगी कि इसका पता हिमाचल वासियों को भी नहीं है।

इसके अलावा उन्होंने कई तांत्रिकों के नाम और पते बताये जो मनाली रोहतांग के आस-पास साधनाएं सम्पन्न कर रहे है, और वे साधक अपने आप में ही अद्वितीय हैं।

इसके बाद वीरासन में बैठकर या सामान्य तरीके से पालथी मार कर निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र जप आवश्यक है।

४- इस साधना में पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना, एक समय भोजन करना आवश्यक है।

५- साधना समाप्ति के बाद इस यन्त्र को बांह पर बांध लेना चाहिए या गले में पहिन लेना चाहिए यदि लम्बे समय तक ऐसा सम्भव न हो सके तो तीस दिनों तक तो इस यन्त्र को धारण करना ही चाहिए जिससे कि सारे शरीर में कृत्या रम सके और साधक जिस प्रकार से भी चाहे, कृत्या का प्रयोग कर सके।

कृत्या प्रयोग सिद्धि

यह साधना सिद्ध होने पर साधक अजेय, शत्रुओं पर पूर्ण विजय प्राप्त करने वाला और मन में असीम बल धारण करने वाला हो जाता है।

२- ऐसे साधक को वचनसिद्धि प्राप्त हो जाती है, और साधना सिद्धि के बाद वह मात्र एक बार कृत्या मंत्र का उच्चारण कर सामने वाले को जो भी कह देता है, वह तुरन्त हो जाता है, एक प्रकार से उसे "वचन सिद्धि" प्राप्त हो जाती है या यों कहा जाय कि उसमें श्राप या वरदान देने की अद्भुत क्षमता प्राप्त हो जाती है।

३- वह कृत्या मंत्र का जिस व्यक्ति पर या किसी व्यक्ति के फोटो पर जिस प्रकार का प्रयोग करे, वह प्रयोग तुरन्त सम्पन्न हो जाता है, उदाहरण के लिए कृत्या प्रयोग के द्वारा मारण मोहन, उच्चाटन, और वशीकरण तुरन्त सिद्ध होता है, यदि वह कभी भी कृत्या प्रयोग का मंत्र जप कर सामने वाले व्यक्ति को मन ही मन कहे, कि वह मुझ से माफी मांगे या मेरा कहा माने या मेरे सामने गिड़गिड़ावे तो वह तत्क्षण सम्पन्न हो जाता है, इसी

कुल्लू और तांत्रिक

१७ नवम्बर ८७। दोपहर का समय। पूज्य गुरुदेव एकान्त भाव से व्यास नदी के किनारे किनारे अपने विचारों में ही लीन बढे चले जा रहे थे, कि सामने से तीस चालीस तांत्रिकों का जमघट आ पहुंचा, यों भी हिमाचल में तांत्रिकों की बहुतायत है और इनमें से कई तांत्रिक तो मारण मोहन आदि साधनाओं में अद्भुत सिद्धि प्राप्त है, ये सभी तांत्रिक विचित्र वेष भूषा में थे इनमें से कुछ औघड़ थे तो कुछ कापालिक, कुछ मारण प्रयोग से सिद्ध थे, तो कुछ काली साधना के उपासक। सभी की आंखें लाल थी, सभी क्रोधित अवस्था में थे, इसलिए कि एक बाहर का व्यक्ति हिमाचल में आ कर कैसे साधना शिविर सम्पन्न कर सकता है।

आते ही उन्होंने ऊल जलूल गालियां देनी शुरू की और चीख कर कहा कि आज तुम्हारी मृत्यु निश्चित है, और इसी व्यास नदी के किनारे तुम्हारी दाह क्रिया होगी।

गुरुदेव चुप रहे, उन्होंने अपने जीवन में ऐसे सैकड़ों तांत्रिक देखे थे, उनके मन में कोई भय नहीं हुआ, वे बोलते, तब तक तो उन तांत्रिकों ने अपने अपने मारण प्रयोग, वीरभद्र प्रयोग और भस्म प्रयोग प्रारम्भ कर दिये।

उनमें से एक बड़े डील डोल का लगभग सात फुट का तांत्रिक सबसे आगे था, और वह कुछ ज्यादा ही जोश में था, उसे कृत्या सिद्ध थी, और वह गुरुदेव पर मूठ फेंक कर मारण प्रयोग करने की तैयारी कर रहा था

प्रकार इसके माध्यम से किसी पुरुष या स्त्री को तुरन्त वश में किया जा सकता है।

४– इस प्रयोग की सबसे बड़ी विशेषता है कि किसी भी प्रकार के रोगी व्यक्ति को देखकर यदि कृत्या मंत्र से सिद्ध जल छिड़के या पिला दें तो रोग में तुरन्त सफलता प्राप्त हो जाती है, इस प्रयोग से लकवे से ग्रस्त रोगी को चलने की सामर्थ्य दी जा सकती है, अन्धों को रोशनी प्रदान की जा सकती है, कमजोर और अशक्त रोगियों को ताकत प्रदान की जा सकती है, और छोटे मोटे रोग तो एक बार कहने से ही समाप्त हो जाते हैं।

५– इसके माध्यम से पति-पत्नी का झगड़ा दूर किया जा सकता है, किसी को भी मोहित कर के सदा अपने वश में किया जा सकता है, और मनोवांछित कार्य सम्पन्न किया जा सकता है।

६– यदि किसी शत्रु का सर्वनाश करना है तो साधक के लिए अत्यन्त आसान है, इस प्रयोग से एक एक करके शत्रु के पारिवारिक सदस्य मरते जाते हैं, अचानक घर में आग लग जाती है, या दूसरे शब्दों में कहा जाय तो उसका सर्वनाश हो जाता है।

७– इस साधना से साधक को ऐसी सिद्धि प्राप्त हो जाती है, कि वह किसी भी प्रकार के असंभव कार्य को संभव कर सकता है, अकेला कहीं पर भी विचरण कर सकता है, उसे किसी प्रकार का कोई भय नहीं रहता, उस पर मारण प्रयोग या तांत्रिक प्रयोग नहीं कर सकता और संसार का कोई व्यक्ति उसको नुकसान नहीं पहुंचा सकता।

ऊपर कृत्या यन्त्र के बारे में वर्णन किया है, इस यंत्र का कोई मूल्य नहीं लिया जायेगा, यदि आप पत्रिका सदस्य हैं, तो अपनी सदस्यता संख्या लिखें और फिर दो नये पत्रिका सदस्य बना कर उनके पूरे नाम व पते लिखें और १४०)रु० का मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट कर दें, आपका इस आशय का पत्र प्राप्त होते ही उन दोनों मित्रों को तो पूरे वर्ष भर पत्रिका भेजी जाती रहेगी और आपको यह अद्भुत आश्चर्यजनक "कृत्या यन्त्र" मुफ्त में

तभी अचानक एक घटना घटी, नदी के किनारे एक तरफ खड़ी बीस बाईस साल की यौवनमयी, कन्या ने आगे बढ़ कर उस लम्बे चौड़े डील डौल वाले तांत्रिकों के सरदार "श्मशान बाबा" की दाढ़ी बांये हाथ से पकड़ ली और दाहिने हाथ से दो तमाचे जड़ दिये, बोली–जिस पर तुम प्रयोग कर रहे हो वे मेरे गुरु हैं वे तो शायद मुझे पहिचानते है, या नहीं, पर मैं उनसे दीक्षा ले चुकी हूं और साधना करती हूं, उन पर प्रयोग करने से पूर्व हिम्मत हो तो पहले मुझ पर विजय पा ले तब आगे बढ़ना।

सरदार पर थप्पड़ पड़ते ही सब तांत्रिक सन्न से रह गये, वह श्मशान बाबा कुछ प्रयोग करता उससे पहले ही उस भैरवी ने कृत्या प्रयोग कर उसे मरणासन्न अवस्था में पटक दिया, सभी तांत्रिकों के अनुनय विनय पर ही उसका क्रोध शान्त हुआ, और उस पर से कृत्या प्रयोग हटाया।

बाद में पता चला कि वह तांत्रिक 'होनू' थी (जिसके बारे में एक स्वतन्त्र लेख इसी अंक में जा रहा है) और दो दिन से वह गुरुदेव से बात चीत करने को उतावली थी, पर उसकी हिम्मत नहीं पड़ रही थी, जब गुरुदेव को व्यास नदी पर विचरण करते हुए देखा तो उसने अपना परिचय स्वतः दे दिया, नदी पर उपस्थित सैकड़ों स्त्री पुरुष, साधक साधिकाएं घंटे भर तक घटित यह दृश्य देख कर सन्न थे, बाद में सभी तांत्रिकों ने गुरुदेव के चरण छुए और नदी के किनारे ही उनसे दीक्षा प्राप्त की।

नव वर्ष की भेंट स्वरूप प्रदान कर दिया जायेगा, पर यह यन्त्र १५ फरवरी १९८८ तक ही भेजने की व्यवस्था होगी, इसके बाद धनराशि भेजने पर यह यन्त्र प्रदान करना सम्भव नहीं हो सकेगा।

धनराशि भेजते समय आप अपना नाम व पूरा पता भी लिखें तथा पत्रिका सदस्यता संख्या लिखें तथा उसमें यह स्पष्ट उल्लेख हो कि मुझे "कृत्या यन्त्र" भिजवाया जाय पत्र के साथ जो आपने दो पत्रिका सदस्य बनाये हैं, उसकी रसीद लगाना आवश्यक है।

कृत्या सिद्धि

किसी भी मंगलवार की रात्रि को आसन पर बैठ जाय और यन्त्र को पूजा कर सबसे पहले दाहिने हाथ में जल ले कर कहे कि मैं यह ११ दिन की साधना कृत्या सिद्धि के लिए कर रहा हूं।

इसके बाद बांये हाथ में जल ले कर निम्न मन्त्र से अपने शरीर को वज्र की तरह मजबूत बना ले जिससे आपके शरीर को कोई नुकसान न पहुंचे।

देह रक्षा मन्त्र

ॐ ब्रह्म सूत्र समस्त मम देह आबद्ध-आबद्ध वज्र देह फट्।

इस प्रकार दस बार बोल कर अपने शरीर पर जल छिड़के।

दस दिशा बन्धन

फिर बांये हाथ में चावल ले कर दसों दिशाओं की ओर फेंके जिससे कि दिशा बन्धन हो सके, और आप पूर्णता के साथ साधना सम्पन्न कर सकें।

मन्त्र

ॐ शिवकृत्या प्रयोगार्थं दस दिशा बन्धनार्थं क्रीं-क्रीं फट्।

इसके बाद शिव का और यन्त्र का पूजन करें, और फिर मूल मन्त्र जप करें।

कृत्या मूल मन्त्र

ॐ क्लीं-क्लीं शत्रुणां मोहयै उच्चाटयै मारयै वचनसिद्धि मम आज्ञा पालय-पालय कृत्यां सिद्धि फट्।

इस प्रकार ११ दिन तक प्रयोग करे और उसके बाद उस यन्त्र को अपने गले में धारण कर ले या बांह पर बांध ले तो साधक अद्भुत शक्ति और सामर्थ्य अनुभव करने लगता है, उसके चेहरे पर भव्य तेजस्विता दृष्टिगोचर होने लगती है, और एक प्रकार से उसे दसों महाविद्याओं से भी श्रेष्ठ तन्त्र की अद्भुत शक्ति कृत्या सिद्ध हो जाती है।



सिद्धाश्रम

अब सिद्धाश्रम शब्द गोपनीय नहीं रहा, भारतवर्ष का प्रत्येक धर्मपरायण व्यक्ति सिद्ध, साधु सन्यासी, योगी, यति, इस शब्द से भली भांति परिचित है, यह विश्व का विख्यात आध्यात्मिक पुनीत, पुण्यस्थल है जहां पर प्रत्येक साधक पहुंचने का स्वप्न अपने मन में संजोये रहता है और जो साधक अपने जीवन काल में इस दिव्य आश्रम में पहुंच जाता है, उसका जीवन धन्य हो जाता है, और उसके पूर्वज स्वर्ग में बैठे बैठे उस पर आशीर्वाद की वर्षा करते रहते है।

सिद्धाश्रम वास्तव में ही अत्यन्त ही महत्वपूर्ण आश्रम है, जो कि भारतीय सभ्यता के उदय काल से गतिशील है, यह एक ऐसा स्थान है, जहां पर पहुंचना जीवन का सौभाग्य कहलाता है, यहां पर पहुंचने के लिए साधक वर्षों तक साधना और तपस्या करते रहते है, उनके मन की एक ही आकांक्षा रहती है कि किसी प्रकार से जीवन में एक बार सिद्धाश्रम पहुंच सके, वहां की माटी को अपने ललाट पर चन्दन की तरह लगा सके, वहां की निर्मल सिद्ध योगा झील में स्नान कर पूर्ण रूप से रोग-मुक्त हो सके, वहां पर विचरण करते हुए, छोटे छोटे हिरण-शिशुओं और खरगोश-शावकों के साथ खेल सके और सैकड़ों हजारों वर्ष प्राप्त सिद्ध योगियों के पावन चरणों में बैठ कर उनके अमृतोपम प्रवचन सुन सकें, उनके दिव्य संदेश को हृदय में उतार सके, और एक प्रकार से देखा जाय तो जीवन की पूर्णता, जीवन का आनन्द और जीवन का सौन्दर्य अपने आप में समेट सकें।

सिद्धाश्रम

इसका वर्णन विवरण वेदों के आदि ग्रन्थ ऋग्वेद में आया है, जहां ऋषि ने आकांक्षा प्रकट की है कि मैं उच्च कोटि की साधना सम्पन्न कर अपने जीवन काल में सिद्धाश्रम पहुंच सकूं और वहां प्रकृति के उन रहस्यों को जान सकूं जो अपने आप में अद्वितीय अगोचर और रहस्यमय है, इसके बाद पौराणिक काल में भी कई स्थानों पर सिद्धाश्रम का वर्णन आया है, यहां तक कि भगवान श्रीकृष्ण ने भी सिद्धाश्रम की भूरी भूरी प्रशंसा की है, भीष्म पितामह ने भी मरते समय भगवान श्रीकृष्ण से हाथ जोड़ कर गद्‌गद् कंठ से एक ही याचना की है कि मैं किसी भी प्रकार से सिद्धाश्रम पहुंच सकूं और उन प्रातःस्मरणीय ऋषियों के और अपने पूर्वजों के दर्शन कर सकूं जो कि अपने जीवन काल में ही, साधना सम्पन्न कर सशरीर सिद्धाश्रम पहुंचे है।

आधुनिक काल में भी ऐसे कई सिद्ध योगी हुए है, जिन्होंने साधनाएं सम्पन्न कर इस महान पुण्यदायक क्षेत्र में प्रवेश पाया है, और अपने जीवन को सफल बनाया है, स्वामी कृपाचार्य, योगी ज्ञानानन्द, स्वामी विशुद्धानन्द लाहिड़ी महाशय और ऐसे अन्य कई सन्यासी और गृहस्थ दोनों ने ही अपने अपने ढंग से साधनाएं सम्पन्न की है और अपने जीवन काल में ही सिद्धाश्रम पहुंच कर अपने जीवन को सफल बनाया है।

मानसरोवर और कैलाश पर्वत से उत्तर की ओर एक महत्वपूर्ण स्थान पर यह मीलों लम्बा और चौड़ा भव्य अद्वितीय प्रकृति निर्मित आश्रम है, कहते हैं, कि श्री ब्रह्मा जी के आदेश से स्वयं विश्वकर्मा ने अपने हाथों से इस आश्रम की रचना की है, भगवान विष्णु ने इसकी भूमि को प्रकृति को और वायुमण्डल को सजीव सप्राण सचेतना युक्त बनाया है और भगवान शंकर की कृपा से यह अजर और अमर है, इसका तात्पर्य यह है कि इस आश्रम में रहने वाले किसी भी योगी या सन्यासी को जरा अर्थात वृद्धावस्था व्याप्त नहीं होती, वह चिर नवीन चिर सौन्दर्ययुक्त और यौवन मय बना रहता है, साथ ही साथ अमरता का वरदान होने से इस आश्रम में मृत्यु की काली छाया व्याप्त नहीं होती, यहां किसी की मृत्यु हो ही नहीं सकती, इसीलिए इस आश्रम को देवताओं के लिए दुर्लभ और अद्वितीय बताया गया है।

आश्रम का मुख्य द्वार अपने आप में अलौकिक है, यह सम्पूर्ण क्षेत्र आकाश में उड़ कर या वायुयानों से अथवा सूक्ष्म कैमरों के माध्यम से न तो देखा जा सकता है, न इसकी फोटो अंकित की जा सकती है क्योंकि यह अपने आप में आध्यात्मिक ज्ञान पुंज है, और उच्च कोटि की साधनाओं से सप्राण है, ऐसी साधनाओं के आगे विज्ञान बौना सा बन कर रह गया है, उसमें यह क्षमता नहीं है कि वह अपने प्रयत्नों से इस आश्रम को देख सके, या अंकित कर सके।

इस आश्रम की अनेक विशेषताएं हैं जिनको शब्दों में बांधा ही नहीं जा सकता, वशिष्ठ ने कहा यदि मैं अपने पूर्ण ज्ञान से इस सिद्धाश्रम के सौन्दर्य का वर्णन लेखनी के माध्यम से करूं तो यह संभव नहीं है, शब्दों के माध्यम से उच्चरित करूं तो ऐसा होना असंभव है, क्योंकि यहां पर पग पग पर प्रकृति अपने पूर्ण रूप में विद्यमान है और इस सिद्धाश्रम में एक अत्यन्त आनन्दयुक्त प्रकाश बिखरा हुआ रहता है, जो कि अपने आप में प्रफुल्ल एवं आनन्द-युक्त है।

इस आश्रम का विस्तार सैकड़ों मील लम्बा और सैकड़ों मील चौड़ा है, यहां पर न तो सर्दी पड़ती है, और न विशेष गर्मी, एक मधुर आनन्दयुक्त मौसम बना रहता है, यहां पर न तेज धूप पड़ती है और न रात की अन्धेरी छाया, पौ फटने से पहले जो मधुर प्रकाश बिखरा हुआ होता है, ठीक ऐसा ही प्रकाश पूरे सिद्धाश्रम में बिखरा हुआ सुखद अनुभव होता है।

इस सिद्धाश्रम के मुख्य द्वार से लगभग आधा मील अन्दर जाने पर तो ऐसा लगता है कि जैसे साक्षात स्वर्ग में ही आ गये हों, चौड़ी और अत्यन्त विशाल गहरी और निरन्तर प्रवहशील सिद्ध योगा झील बहती है, जिसका पानी स्वच्छ निर्मल और पवित्र है, इस पानी की यह विशेषता है कि इसमें स्नान करते ही लौकिक जीवन के सभी रोग स्वतः समाप्त हो जाते हैं, और व्यक्ति पूर्णतः रोग मुक्त और चिर यौवनमय बन जाता है, उसकी वृद्धावस्था समाप्त हो जाती है, सिर के बाल काले और सुन्दर बन जाते हैं, सारे शरीर की झुर्रियां और बुढ़ापे के चिन्ह समाप्त हो जाते हैं, आंखों की रोशनी अपने आप में बढ़ जाती है और एक प्रकार से देखा जाय तो पूरे शरीर का काया कल्प सा हो जाता है, उसे सहसा विश्वास नहीं होता है, कि मेरा जर्जर रोग युक्त शरीर इतना स्वस्थ इतना यौवन मय और इतना वेगवान बन गया है, उसके हृदय में उमंग, उत्साह और आनन्द की हिलोरें उठने लगती हैं, और सही अर्थों में वह अजर अमर बन जाता है।

सिद्धयोगा झील के किनारे स्फटिक की पारदर्शी नौकाएं और चप्पू पड़े हुए हैं, जिस में बैठ कर योगी सन्यासी सिद्धयोगा झील में दूर दूर तक विचरण कर आनन्द उठाते हैं, प्रकृति के सौन्दर्य को निहारते हैं और अपने जीवन को पूर्णता देने का प्रयास करते हैं, कहीं पर सिद्धयोगा झील के किनारे कुछ स्वस्थ यौवनवान सन्यासी साधनारत हैं तो कहीं सिद्धयोगा झील में स्नान करती हुई यौवनमयी सन्यासिनियां एक दूसरे पर पानी उछालती हुई किलोल करती हुई, हंसी के वातावरण में निमग्न हैं, कहीं पर झील के किनारे ही कुछ सन्यासिनियां सुन्दर

तत्वों में सुसज्जित सुकुमार सुगन्धों से खेल रही होती है तो कहीं कुछ संन्यासी शास्त्र चर्चा में लीन प्रकृति के महत्वपूर्ण रहस्यों को पहिचानने का प्रयत्न करते हुए, दिखाई देते हैं।

झील के दूसरी तरफ ऊंचे ऊंचे देवदारु के घने पेड़ और उनकी शीतल छाया अपने आप में अलौकिक दृश्य उपस्थित करती है, ऐसा लगता है कि एक ही कतार में देवता लोग खड़े हुए इन संन्यासियों का अभिनन्दन कर रहे हों, संसार में जितने तरह के पुष्प हैं, उससे भी अधिक हजारों प्रकार के पुष्प हमेशा विकसित रहते हैं, सिद्धाश्रम पर मृत्यु की छाया व्याप्त नहीं होती, इसलिए ये अद्वितीय बहुरंगी सुगन्धित पुष्प नित्य खिले हुए रहते हैं, कल्पना करें कि एक तरफ सिद्धयोगा झील बह रही है, उसके किनारे, किलोलें करते हुए संन्यासी, संन्यासिनियां मस्ती से विचरण कर रही हैं, दूसरी ओर हरी भरी

ये अन्धे गलियारे हैं, जिनमें आप जा रहे हैं।

हम अपने आपको सभ्य और सुसंस्कृत कह रहे हैं, पश्चिम की चकाचौंध में हम अपना अस्तित्व भुला बैठे हैं, हमें अपने आप पर भी भरोसा नहीं रहा है, शराब पीना, सिगरेट के छल्ले बनाना एक फैशन बन गया है, पूजा पाठ धर्म आदि दकियानूसी माना जाने लगा है, और इन सब का परिणाम हुआ है मानसिक असंतोष, मानसिक तनाव, परिवार में मतभेद, पति पत्नी में लड़ाई झगड़े, स्वच्छन्द विचरण करने वाली पुत्रियाँ और अपनी इच्छा के अनुकूल कार्य करने वाले पुत्र।

और हम सब यह सब कुछ देख रहे हैं, एक प्रकार से आधुनिक सभ्यता का यह जहर पीने के लिए बाध्य हैं, पर हमें कोई रास्ता सूझ नहीं रहा है, हमको यह समझ नहीं आ रहा है कि घर में सब कुछ होते हुए भी हम इतने दुःखी और परेशान क्यों हैं, धन सम्पदा होने पर भी इतना मानसिक तनाव क्यों है, सब कुछ होते हुए भी इस प्रकार का ब्लड प्रेसर और मानसिक दबाव क्यों सहन कर रहे हैं, इसका कारण यह है कि हम अपने पांवों के नीचे की धरती खो बैठे हैं, हमारी जड़ें हिल गई हैं, पूर्वजों पर से हमारी आस्था समाप्त हो गई है, तन्त्र और मन्त्रों का मखौल उड़ाने में हमें तृप्ति अनुभव होने लगी है, और ये ही वे अन्धे गलियारे हैं जिनमें हम आगे बढ़ रहे हैं, अन्धेरे में भटक रहे हैं, दीवारों से सिर फोड़ रहे हैं, और हमें प्रकाश की कोई किरण दिखाई नहीं दे रही है।

और इन अन्धे गलियारों में बढ़ने का परिणाम है, चिन्ता परेशानियां दुःख, अभ्यासी और स्वास्थ्य क्षीणता, हम ऊपर से चाहे कैसे भी दिखाई दें पर अन्दर से खोखले हो रहे हैं, और अपने आप से हम भली भांति परिचित हैं, पर हम पर पश्चिम की सभ्यता का ऐसा भूत सवार है कि हम उसी को अपना सब कुछ मान बैठे हैं, और यही हमारे जीवन की न्यूनता है।

आवश्यकता है, अपनी धरती को पहिचानने की, अपने पूर्वजों को जानने की, अपने ज्ञान विज्ञान के चिन्तन करने की, और भारतीय संस्कृति और सभ्यता अपनाने की, तभी हम इन अन्धे गलियारों से बाहर आ सकेंगे, रोशनी को पहिचान सकेंगे, और मन में पूर्ण आस्था, विश्वास और जीवन्तता अनुभव कर सकेंगे।

प्रकृति का सौन्दर्य अपने आपमें आत्मों को बांध देता है, और ऐसा लगता है, कि इन ब्रह्म कमलों के बीच इन बहुरंगी पुष्पों के बीच बैठ जाऊं, सारी चिन्ताएं, सारी समस्याएं सारे तनाव अपने आपमें भूल जाऊं और एक प्रकार से देखा जाय तो इतना अधिक ध्यानस्थ हो जाऊं कि मैं सब कुछ भूल जाऊं, मुझे अपनी देह का भी भान नहीं रहे, और मेरे पास चुपचाप खरगोश के छोटे छोटे बच्चे टुकुर टुकुर मुझे निहारते रहें, हिरण के छोटे छोटे शावक अपने सींगों से मेरी पीठ खुजाते रहें और मैं पूर्ण ब्रह्मानन्द में लीन हो जाऊं, ऐसा स्वप्न प्रत्येक भारतीय प्रत्येक साधक का होता ही है, और यही जीवन का आनन्द है।

थोड़ा सा ही आगे बढ़ने पर सुन्दर पत्तों और हरी भरी घास से आच्छादित अत्यन्त ही मनोहर आश्रम बने हुए हैं, ठीक वैसे ही, जैसे कि हमने पुराणों में पढ़े हैं। इस आश्रम में उच्च कोटि के सन्यासी बैठे हुए, अपने शिष्यों को प्रकृति इन रहस्यों को समझा रहे होते हैं, साधना की उन ऊंचाइयों को बता रहे होते हैं, जिनकी यहां पर कल्पना ही नहीं की जा सकती, हजारों वर्ष की आयु प्राप्त वे योगी सन्यासी अपने आपमें ज्ञान साधनाओं के साकार पुञ्ज हैं, इनके जीवन का सौभाग्य कहलाता है इनके चरणों में बैठने से पूर्ण मानसिक शान्ति प्राप्त होती है और इनके द्वारा जो ज्ञान प्राप्त होता है, उसका वर्णन लेखनी कर ही नहीं सकती।

ऐसे महत्वपूर्ण प्रकृति निर्मित सीधे सादे, सरल सात्विक झोंपड़ियां, पर्ण-कुटियाएं और आश्रम दूर दूर तक दिखाई देती हैं और अपने आप में सात्विकता का उदाहरण हैं, यहां किसी प्रकार की तड़क-भड़क नहीं है, शान शौकत नहीं है, छल और झूठा दिखावा नहीं है, जो कुछ है अपने आप में स्पष्ट है, सही है, प्रामाणिक है।

कहीं पर यज्ञ धूम से वातावरण अत्यन्त ही सुगन्धित हो रहा है, वैदिक मन्त्रों के माध्यम से यज्ञ सम्पन्न करते

स्वामी विशुद्धानन्द : जिन्होंने नाभि में कमल दल खिलाया

क्या स्त्रियां ही संतान उत्पन्न करने में सक्षम हैं, क्या पुरुष चाहने पर भी अपनी कोख से संतान उत्पन्न नहीं कर सकता, विज्ञान इन प्रश्नों को सोच रहा है, हमारे पुराणों में इस प्रकार की कई बातें सुनने को मिलती हैं कि भगवान विष्णु ने अपनी नाभि में मूलाधार को जागृत कर कमल दल निकाला जिस पर ब्रह्मा बैठे हुए थे, इस प्रकार ब्रह्मा किसी के गर्भ से उत्पन्न न हो कर पुरुष-नाभि से उत्पन्न व्यक्तित्व है, इसी प्रकार वशिष्ठ, विश्वामित्र आदि ऋषि भी किसी गर्भ से उत्पन्न न हो कर ब्रह्मा की नाभि से उत्पन्न हुए हैं, इसका तात्पर्य यह हुआ कि यदि कुछ विशेष साधनाएं सम्पन्न की जाय, तो नाभि से कमल दल विकसित कर उसे आकार दिया जा सकता है और मनोवांछित संतान उत्पन्न की जा सकती है।

स्वामी विशुद्धानन्द भारत के अद्वितीय तन्त्रज्ञ और सिद्ध योगी थे उन्होंने अपने तान्त्रिक चमत्कारों से सैकड़ों लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया था, अंग्रेज अधिकारी भी उनके तांत्रिक चमत्कारों से अभिभूत थे।

एक बार वे मसनद पर लेटे हुए थे पास में ही गोपीनाथ कविराज आदि उनके शिष्य बैठे हुए थे, चर्चा के दौरान इसी प्रकार का प्रसंग उपस्थित हो गया और किसी एक शिष्य ने पुराणों में छपी हुई इन घटनाओं पर संदेह प्रकट किया।

तटों में सुसज्जित सुकुमार मृगछौनों से खेल रही होती है तो कहीं कुछ सन्यासी शास्त्र चर्चा में लीन प्रकृति के महत्वपूर्ण रहस्यों को पहिचानने का प्रयत्न करते हुए, दिखाई देते है ।

झील के दूसरी तरफ ऊंचे ऊंचे देवदारू के घने पेड़ और उनकी शीतल छाया अपने आप में अलौकिक दृश्य उपस्थित करती है, ऐसा लगता है कि एक ही कतार में देवता लोग खड़े हुए इन सन्यासियों का अभिनन्दन कर रहे हों, संसार में जितने तरह के पुष्प है, उससे भी अधिक हजारों प्रकार के पुष्प हमेशा विकसित रहते है, सिद्धाश्रम पर मृत्यु की छाया व्याप्त नहीं होती, इसलिए ये अद्वितीय बहुरंगी सुगन्धित पुष्प नित्य खिले हुए रहते है, कल्पना करें कि एक तरफ सिद्धयोगा झील बह रही है, उसके किनारे, किलोलें करते हुए सन्यासी, सन्यासिनियां मस्ती से विचरण कर रही है, दूसरी ओर हरी भरी

ये अन्धे गलियारे है, जिनमें आप जा रहे है ।

हम अपने आपको सभ्य और सुसंस्कृत कह रहे है, पश्चिम की चकाचौंध में हम अपना अस्तित्व भुला बैठे है, हमें अपने आप पर भी भरोसा नहीं रहा है, शराब पीना, सिगरेट के छल्ले बनाना एक फैशन बन गया है, पूजा पाठ धर्म आदि दकियानूसी माना जाने लगा है, और इन सब का परिणाम हुआ है मानसिक असंतोष, मानसिक तनाव, परिवार में मतभेद, पति पत्नी में लड़ाई झगड़े, स्वच्छन्द विचरण करने वाली पुत्रियां और अपनी इच्छा के अनुकूल कार्य करने वाले पुत्र ।

और हम सब यह सब कुछ देख रहे है, एक प्रकार से आधुनिक सभ्यता का यह जहर पीने के लिए बाध्य है, पर हमें कोई रास्ता सूझ नहीं रहा है, हमको यह समझ नहीं आ रहा है कि घर में सब कुछ होते हुए भी हम इतने दुःखी और परेशान क्यों है, धन सम्पदा होने पर भी इतना मानसिक तनाव क्यों है, सब कुछ होते हुए भी इस प्रकार का ब्लड प्रेसर और मानसिक दबाव क्यों सहन कर रहे है, इसका कारण यह है कि हम अपने पांवों के नीचे की धरती खो बैठे है, हमारी जड़ें हिल गई है, पूर्वजों पर से हमारी आस्था समाप्त हो गई है, तन्त्र और मन्त्रों का मखौल उड़ाने में हमें तृप्ति अनुभव होने लगी है, और ये ही वे अन्धे गलियारे है जिनमें हम आगे बढ़ रहे है, अन्धेरे में भटक रहे है, दीवारों से सिर फोड़ रहे है, और हमें प्रकाश की कोई किरण दिखाई नहीं दे रही है ।

और इन अन्धे गलियारों में बढ़ने का परिणाम है, चिन्ता परेशानियां दुःख, अभ्यासी और स्वास्थ्य क्षीणता, हम ऊपर से चाहे कैसे भी दिखाई दें पर अन्दर से खोखले हो रहे है, और अपने आप से हम भली भांति परिचित है, पर हम पर पश्चिम की सभ्यता का ऐसा भूत सवार है कि हम उसी का अपना सब कुछ मान बैठे है, और यही हमारे जीवन की न्यूनता है ।

आवश्यकता है, अपनी धरती को पहिचानने की, अपने पूर्वजों को जानने की, अपने ज्ञान विज्ञान के चिन्तन करने की, और भारतीय संस्कृति और सभ्यता अपनाने की, तभी हम इन अन्धे गलियारों से बाहर आ सकेंगे, रोशनी को पहिचान सकेंगे, और मन में पूर्ण आस्था, विश्वास और जीवन्तता अनुभव कर सकेंगे ।

प्रकृति का सौन्दर्य अपने आपमें आंखों को बांध देती है, और ऐसा लगता है, कि इन ब्रह्म कमलों के बीच इन बहुरंगी पुष्पों के बीच बैठ जाऊं, सारी चिन्ताएं, सारी समस्याएं सारे तनाव अपने आपमें भूल जाऊं और एक प्रकार से देखा जाय तो इतना अधिक ध्यानस्थ हो जाऊं कि मैं सब कुछ भूल जाऊं, मुझे अपनी देह का भी भान नहीं रहे, और मेरे पास चुपचाप खरगोश के छोटे छोटे बच्चे टुकुर टुकुर मुझे निहारते रहें, हिरन के छोटे छोटे शावक अपनी सींगों से मेरी पीठ खुजाते रहें और मैं पूर्ण ब्रह्मानन्द में लीन हो जाऊं, ऐसा स्वप्न प्रत्येक भारतीय प्रत्येक साधक का होता ही है, और यही जीवन का आनन्द है।

थोड़ा सा ही आगे बढ़ने पर सुन्दर पत्तों और हरी भरी घास से आच्छादित अत्यन्त ही मनोहर आश्रम बने हुए हैं, ठीक वैसे ही, जैसे कि हमने पुराणों में पढ़े हैं। इस आश्रम में उच्च कोटि के संन्यासी बैठे हुए, अपने शिष्यों को प्रकृति इन रहस्यों को समझा रहे होते हैं, साधना की उन ऊंचाइयों को बता रहे होते हैं, जिनकी यहां पर कल्पना ही नहीं की जा सकती, हजारों वर्ष की आयु प्राप्त ये योगी सन्यासी अपने आपमें ज्ञान साधनाओं के साकार पुंज हैं, इनके जीवन का सौभाग्य कहलाता है इनके चरणों में बैठने से पूर्ण मानसिक शान्ति प्राप्त होती है और इनके द्वारा जो ज्ञान प्राप्त होता है, उसका वर्णन लेखनी कर ही नहीं सकती।

ऐसे महत्वपूर्ण प्रकृति निर्मित सीधे सादे, सरल सात्विक हजारों पर्ण-कुटियाएं और आश्रम दूर दूर तक दिखाई देती है और अपने आप में सात्विकता का उदाहरण हैं, यहां किसी प्रकार की तड़क-भड़क नहीं है, मान सम्मान नहीं है, छल और झूठा दिखावा नहीं है, जो कुछ है अपने आप में स्पष्ट है, सही है, प्रामाणिक है।

यहीं पर यज्ञ धूम से वातावरण अत्यन्त ही सुगन्धित हो रहा है, वैदिक मन्त्रों के माध्यम से यज्ञ सम्पन्न करते

स्वामी विशुद्धानन्द : जिन्होंने नाभि में कमल दल खिलाया

क्या स्त्रियां ही संतान उत्पन्न करने में सक्षम है, क्या पुरुष चाहने पर भी अपनी कोख से संतान उत्पन्न नहीं कर सकता, विज्ञान इन प्रश्नों को सोच रहा है, हमारे पुराणों में इस प्रकार की कई बातें सुनने को मिलती है कि भगवान विष्णु ने अपनी नाभि में मूलाधार को जागृत कर कमल दल निकाला जिस पर ब्रह्मा बैठे हुए थे, इस प्रकार ब्रह्मा किसी के गर्भ से उत्पन्न न हो कर पुरुष-नाभि से उत्पन्न व्यक्तित्व है, इसी प्रकार वशिष्ठ, विश्वामित्र आदि ऋषि भी किसी गर्भ से उत्पन्न न हो कर ब्रह्मा की नाभि से उत्पन्न हुए है, इसका तात्पर्य यह हुआ कि यदि कुछ विशेष साधनाएं सम्पन्न की जाय, तो नाभि से कमल दल विकसित कर उसे आकार दिया जा सकता है और मनोवांछित संतान उत्पन्न की जा सकती है।

स्वामी विशुद्धानन्द भारत के अद्वितीय तन्त्रज्ञ और सिद्ध योगी थे उन्होंने अपने तान्त्रिक चमत्कारों से सैकड़ों लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया था, अंग्रेज अधिकारी भी उनके तान्त्रिक चमत्कारों से अभिभूत थे।

एक बार वे मसनद पर लेटे हुए थे पास में ही गोपीनाथ कविराज आदि उनके शिष्य बैठे हुए थे, चर्चा के दौरान इसी प्रकार का प्रसंग उपस्थित हो गया और किसी एक शिष्य ने पुराणों में छपी हुई इन घटनाओं पर संदेह प्रकट किया।

हुए, सन्यासी सन्यासिनियों का दृश्य देखते ही बनता है, कहीं पर किसी वृक्ष के नीचे, अत्यन्त ही वृद्ध, महत्वपूर्ण योगी अपनी साधना में निमग्न है और उसके पास ही सैकड़ों प्रकार के पक्षी कलरव करते हुए सुनाई पड़ते हैं, कहीं पर स्फटिक पत्थरों से निर्मित आलीशान भव्य भवन है, वहां पर कुछ गृहस्थ साधक अपनी साधनाओं में मग्न है जिनकी जहां पर रुचि है वे वहीं पर निवास कर सकते है विचरण कर सकते है, अवलोकन कर सकते है कहीं पर भी किसी प्रकार का दुराव छिपाव नहीं है, रोक टोक नहीं, छल प्रपंच नहीं है, पाखण्ड, द्वेष कामवासना, लोभ और अहंकार से परे ये सभी साधक-साधिकाएं एक अजीब सी मस्ती में अजीब सी खुमारी, अजीब से वातावरण में मग्न है, मस्ती से भरे है आनन्द से सरोबार है।

पर यह आश्रम पूर्णतः सुव्यवस्थित और नियमों से आबद्ध है, अनुशासन युक्त है, इसके संचालक हजारों वर्षों की आयु प्राप्त महायोगी स्वामी सच्चिदानन्द जी है जिनका नाम ही गंगा की तरह पवित्र और हिमालय की तरह विराट है, जिनके दर्शन करने के लिए देवता लोग भी तरसते है, जो ज्ञान और तपस्या के साकार पुंज है, जिनके रोम-रोम से ज्ञान और आनन्द की, त्याग और तपस्या की लहरियां बिखरती रहती है, उनके अनुशासन में यह हजारों वर्षों से आश्रम सुव्यवस्थित है, संचालित है।

आज भी हम अपनी खुली आंखों से वेदों और पुराणों में वर्णित उन उच्चकोटि के योगियों और ऋषियों को अपनी आंखों से देख सकते है, वशिष्ठ, विश्वामित्र कणाद, अत्रि, पुलस्त्य, गौतम, भीष्म, युधिष्ठर और श्रीकृष्ण जैसे योगियों को आज भी अपनी आंखों से देख सकते है, उनसे वार्तालाप कर सकते है, उनके पास बैठ कर उच्चकोटि की साधनाएं सम्पन्न कर सकते है, इससे बड़ा सौभाग्य और हमारे जीवन में क्या हो सकता है, इस आश्रम में प्रवेश के भी अपने नियम है,

स्वामी विशुद्धानन्द जी ने कहा-पुराणों में छपी हुई सारी घटनाएं प्रामाणिक और सत्य है, हममें इतनी शक्ति और सामर्थ्य नहीं है कि इस प्रकार की साधनाएं सम्पन्न करें और इनकी सत्यता परखें, यदि तुम कहो तो मैं नाभि से कमल दल विकसित कर दिखा सकता हूं।

शिष्यों के हां भरने पर उन्होंने लेटे-लेटे ही पेट को गड्ढा बना दिया, और हाथों से नाभि को पकड़ कर चौड़ा किया, शिष्यों ने आश्चर्य से देखा कि नाभि में से एक कमल नाल निकली और लगभग तीन चार फीट तक ऊंचाई पर गई और ऊंचाई पर ही पूर्ण लाल रंग का ब्रह्म कमल विकसित हुआ।

सभी लोग आश्चर्य से देख रहे थे, स्वामी जी ने कहा मैं यदि चाहूं तो अपने ही समान पुत्र निर्माण इस कमल दल पर कर सकता हूं, पर फिर कुछ सोच कर उन्होंने धीरे धीरे ब्रह्म कमल और कमल नाल को नाभि के अन्दर दबाया और हाथों से पेट को समतल कर दिया, और वापिस वैसी ही अवस्था में शिष्यों के सामने बैठ गये जो पहले की अवस्था थी।

विज्ञान इसी दिशा की ओर अग्रसर है, और परख नली शिशु के बाद विज्ञान इस ओर प्रयत्नशील है, कि मानव की कोख से ही पुत्र उत्पन्न किया जाय, और यदि वे पुराणों का आधार लें तो अवश्य ही इसमें सफलता पा सकते है।

कोई भी साधक कोई भी योगी या कोई भी सन्यासी अपनी इच्छा से इस आश्रम में प्रवेश नहीं पा सकता, यद्यपि उन सब का स्वप्न, उन सब का लक्ष्य एक ही है कि वे सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सकें। वहां प्रवेश पाने के बाद उनमें अपने आप में ऐसी क्षमता प्राप्त हो जाती है कि वह सशरीर जहां भी जाना चाहे जा सकता है, संसार में कहीं पर भी विचरण कर सकता है, सशरीर वापिस गृहस्थ में आ सकता है, और जब चाहे, स देह या सूक्ष्म शरीर से इस आश्रम में आ सकता है।

इस आश्रम में प्रवेश पाने के लिए दस महाविद्याओं में से दो महाविद्याओं को पूर्णतया सिद्ध करना जरूरी है, यह जरूरी है कि वह अपने गुरु से ब्रह्म ज्ञान की दीक्षा ले, साथ ही साथ ब्रह्म चेतना की साधना सम्पन्न कर पूर्ण कुण्डलिनी जाग्रत करे और समस्त चक्रों का भेदन कर, सहस्रार स्नान करें।

इसके बाद भी यह आवश्यक है कि ऐसा साधक इन साधनाओं को सम्पन्न करने के बाद तभी सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सकता है जब गुरु अपने साथ उसे सिद्धाश्रम ले जाय, और यह तभी संभव है जब उसका गुरु इतनी उच्च कोटि की साधनाओं से युक्त हो, उसका स्वयं का सहस्रार जाग्रत हो, और वह सिद्धाश्रम में प्रवेश पा चुका हो, सिद्धाश्रम में प्रवेश पाया हुआ, गुरु ही अपने साथ शिष्य को सिद्धाश्रम में प्रवेश दिला सकता है, और यही इसके नियम है, इसकी मर्यादाएं है और इसके हेतु है।

आज भी पूरे भारतवर्ष में मात्र इक्कीस ऐसे योगी और गृहस्थ विद्यमान है जो सिद्धाश्रम में प्रवेश पा चुके है, सशरीर वहां जा चुके है उनके लिए वहां जाना और आना अत्यन्त सामान्य और सरल है, उन्होंने साधनाओं की उच्चता प्राप्त की है, और ऐसे ही ये सिद्धाश्रम से साधक गुरु अपने शिष्यों का भली प्रकार से मार्गदर्शन कर सकते है, उन्हें साधना शिविरों में आमन्त्रित कर सकते है, साधना की बारीकियां समझा सकते है, महाविद्याओं को सिद्ध करने के लिए प्रेरित कर सकते है, ब्रह्म दीक्षा देकर चक्रों के जागरण की क्रिया समझा सकते है, और उनका सहस्रार जाग्रत कर सिद्धाश्रम में प्रवेश दिला सकते है।

सिद्धाश्रम के संस्थापक-संचालक महान योगीराज स्वामी सच्चिदानन्द जी ने पिछले हजारों वर्षों में मात्र तीन ही शिष्य बनाये है, क्योंकि उनका शिष्य बनने की कसौटी अपने आप में अत्यन्त कठोर और दुर्लभ है, हमारे गुरुदेव उनके प्रधान शिष्य है, इस बात का हमें गौरव है, हमारी पीढ़ी का सौभाग्य है कि इतने उच्चकोटि के योगी सामान्य वेश भूषा में गृहस्थ रूप में हमारे बीच विद्यमान है, जिनके पास पहुंचना सरल है, जिनसे महत्वपूर्ण ज्ञान और साधनाएं सीखना आसान है, और जिनकी कृपा से हम सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सकते है उनका संरक्षण उनका साहचर्य और उनका आशीर्वाद हमारे लिए प्रेरणा स्रोत बन सकता है, यह हमारा ही नहीं विश्व का सौभाग्य है कि ऐसे व्यक्तित्व हमारे बीच विद्यमान है।

इस लेख के माध्यम से मैं सम्पूर्ण साधकों और गुरु भाइयों का आह्वान करता हूं कि वे इस छल प्रपंचमयी दुनिया से परे हट कर मल मूत्र भरी जिन्दगी से अपने आपको विरत कर महत्वपूर्ण साधनाओं में भाग ले, पूर्णता प्राप्त करें और अपने जीवन काल में ही स देह सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सके, जिससे कि उसका आनन्द ले सकें, उसकी धरती उसका सौन्दर्य उसकी चेतना और उसकी सम्पूर्णता को अनुभव कर सकें, अपने पूर्वजों और ऋषियों के दर्शन कर उनके चरणों में बैठ ब्रह्म की व्याख्या समझ सके, प्रकृति के रहस्यों को सुलझा सकें, और जीवन को पूर्णता दे सकें।



सिद्धसूत

स्वर्ण प्रक्रिया का दुर्लभ ज्ञान

आज भले ही स्वर्ण अत्यन्त बहुमूल्य और दुर्लभ धातु बन गई हो पर इसके प्रति मोह और आकर्षण पूरे विश्व में प्रारम्भ से ही रहा है, हमारे पूर्वजों और विशेष कर रसायनिज्ञों ने प्रारम्भ से ही इस बात के प्रयत्न करने प्रारम्भ कर दिये थे, कि वे लोहे, तांबे या पारे जैसी साधारण धातुओं से स्वर्ण जैसी बहुमूल्य धातु बनाई जाय इन साधारण धातुओं को परिवर्तित कर स्वर्ण में बदलने के लिए उन्होंने गम्भीर प्रयास किये और उसमें सफल भी हुए, ऐसे रसायनिज्ञों में धन्वन्तरी अन्तूक, नागार्जुन आदि रसायनिज्ञ अत्यन्त प्रसिद्ध रहे है और उन्होंने इस प्रकार के कार्य में सफलता पा कर यह प्रमाणित कर दिया कि मामूली तो सस्ती धातुओं को स्वर्ण में परिवर्तित किया जा सकता है।

नागार्जुन का प्रसिद्ध ग्रन्थ "स्वर्ण तन्त्रम्" कीमियागारों अथवा रसायनिज्ञों के लिए आदर्श गीता के समान रही है, उसमें तांबे, लोहे या पारे से स्वर्ण बनाने की प्रक्रिया भली भांति बताई गई है, और ऐसी ४८ विधियों को प्रामाणिकता के साथ स्पष्ट किया है, जिनसे उसने सफलता प्राप्त की थी।

नागार्जुन का सारा जीवन इस प्रकार के अध्ययन चिन्तन और परीक्षण में ही व्यतीत हुआ, वह अत्यन्त धनाढ्य और सम्माननीय पिता का पुत्र था परन्तु उसने इस प्रक्रिया को सीखने के लिए, समझने के लिए प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन किया, सुदूर जंगलों और हिमालय में रहने वाले साधुओं से सम्पर्क किया और विभिन्न परीक्षण प्रयोग करता रहा, एक प्रकार से देखा जाय तो उसने अपनी सारी पूंजी इस प्रकार के कार्य में लगा दी, यहां तक कि अपना घर बेच दिया, पत्नी से मतभेद होने की वजह से अलग रहने लगा, और इन परीक्षणों पर निरन्तर खर्च होते रहने की वजह से वह दरिद्रावस्था में आ गया, फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी, उसका यह पक्का विश्वास था कि मैं अवश्य ही इस कार्य में सफलता प्राप्त करूंगा और अपने जीवन काल में ही एक न एक दिन सामान्य धातुओं को स्वर्ण में परिवर्तित करके दिखा दूंगा।

नागार्जुन के जीवन का अध्ययन करने पर पता चलता है कि जब वृद्धावस्था तक भी उसे मनोवांछित सफलता नहीं मिली तो एक दिन अत्यन्त भग्न और दुखी हृदय से अपने अनुभवों और लिखे हुए परीक्षणों के ग्रन्थ को लेकर नदी किनारे जा पहुंचे, अब उनके लिए आगे धन की कमी के फलस्वरूप और परीक्षण करना संभव नहीं था, इसलिए वे हताश और निराश हो कर उस पुस्तक का एक-एक पन्ना नदी में फेंकते रहे।

उनसे कुछ ही दूरी पर आगे एक वेश्या स्नान कर रही थी, उसने उन बहते हुए हस्त लिखित पन्नों को अपनी ओर आते देखा और एक आध पन्ने को पढ़ा, उसे वे परीक्षण अत्यन्त मूल्यवान और अनुभवगम्य प्रतीत

हुए, वह स्नान कर नदी के किनारे-किनारे आगे बढ़ी तो देखा कि एक तेजस्वी, पर वृद्ध जर्जर व्यक्ति अपनी हस्त लिखित पुस्तक के एक एक पन्ने को पानी में फैंक रहा है, गणिका ने उसका हाथ पकड़ कर ऐसा करने के लिए उसे रोका तो उसने निराशा भरे स्वर में कहा-मैंने इन परीक्षणों में अपने पिता की और स्वयं की सारी सम्पत्ति स्वाहा कर दी, अपना सारा यौवन दाव पर लगा दिया, पर अन्त में मुझे निराशा के अलावा और क्या मिला ?

गणिका ने कहा-मुझे आप में प्रतिभा और तेजस्विता नजर आ रही है आप एक बार फिर मेरे घर चल कर परीक्षण करें, इसके लिए मैं आपको जितना आप चाहे धन प्रदान करूंगी।

बे मन से नागार्जुन गणिका के साथ उसके घर की ओर चल पड़े और वहां आ कर उसने पुनः "सिद्धसूत प्रक्रिया" का प्रयोग किया, संयोगवश कढ़ाई में वह रसायन गर्म हो रहा था कि किसी कार्य से नागार्जुन उठे, ऊपर लोहे की कील दृष्टिगोचर न होने की वजह से उनके सिर में वह कील लग गई और रक्त की कुछ बूंदे

कल्पवृक्ष भारत में नहीं, राजस्थान में है

क्या वास्तव में ही भारतवर्ष में कल्पवृक्ष है, या यह केवल कल्पना ही है, कथाओं और पुराणों में पढ़ने को मिलता है कि कल्पवृक्ष अपने आप में देववृक्ष है जिसके नीचे बैठ कर जो भी इच्छा की जाय, वह पुरी होती है, तो क्या ऐसा कल्पवृक्ष भारतवर्ष में कहीं पर है।

वैज्ञानिकों ने इस संबंध में शोध किया है, और उन्होंने पाया है कि कल्पवृक्ष की जाति का ही एक नर और मादा पेड़ पूरे भारतवर्ष में केवल एक ही स्थान पर है जो राजस्थान में आया हुआ है।

जयपुर से जोधपुर आते समय बस के रास्ते से मार्ग में मांगलियावास एक गांव आता है, इस गांव से केवल पांच सौ गज की दूरी पर यह नर और मादा का अद्वितीय कल्पवृक्ष अपनी शान से खड़ा हुआ है, भारत सरकार के अधिकारियों ने भी इसको माना है और इससे संबंधित पत्थर पर लिखा हुआ है, वनस्पति विशेषज्ञों ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि वास्तव में ही यह अपने आप में एक आश्चर्यजनक पेड़ है, जिसका जोड़ पूरे भारतवर्ष में अन्यत्र कहीं पर भी नहीं है।

मैंने इस कल्पवृक्ष को कई बार देखा है, मैं यह तो नहीं कह सकता कि इसके नीचे बैठ कर जो भी इच्छा की जाय, वह इच्छा तुरन्त पूरी हो जाती है, परन्तु मैंने कल्पवृक्ष के नीचे बैठ कर हर बार कोई न कोई इच्छा व्यक्त की है, और साल छः महीने में वह इच्छा अवश्य पूरी हुई है, इससे मेरा विश्वास और भी अधिक बढ़ गया है।

वास्तव में ही यह एक अद्वितीय प्राचीन वृक्ष है, जिनके तने को देखने से ही पता चल जाता है कि यह असाधारण वृक्ष है, बारह साल में एक बार इस पर फल लगता है, जिसे कल्पवृक्ष फल कहते हैं और सौभाग्यशाली व्यक्ति को ही ऐसा फल देखने को या प्राप्त करने का सौभाग्य मिलता है, जिस घर में भी यह कल्पवृक्ष फल होता है, उसके घर में सभी दृष्टियों से निरन्तर उन्नति होती रहती है।

कड़ाई में गिर गई।

और जितने ही अद्भुत चमत्कार हुआ, जो कड़ाई में तांबे का टुकड़ा उस रसायन के साथ उबल रहा था वह शुद्ध स्वर्ण में परिवर्तित हो गया, नागार्जुन की प्रसन्नता का कोई ठिकाना न रहा और वे पूरे विश्व में सर्वश्रेष्ठ सम्माननीय रसायनिज्ञ के रूप में माने जाने लगे, और उनका अंतिम समय अत्यन्त ही सम्पन्न अवस्था में सम्माननीय रूप से व्यतीत हुआ।

सिद्धसूत

आगे चल कर यह विज्ञान अत्यधिक विकसित हुआ

मैंने अपने विगत जीवन से साक्षात्कार किया

जब तक अपने पूर्व जीवन को देख नहीं लेते तब तक वर्तमान जीवन को भली प्रकार से समझा भी नहीं जाता, कई बार हम भगवान की लीला को विचित्र मान बैठते है, शुद्ध सदाचारी ध्यान पूजा पाठ करने वाला व्यक्ति दरिद्र बना रहता है, और मांस मदिरा का सेवन करने वाला तथा पर स्त्री गामी लाखों में खेलता है, जब शुद्ध सात्विक जवान स्त्री के पति की मृत्यु हो जाती है, जब बाप के सामने बेटे की अर्थी निकलती है, तो मन वितृष्णा से भर जाता है, भगवान के यहां यह कैसा न्याय है, जब कि इसने अपने जीवन में चींटी को भी सताया नहीं है फिर इसे इतना दारूण दुःख क्यों ?

इसका उत्तर वर्तमान जीवन के कार्यकलापों से नहीं मिल सकता, इसके लिए व्यक्ति का विगत जीवन देखना आवश्यक होता है जो इस जीवन से पहले का जीवन था, उस जीवन में कार्यों के अच्छे और बुरे फलों का परिणाम भी इस जीवन में भोगना पड़ता है और जब व्यक्ति का विगत जीवन देख लिया जाता है तो भगवान की लीला और उसका न्याय पूरी तरह से समझ में आ जाता है।

इसके लिए तन्त्र क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण साधना बताई गई है, जिसे "पूर्व जन्म साधना" कही गई है, यह २१ दिन की साधना है, और इसमें नित्य एक सौ एक माला मन्त्र जप "पूर्व जन्म दर्शन यन्त्र" के सामने कमल गट्टे की माला से सम्पन्न किया जाता है, इसके अलावा अन्य सभी वे ही विधि विधान है, जो साधना के लिए आवश्यक होते है, यह साधना सिद्ध होते ही व्यक्ति को जहां अपना विगत जीवन साफ-साफ दिखाई दे जाता है वहीं उसे किसी भी सामने वाले व्यक्ति पुरुष या स्त्री का विगत जीवन भी देखने को मिल जाता है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं पश्य पश्य विगत जीवनाय अमुकं मे दर्शय दर्शय फट्।

वास्तव में ही मैंने इस साधना को सिद्ध किया है और मैं आश्चर्यचकित रह गया हूं जब मैंने अपना विगत जीवन और दूसरों का विगत जीवन देखा है, तो मुझे विश्वास होने लगा है कि भगवान के घर में न तो अन्धेर है और न अन्याय है, मनुष्य जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल उसे भोगने के लिए बाध्य होना पड़ता है।

और तांबे से स्वर्ण बनाना सिद्धसूत के माध्यम से अत्यन्त सामान्य प्रक्रिया बन गई। आज से दो सौ तीन सौ वर्ष पूर्व सिद्धसूत बनाना अधिकतर सन्यासियों कीमियागारों और रसायनिज्ञों को ज्ञात था, कहते हैं कि वाराणसी में भगवान विश्वनाथ महादेव के मन्दिर के दोनों प्रमुख द्वार जो कि कई मन वजन लोहे के थे, एक साधु ने सिद्धसूत के माध्यम से तत्कालीन काशी के अंग्रेज कलेक्टर ओवेर के सामने स्वर्ण में परिवर्तित करके दिखा दिये थे, एक क्षण में ही लोहे को ठोस सोने में परिवर्तित होते हुए देख कर वे आश्चर्यचकित रह गये, बाद में हमारी गफलत की वजह से वे द्वार यहां से विदेश चले गये पर इस घटना का प्रामाणिक विवरण आज भी विश्वनाथ मन्दिर के दीवार में जड़े हुए संगमरमर पत्थर पर अंकित शिला लेख से स्पष्ट होता है।

कुछ विशेष प्रक्रिया से सिद्धसूत बनाया जाता है, जो कि भूरे रंग के पाऊडर की तरह होता है, पर यह अत्यन्त मूल्यवान और दुर्लभ पदार्थ माना जाता है, लोहे को पानी में भिगो कर यदि उस पर चुटकी भर सिद्धसूत का पाउडर डाल दिया जाय तो एक विशेष प्रकार की रसायन प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है, और वह लोहा तुरन्त स्वर्ण में परिवर्तित हो जाता है, यही प्रक्रिया तांबे पर भी सम्पन्न की जा सकती है,

यह विद्या अभी तक भी लोप नहीं हुई है परन्तु बहुत ही कम उच्चकोटि के योगियों या सन्यासियों को ही इस विधि का ज्ञान है, लेखक ने स्वयं सिद्धसूत प्रक्रिया का दुर्लभ ज्ञान नेपाल की प्रसिद्ध बागमती नदी के उस पार रहने वाले प्रसिद्ध योगी प्रभूतानन्द जी महाराज से सीखी थी और अपने हाथों से कई बार सिद्धसूत बनाकर उसका परीक्षण तांबे पर और लोहे पर करके यह अनुभव किया था कि यह विद्या अपने आप में आश्चर्यजनक परिणाम देने वाली है, इसके माध्यम से कुछ ही मिनटों में रसायनिक प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है और लोहा तुरन्त ठोस शुद्ध सौ टन्च खरे सोने में परिवर्तित हो जाता है।

महात्मा गांधी के समय में भी पंजाब के प्रसिद्ध वैद्य हरी प्रसाद जी ने बिड़ला भवन में बिड़ला जी, मालवीय

खामोश ! यहां त्रिजटा अघोरी साधना कर रहा है

देहरादून से सहस्र धारा और सहस्र धारा से १५८ मील दूर भैरव पहाड़ी जिसकी चढ़ाई अत्यन्त कठिन और विकट मानी जाती है, सारा पहाड़ी क्षेत्र जंगली हिंसक पशुओं से भरा पड़ा है और पहाड़ी की सबसे ऊंची चोटी पर स्थित है महाकाल रौद्र भैरव का मन्दिर, जो अपने आप में सप्राण, सचेतन है और यहीं पर साधना कर रहे हैं संसार के तांत्रिक शिरोमणी त्रिजटा अघोरी।

त्रिजटा अघोरी का नाम लेते ही शरीर में कंपकंपी सी छूट जाती है, लम्बा चौड़ा डील डौल भारी भरकम शरीर इस पर भी फुर्ती इतनी कि एक ही सांस में ऊबड़ खाबड़ पहाड़ी पर दौड़ते हुए चढ़ जाना, शरीर में बल इतना कि दो मजबूत जवान सांडों को दोनों हाथों की मुट्ठियों में पकड़ कर परस्पर भिड़ा देना, कद्दावर जंगली बकरे को एक ही हाथ में पकड़ सैकड़ों फीट ऊपर उछाल देना और बोली ऐसी कि जैसे दो भयानक बादल आपस में टकरा कर गर्जना कर रहे हों।

पर तन्त्र के क्षेत्र में यह व्यक्तित्व अपने आप में अपराजेय है, कठिन से कठिन तांत्रिक साधनाएं सिद्ध कर रखी है, औघड़ साधनाओं से लगाकर श्मशान साधनाओं तक में अपने आप में अपराजेय और अप्रतिम है यह सिद्धाश्रम का एक मात्र ऐसा सिद्ध योगी है जो केवल तन्त्र के बल

को और गांधी जी के सामने [illegible] सिद्धसूत के माध्यम से तांबे को स्वर्ण में परिवर्तित करके दिखा दिया था, आज भी बिड़ला मन्दिर में जिस पंचपात्र आचमनी से भगवान का चरणामृत भक्तों को बांटा जाता है, वह पंचपात्र उसी स्वर्ण से निर्मित है, जो गांधी जी के सामने बनाया गया था, गांधी जी ने वैद्यराज की भूरी भूरी प्रशंसा करते हुए कहा था कि हमें अपनी प्राचीन विद्याओं पर गर्व होना चाहिए, जब सारा विश्व बसभ्य और सभ्यता के प्रारम्भिक अवस्था में था, तब हम सभ्यता के उस स्तर तक पहुंच गये थे, जहां कि तांबे या लोहे को स्वर्ण में परिवर्तित करने की क्रिया सीख ली थी, समझ ली थी, और प्रयोग की थी।

बाद में अहमदाबाद के प्रसिद्ध वैद्य हीरजी भाई ने १९५२ में प्रसिद्ध नागरिकों और मंत्रियों के सामने सिद्धसूत बना कर उसके द्वारा तांबे को स्वर्ण में परिवर्तित कर के दिखा दिया था, इसी प्रकार कुछ वर्षों पूर्व स्वामी विशुद्धानन्द जी ने वाराणसी में नवमुण्डी आश्रम में कई उपस्थित शिष्यों के सामने सिद्धसूत की पूर्ण प्रक्रिया का वर्णन किया था, और अपने हाथों से सिद्धसूत बनाकर उसके माध्यम से लोहे को, तथा तांबे को स्वर्ण में परिवर्तित कर के दिखा दिया था।

सन् १९५८ में जालन्धर के प्रसिद्ध वैद्य हितारामजी ने अत्यन्त महत्वपूर्ण ५० से अधिक उपस्थित सदस्यों के सामने सिद्धसूत पर विस्तृत प्रवचन दे कर उनके अनुरोध पर वहीं पर खड़े-खड़े आधे घण्टे में ही सिद्धसूत बना कर उसके माध्यम से लोहे को स्वर्ण में परिवर्तित करके दिखा दिया था।

सन् १९८६ में कलकत्ता में भी ने ज्यादा गण्य मान्य उपस्थित व्यक्तियों के सामने योगीराज हरीनन्द जी ने सभागार में सिद्धसूत के माध्यम से स्वर्ण प्रक्रिया का विस्तृत परिचय दिया था और तांबे की प्लेट को तुरन्त स्वर्ण में परिवर्तित कर यह सिद्ध कर दिया कि आज के युग में भी यह क्रिया पूर्णता के साथ जीवित है, और इसके माध्यम से सामान्य धातु को स्वर्ण जैसी बहुमूल्य धातु में परिवर्तित किया जा सकता है।

पर सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सका है, काया कल्प करना, वृद्धावस्था को मिटा कर पूर्ण यौवनमय बना देना, आकाश में विचरण करना और अपने प्राणों को शरीर से निकाल कर दूसरे मुर्दा शरीर में प्राण संचरित कर परकाया प्रवेश सिद्ध कर देना इस तांत्रिक के लिए बांये हाथ का खेल है, इतना होने पर भी नम्र इतना कि बालक सा सरल स्वभाव और अछूती मुस्कराहट है।

पूज्य गुरुदेव के शिष्य होने के बावजूद भी उन्होंने तन्त्र के क्षेत्र में कई कीर्तिमान कायम किये है, और एक बार जब साधना में बैठ जाता है तो बिना हिले डुले बिना कुछ खाये पीये, बिना आसन से उठे बीस पच्चीस दिन तक एक ही आसन पर जमे रह कर साधना सिद्ध करके ही अपने आसन से उठते है, भूत प्रेत तो जैसे इसके सेवक-सेविकाएं है, यह उनको झिड़कता है, डांटता है, फटकारता है और कभी कभी क्रोधावेश में उन पर लात प्रहार भी कर लेता है।

कोई भी गुरु भाई त्रिजटा के पास जा सकता है, उसके पास बैठ सकता है, यदि मन में बल और साहस है तो उनसे सीख सकता है, कई साधकों ने वहां से वापिस आ कर बताया है कि यह अद्भुत व्यक्तित्व है, बादाम की तरह जो ऊपर से कठोर है, पर अन्दर से अत्यधिक नरम, मधुर और आनन्दयुक्त है।

पिछले दिनों मेरी मसूरी यात्रा से लौटते समय, देहरादून के पास सहस्त्र धारा स्थित योगी डालानन्द जी से भेंट हुई थी जिन्हें सिद्धसूत प्रक्रिया का महत्वपूर्ण ज्ञान है और उन्होंने मेरे अनुरोध पर मेरे कुछ शिष्यों के सामने ही उन्होंने अपनी एक झोली से एक शीशी में भरे हुए, सिद्धसूत को बाहर निकाल कर दिखाया और वहीं पर एक तांबे का टुकड़ा मंगवा कर उसे पानी में भिगो कर ज्यों ही उस पर बहुत मामूली सा सिद्धसूत पाउडर डाला तो आश्चर्यजनक प्रक्रिया प्रारम्भ हुई, पहले काली लपट और फिर नीली लपट सी उठी और दूसरे ही क्षण वह तांबे का टुकड़ा ठोस सोने में परिवर्तित हो गया था, बाद में उन स्वामी जी के किसी शिष्य को भेंट स्वरूप प्रदान कर दिया था।

यद्यपि सिद्धसूत बनाना कठिन कार्य है, पर इसे असंभव नहीं कहा जा सकता, पारे को शिव वीर्य कहा जाता है, जो कि अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण पदार्थ है और वह पारा या पारद बाजार में आसानी से उपलब्ध हो जाता है, इसके ग्यारह संस्कार क्रमशः करने पर पारद पूर्ण रूप से बुभुक्षित बन जाता है यद्यपि आयुर्वेद के कालेजों में पारद के बारे में समझाया और सिखाया जाता है, और यह भी बताया जाता है कि इसके क्रमशः १२ संस्कार सम्पन्न किये जाते है, परन्तु यह सारा ज्ञान केवल थ्योरिटिकल होता है, सिखाने वालों को स्वयं इसका प्रेक्टीकल ज्ञान नहीं होता, यदि उन्हें कहा जाय कि वे पारद या पारे के क्रमशः १२ संस्कार कर के दिखा दे तो कोई विरला ही व्यक्ति निकलेगा जो इन संस्कारों को प्रामाणिकता के साथ सम्पन्न कर पाता हो, खैर,

जब पारद के ग्यारह संस्कार सम्पन्न हो जाते है, तो उस पारद को उससे चौगुने पानी में धीमी आंच से पकाया जाता है, पकाते-पकाते जब लगभग पानी उड़ जाता है, तब उसमें कुछ बकरे के रक्त की बूंदे डालते ही वह संस्कारित पारा भूरे पाउडर के रूप में परिवर्तित हो जाता है, जिसे कांच की शीशी में भर दिया जाता है, इसी को "सिद्धसूत" कहते है।

एक कीलो लोहे या तांबे के टुकड़े पर मात्र आधा तोला सिद्धसूत डालते ही वह एक कीलो का टुकड़ा तुरन्त ठोस सोने में परिवर्तित हो जाता है, पाठक स्वयं अनुमान लगा सकते है कि मात्र ५० रुपयों से निर्मित सिद्धसूत तीस रुपयो से खरीदे गये तांबे के टुकड़े को अस्सी, रुपयों की लागत लगा कर लाखों रुपये की मूल्यवान धातु स्वर्ण में परिवर्तित किया जा सकता है।

आज भी इसके जानने वाले कई योगियों और सन्यासियों से मेरा परिचय रहा है, मसूरी के लाल टीला स्थान पर रहने वाले योगी हरीतानन्द जी, जम्मू के पास देवज मठ के स्वामी विद्यानन्द जी, नैनीताल से पूर्व काठगोदाम से १८ कीलो मीटर दूर स्थित ज्ञान आश्रम के संस्थापक स्वामी चैतन्यानन्द जी मनाली के आगे व्यास गुफा के पास रहने वाली तांत्रिका हीद्र, कामाख्या मन्दिर के पास रहने वाले योगी अवधूतानन्द जी, नेपाल के दक्षिण काली के मन्दिर के पास साधना करने वाले योगी महेशानन्द जी, और आबू में गुरु शिखर के पास रहने वाले तांत्रिक चैतन्य आदि इसके पूर्ण प्रामाणिक जानकार सिद्ध योगी है, उन्हें न तो किसी प्रकार का घमण्ड है और न अहंकार।

इसके अलावा कई गृहस्थ व्यक्ति भी सिद्धसूत प्रक्रिया के पूर्ण प्रामाणिक जानकार है, जिन्होंने समय-समय पर इसका महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सामने प्रामाणिकता के साथ ज्ञान को प्रस्तुत कर यह सिद्ध कर दिया है कि भारत की यह प्राचीन विद्या अपने आप में महान अद्भुत, आश्चर्यजनक और जीवित है।

आवश्यकता है पूर्ण समर्पण करने वाले शिष्यों की नागार्जुन की तरह जीवन को दांव पर लगाने वाले क्षमता प्राप्त पुरुषों की, और साधनाओं में सिद्धि प्राप्त करने वाले योग्य शिष्यों की, जो कि ऐसे जानकार गुरुओं के पास निरन्तर रह कर उनकी कृपा प्राप्त कर उनसे यह विद्या सीखने का प्रयास करें और पूर्णता के साथ इसको प्रस्तुत करते हुए, अपने जीवन को ऐश्वर्यवान बना सकें। ★

इतिहास का एक गोपनीय पृष्ठ

इन्होंने सोना बनाया, और बहाया

"स्वर्ण विज्ञान" भारतवर्ष का प्राचीनतम विज्ञान रहा है, ऋग्वेद में भी स्वर्ण बनाने की क्रिया का ज्ञान मिलता है, इसके आगे के कई ग्रन्थों में तो स्वर्ण बनाने की विधियां स्पष्ट हुई हैं परन्तु यह स्वर्ण बनाने की कला केवल भारतवर्ष में ही नहीं अपितु भारतवर्ष के बाहर ईरान और अफ्रीका में भी ज्ञात थी और इन विधियों से इन्होंने स्वर्ण बनाया भी।

पिछले दिनों एक अत्यन्त गोपनीय पुस्तक प्राप्त हुई, जो तिब्बती भाषा में लिखी थी और जिसका अभी अभी अंग्रेजी अनुवाद होकर प्रकाशित हुआ है, इस पुस्तक में बताया गया है कि सत्रह पीढ़ियों तक एक राजा के वंशजों ने इसी कला के द्वारा स्वर्ण बनाया और उसे पानी की तरह बहाया भी।

यह पुस्तक सर्वथा प्रामाणिक है और तिब्बत के प्राचीनतम मठ "ल्हासा" में इसकी मूल प्रति सुरक्षित थी, कहा जाता है कि इस एक प्रति को प्राप्त करने के लिए ही चीनियों ने तिब्बत पर आक्रमण किया फलस्वरूप दलाई लामा को वहां से भाग कर भारत में शरण लेनी पड़ी, चीनी तब तक नहीं रुके जब तक वे ल्हासा तक पहुंच नहीं गये।

ल्हासा मठ तिब्बत का प्राचीन, महत्वपूर्ण और दुर्लभ मन्त्र तन्त्र से संबंधित पुस्तकों का अटूट खजाना है, वहां दो हजार बौद्ध भिक्षु अपने इस मठ की रक्षा करते हुए शहीद हो गये, परन्तु इसी बीच मठ के एक लामा धामतिंग वहां से इस "स्वर्ण विज्ञान" पुस्तक की मूल प्रति लेकर भाग गया, और जंगलों में जा छिपा।

चीनी सेना कड़े परिश्रम और सैकड़ों सैनिकों की आहुति देने के बाद ही ल्हासा पर विजय प्राप्त कर सकी चीनी सैनिकों ने पूरे मठ को छान मारा परन्तु वह दुर्लभ पुस्तक उनके हाथ न लगी।

इसी बीच जासूसों ने सूचना दी कि मठ का ही एक बौद्ध भिक्षु धामतिंग उस पुस्तक को लेकर भाग गया है और जंगलों में जा छिपा है।

चीनी सैनिकों ने सोचा कि वह भाग कर इस घन-घोर जंगल में कहां तक जायेगा, जंगल तो हिंसक पशुओं सांप बिच्छुओं से भरा पड़ा है, चीनी शासकों ने सैनिकों को आदेश दिया कि ल्हासा पर विजय करना उतना आवश्यक नहीं है जितना उस पुस्तक को प्राप्त करना; क्योंकि वह पूरे संसार में एक मात्र पुस्तक है जिसमें स्वर्ण बनाने की आसान और सरल विधि समझाई गयी है और जिसके बल पर तिब्बती शासकों ने पानी की तरह स्वर्ण बहाया है।

बात भी सही है, बौद्ध भिक्षुओं के द्वारा और वहां के साहित्य से पता चलता है कि वहां के शासकों ने सोलह पीढ़ी तक एक ही विधि से स्वर्ण बनाते रहे और पूर्ण रूप से मनोरंजन करते रहे।

बारहवीं शताब्दी में तिब्बत के राजा हिपिकत ने एक बहुत बड़ा बगीचा अपने घर के बाहर लगा रखा था जिसमें २२६ सोने के पौधे, हीरे मोतियों से जड़े हुए थे बगीचे के चारों ओर सोने की दीवार बनाई हुई थी, और बगीचे में बैठने के लिए राजा व रानी का सिंहासन भी ठोस सोने का था जिस पर बैठ कर वे रात्रि में भी झिलमिलाते हुए अपने स्वर्ण मय बगीचे का आनन्द लिया करते थे।

इसके बाद उनकी पीढ़ी में यह स्वर्ण निर्माण विद्या प्रचलित हुई और इसके वंशज 'एलाक' ने उस बगीचे में ही अपने दादा की कब्र ठोस सोने की बनवाई और उसे अन्दर से पूरी तरह से हीरों से जड़ दी, फिर अपने दादा की लाश कब्र में से निकाल कर इसी सोने की बनी हुई कब्र में रख दी यह कब्र १८ फीट लम्बी १२ फीट चौड़ी और ५ फीट गहरी था।

इसी स्वर्ण विज्ञान निर्माण प्रक्रिया की बदौलत उसके एक वंशज ने आज्ञा दी कि उसके पूरे महल और उसकी आस पास की धरती को सोने से मढ़ दी जाय फलस्वरूप सोने की ठोस ईंटों से पूरे किले की दीवार और उसके चारों ओर की जमीन को बनाई जिस पर राजा घूमा करता था।

यही नहीं अपितु इसके बाद इसके ही वंशज थारील ने यह आज्ञा निकाल दी कि नित्य प्रातः काल स्नान कर वह किले से जब अपने सभा भवन में जावे तो मार्ग में सोने के सिक्के बिछा दिये जांय और जितने सिक्कों पर उसके पांव पड़े वे सिक्के गरीबों में बांट दिये जावें, और यह नियम उसने जीवन भर बनाये रखा।

उनके ही एक वंशज मारेली ने इसी स्वर्ण विज्ञान के द्वारा स्वर्ण बनाने की कला सीखी और अपने बैठने के लिए चार घोड़ों की एक बग्घी बनवाई जो ठोस सोने की थी और घोड़ों के ऊपर सोने की ही झूल डाली हुई थी उनके पैरों में भी सोने की ही नालें लगी हुई थी इस सुनहरी बग्घी पर बैठ कर के ही राजा नित्य हवा खोरी के लिए निकलता।

इन्हीं वंशजों में यरविन तो स्वर्ण बनाने की कला में अत्यन्त प्रसिद्ध हुआ, उसका यह शौक था कि वह नित्य इस पुस्तक में दी हुई विधि से स्वर्ण बनाता और पूर्ण ऐयाश जीवन व्यतीत करता, एक बार अपनी प्रेमिका को उसने सोने के पतले तारों से बनी हुई पौशाक उसके जन्म दिन पर हीरों से जड़ कर भेंट की थी जिसका मूल्य उस जमाने में भी लाखों में आंका जाता था।

वास्तव में ही सोलह पीढ़ियों तक इस पुस्तक की बदौलत यहां के शासक सोना बनाते रहे और पानी की

सोना यों भी बनाया जाता है

कृष्णसर्पमेकं गृहीत्वा तस्य मुखे शिववीर्यं पूरयित्वा सर्पस्यमुखं गुदं च बध्वा नूतन मृण्मये स्थालीमध्ये संस्थाप्य स्थालिमुख मृदादिना संलिप्य विजनेस्थाने प्रातरारभ्य पुनर्प्रायावत् वह्निना ज्वाला दद्यात् ततः शुभक्षणे स्थालीमुखं उद्घाट्य सर्पभस्म विहाय शिववीर्यं गृहणीयात्, तत्तोलकमित ताम्र रक्तिमात्रं नतं शिववीर्यं दद्यात्, तत्क्षणादेव तत्ताम्रं सुवर्णीभूतं।

अर्थात् एक मरा हुआ काला सांप ले कर उसके मुंह में पारा भर दिया जाय और फिर मुंह को मिट्टी के पात्र में बन्द कर दिया जाय उस मिट्टी के पात्र को चौबीस घन्टे अग्नि दे कर जला दिया जाय और बाद में उस मिट्टी के पात्र को फोड़ कर उसमें से वह पारा निकाल ले। (सर्प की राख को रहने दें)

इसके बाद पारे के बराबर तांबा गलाकर उसमें मिला दिया जाय तो वह तांबा और पारा मिल कर तुरन्त ही स्वर्ण में परिवर्तित हो जाता है, यह प्रयोग भी पूरी तरह से अनुभूत है।

तरह बहाते रहे, इस पुस्तक पर चीनियों की प्रारम्भ से ही नजर थी और उन्होंने इसी पुस्तक को येन-केन प्रकारेण हथियाने के लिए राजनैतिक दबाव डालने शुरू किये, जब उसमें सफलता नहीं मिली तो आक्रमण कर दिया पर आक्रमण के बाद भी जब वह पुस्तक उनके हाथ नहीं लगी तो वहां के शासकों ने झुंझला कर पूरे सैनिकों को जंगलों में बिखर जाने के लिए कहा और किसी भी प्रकार से उस बौद्ध भिक्षु को पकड़ कर उसके पास से वह प्रति लाने की आज्ञा दी।

तब तक बहुत देर हो चुकी थी, और वह बौद्ध भिक्षु रोहतांग दर्रे तक आ पहुंचा था पर इस बीच उसका हाल बेहाल हो गया था भूख से उसकी अंतड़ियां बाहर आने को थी, जगह जगह से शरीर कट फट गया था तभी उसकी वहां एक भारतीय सन्यासी से भेंट हुई जिसने उसे अपनी कुटिया में लिटाया, उपचार किया और भोजन आदि खिलाया परन्तु वह बौद्ध भिक्षु चार-छः घण्टों में ही मर गया।

इसके बाद सन्यासी को उसके पास से एक प्राचीनतम पुस्तक प्राप्त हुई, पर उसे उस पुस्तक का महत्व ज्ञात नहीं था, अतः उसने उस बौद्ध भिक्षु का दाह संस्कार सम्पन्न किया और उस पुस्तक को पढ़ने की कोशिश की

परन्तु वह सन्यासी कोई उच्च कोटि का सन्यासी नहीं था और न उसे इस पुस्तक का महत्व और मूल्य ही ज्ञात था उसने एक समझदारी का कार्य किया कि वह उसे लेकर रोहतांग दर्रे से होकर मनाली की ओर पहुंच गया और वहां पर उसने उस पूरी पुस्तक की फोटो स्टेट कापी करवा दी।

इसी बीच एक अंग्रेजी पुरातत्व विशेषज्ञ को अचानक उस फोटो स्टेट कापी की दुकान पर एक पड़ा हुआ कागज का टुकड़ा देखने को मिला जो कि किसी प्राचीन पुस्तक की ही फोटो स्टेट कापी का अंश था, उसने उस पन्ने को पढ़ कर जान लिया कि यह कोई अत्यन्त दुर्लभ

स्वर्ण प्रयोग पुस्तक में प्रकाशित दुर्लभ प्रयोग जिसके द्वारा तिब्बती शासकों ने स्वर्ण बनाया

तीन भाग तांबा, सात भाग कांसा, दो भाग शुद्ध लोहा व पांच भाग पीतल ले कर इन धातुओं को परस्पर मिलाकर एक पात्र का (चाहे वह कटोरे के आकार का हो या थाली के आकार का हो) निर्माण करें।

इस पात्र को "स्वर्ण पात्र" कहते है और यह वर्षों तक स्वर्ण बनाने के काम आता है, जब यह पात्र बन जाय तो इसमें तीन भाग हरताल, दो भाग मैनसिल तथा एक भाग हिंगुल डाल कर परस्पर मिलावे जब सब एक रस हो जावे तो इसमें एक भाग शुद्ध पारा मिलादे और 'ग्वारपाठे' (इसे ग्वार पाठा भी कहते है) के रस में चौबीस घन्टे तक बराबर घोटता रहे, घोटने के बाद इस पात्र को पानी से भर दे और नीचे धीमी आंच लगा दे, लगभग एक घन्टे में पूरा पानी उड़ जाता है और पात्र में स्वर्ण का ठोस पिण्ड बचा हुआ रह जाता है, एक बार में एक किलो सोना बनाया जा सकता है।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है, और संसार का सबसे आसान सरल एवं सस्ता प्रयोग है, इस की विशेषता यह है कि इसमें गलती होने की संभावना नहीं रहती और यदि पात्र बड़ा हो तो एक बार में पांच किलो, दस किलो या चालीस किलो सोना बनाया जा सकता है।

परीक्षण से यह भी स्पष्ट हुआ है कि यदि इसमें थोड़ी बहुत कमी घोटने में या गर्म करने में रह जाती तब भी सफलता ही हाथ लगती है, इसीलिए इस विधि को महत्वपूर्ण माना है।

और महत्वपूर्ण पुस्तक है जिसमें स्वर्ण प्रक्रिया का विशेष ज्ञान है, उसने उस दुकानदार से इस संबंध में पूछा तो उसने बता दिया कि आज सुबह ही एक सन्यासी ने एक प्राचीन पुस्तक की फोटो स्टेट काफी सम्पन्न करवाई है, तब तक वह सन्यासी शिमला पहुंच गया था।

खोज-बीन करता हुआ वह अंग्रेज पुरातत्व विशेषज्ञ शिमला जा पहुंचा और उस सन्यासी को ढूंढ निकाला और उससे कौड़ियों के मोल वह पुस्तक खरीद ली और अपने देश चला गया। वहां से उसने बहुत ही ऊंचे दाम पर वह स्वर्ण तंत्रम् पुस्तक एक अमेरिकी धन कुबेर को बेच दी, जिसने उस पुस्तक का कुछ अंश अंग्रेजी में प्रकाशित करवाया और उसकी रायल्टी के बदले में लाखों डालर प्राप्त किये।

यह अच्छा हुआ कि उस सन्यासी के पास प्रामाणिक फोटो स्टेट कापी विद्यमान थी और नित्य उस पुस्तक को पढ़ने की कोशिश करता परन्तु उसे कुछ भी समझ में नहीं आया पर इतना उसे ज्ञान हो गया था कि यह पुस्तक जरूर बहुत कीमती होगी या उसमें बहुत कीमती सामग्री लिखी हुई होगी तभी तो वह अंग्रेज मुंह मांगे दाम देकर पुस्तक खरीद कर ले गया है।

इसी बीच पत्रिका के एक सदस्य को उस साधु के पास वह पुस्तक देखने को मिली और उसने पहली बार अनुमान लगाया कि यह पुस्तक कितनी अधिक मूल्यवान और अद्वितीय है, सन्यासी ने वह पुस्तक तो उसे नहीं दी परन्तु उसके कुछ अंश लिखने के लिए दे दिये, एक महीने तक मेहनत कर उस युवक ने जो कि प्राचीन भारतीय लिपियों का विशेषज्ञ है, उस पुस्तक के महत्वपूर्ण अंश लिख डाले।

इसी बीच पत्रिका के एक सदस्य को उस सन्यासी के बारे में पता चला और लगभग छः महीने तक सन्यासी के पास ही रहा उसने उस पुस्तक से काफी कुछ सामग्री प्राप्त की और जब उसने पुस्तक में वर्णित विधि से स्वर्ण बनाया तो वह आश्चर्यचकित रह गया, पहली ही बार में उसे सफलता मिल गयी, इसके बाद उसने इसी प्रयोग को पांच छः बार परीक्षण किया और हर बार उसे सफलता मिली, तब तक सन्यासी को भी उस पुस्तक में वर्णित विधि और प्रयोग का ज्ञान हो गया था और सन्यासी ने भी उसी विधि से स्वर्ण बनाया तो पहली ही बार में उसे शानदार सफलता मिल गयी।

उस घुमक्कड़ सन्यासी ने ही इस पूरे इतिहास को और उस विधि को प्रामाणिकता के साथ लिख भेजा जिसे हम प्रकाशित कर रहे हैं, उस अंग्रेजी पुस्तक को पढ़ने के बाद भी यह विश्वास हो गया कि वास्तव में ही सन्यासी ने जो प्रयोग भेजा है और पुस्तक में वर्णित जो इतिहास लिख भेजा है, वह सर्वथा प्रामाणिक और सौ टंच खरा है।

*

स्वर्ण निर्माण

पारदं पलमेकं च पलैकं तालकं तथा।
तत्समं गंधकं क्षिप्त्वा रविदुग्धेन मर्दयेत्।
तत्सर्वं गोलकं कृत्वा स्थालिकायां विनिक्षिपेत्।
तन्मुखे मुद्रिकां दत्वा दीपाग्निं च प्रदीपयेत्
कांचनं जायते दिव्यं देवानामपि दुर्लभम्।

अर्थात् एक भाग पारा, एक भाग हरताल व एक भाग शुद्ध गन्धक ले कर आक के दूध में दो घन्टे खरल करके घोट कर एक रस बना दें और इस का गोला बना कर थाली में रख दें तथा उसके ऊपर एक कटोरा उल्टा ढक दें।

इसके बाद नीचे मन्द मन्द आंच जलावे तो एक घन्टे भर में थाली में रखी हुई सामग्री पूर्णतः स्वर्ण में परिवर्तित हो जाती है, यह प्रयोग कई बार आजमाया हुआ है और अपने आप में प्रामाणिक है।

गुरु साधना सिद्धि ही ब्रह्म सिद्धि है

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरु देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।

गुरु चरणों में सभी लोकों के पावन तीर्थ, पतित पावनी गंगा का निर्मल नीर, सागर महासागर की रत्न गर्भा धानी, हिम स्फटिक उत्तुंग हिमालय की गगन चुम्बी ऊंचाई, समूची धरा प्रकृति का [illegible] पंछी सतरंगी नृत्य, क्या कुछ नहीं समाहित है, आवाहन करते ही गुरु पाद अंगुष्ठ में सभी देवी देवता दौड़ कर समाहित होने के लिये आकुल रहते हैं, उर्वशी, मेनका, रम्भा उनकी भृकुटि संकेत पर नृत्य करते नहीं अघाती, ब्रह्मा विष्णु महेश स्वयं उनका रूप धर उतने समाहित हो गौरवान्वित अनुभव करते हैं, शक्ति रूप मां भगवती जगदम्बे उनके भाल पर चन्द्रमा रूप में स्थापित हो शीतलता प्रदान करती है, कामदेव स्वयं मधुर हास विलास के साथ अधर, मुखमंडल, अंग प्रत्यंग में सौन्दर्य बन यौवन मुखरित हो साकार हो उठता है, साधक और शिष्यों के प्राण, उनकी प्राणश्चेतना, तप, ऊर्जा, जीवन-दानी सम्पत्तियों का पूर्ण निश्छल समर्पण क्या कुछ नहीं है उनके चरणों में ? ऐसे दिव्य चरणों की अलौकिक धान दिव्यतम रूप धर, जिनके [illegible] मध्य अवतरित हो जाती है, धन्य है ऐसे सिद्ध साधक-मानव, जीवन सफल है उनका ही इसीलिये शायद कबीर को कहना पड़ा —

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपकी जो गोविन्द दियो बताय।

गोविन्द से साक्षात्कार गुरु कृपा से ही तो संभव है या यों कहा जाय कि गुरु स्वयं ही तो ब्रह्म रूप में साधक के सम्मुख अवतरित हो अपने आप में अनजाना और त्रिभुवन भोला व मासूम बन जाता है, गुरु और गोविन्द दोनों यदि एक ही सिक्के के दो स्वरूप कहे जायें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी, लौकिक भेद दृष्टि से यदि दोनों में भेद माना भी जाय तो भी कबीर के उपरोक्त कथन के अनुसार गुरु का अस्तित्व गोविन्द से महान ही आंका गया है पथ बताने वाला, निश्चय ही मंजिल तक पहुंचने वाले से महान है ही, भौतिक और आध्यात्मिक दोनों दृष्टि से कहीं भी आप देख सकते हैं।

गुरु को कैसे प्रसन्न और सिद्ध करें

भावना के वश भगवान होते हैं, सुनते और पढ़ते आये हैं—"मन्त्रस्यधीना देवता" मन्त्र, तीर्थ, वैद्य और गुरु में पूर्ण आस्था ही सिद्धिप्रद कही गई है, हृदय पक्ष चैतन्य और जाग्रत कर कुंठा एवं तर्क रहित हो सच्ची आत्माओं से की गई सेवा और आराधना के द्वारा गुरु को मोह लिया जाता है, यह ऐसी सम्मोहन क्रिया है, जिसके द्वारा गुरु स्वयं ही वशवर्ती होता है, सेवक, साधक या शिष्य को गुरु से संवाद करने की आवश्यकता ही नहीं रहती, वस्तुतः भी मौन सेवा साधना-आराधना गुरु हृदय पटल पर अंकित होती रहती है, हर पल हर क्षण गुरु की पैनी दृष्टि ऐसे सेवाभावी साधक पर टिकी रहती है, गुरु एक क्षण की गफलत बर्दाश्त नहीं करता, कुम्हार के

चाक की तरह कच्ची माटी रूप ऐसे शिष्य को गुरु हर पल अपने अनुरूप स्वरूप देने में लगा रहता है, ठोक-पीट कर उसके पापों का क्षय करता रहता है और उस दिन की कल्पना करता रहता है जब उसका ऐसा शिष्य शुद्ध परिष्कृत हो भाव विभोर रोम-रोम से नर्तन कर उठे, ब्रह्मानंद को प्राप्त हो सभी ऋद्धि सिद्धियों को गुरु के हृदय में अपना स्थान बना स्वतः प्राप्त करले और ऐसा ही होता है जब गुरु अपने शिष्य पर अपने सेवक पर अहेतुकी कृपा वृष्टि करता है, सारे चक्रों को शक्तिपात से एक झटके में ही जाग्रत कर सहस्त्रार भेदन कर देता है – तुरीयावस्था को प्राप्त हो शिष्य निर्विकल्प समाधि में पहुंच जाता है, ब्रह्म साक्षात्कार हो, ब्रह्मानन्द रसपान में सराबोर शिष्य गुरु चरणों में लोट-पोट हो अपने भाग्य को सराहते नहीं थकता, इठला उठता है गुरु कृपा की सोम सुधा पी।



आप कहेंगे ऐसा कैसे संभव है ?

ऐसा संभव है और संभव होता आया है, इतिहास इस बात का साक्षी है, एक नहीं अनेक उदाहरण अपनी सजीवता से शिष्यों को प्रेरित करते आ रहे हैं, राम कृष्ण परम हंस के शिष्य स्वामी विवेकानन्द, दंडी स्वामी विरजानन्द के शिष्य स्वामी दयानन्द सरस्वती, पूज्यपाद शंकराचार्य के शिष्य पाद पद्म, मत्स्येन्द्र नाथ, मुक्तानन्द आदि के नाम आज भी साक्षी भूत हो इसी तथ्य को प्रतिपादित कर रहे हैं, सद्गुरु अपना सम्पूर्ण ज्ञान, चिन्तन, तपस्या, जीवन् का सारभूत तथ्य अपने शिष्य में उतार देता है, समाहित कर देता है, नेत्र और आशीर्वाद एवं अभयमुद्रा के माध्यम से, सभी सिद्धियों का दाता गुरु यदि अपने आपमें पूर्ण है तो निश्चय ही वह सिन्धुवत अपने में एकाकार होने वाले नद रूपी शिष्य को सिन्धु बना ही देता है,

दिव्य पथ के पथिक बन पथ प्रशस्त कर लो

तो आओ आत्मीय भाई और बहनों आप भी इस पथ के पथिक बन अपना पथ प्रशस्त कर लो, आप भी गुरु चरणों में आ ऐसी लौ लगाओ जो कभी बुझे नहीं शाश्वत् हो तुम्हें तुम्हारे गन्तव्य तक पहुंचा कर ही रहे, दीक्षा प्राप्त कर उनका आशीर्वाद लो, गुरु मंत्र से अपने आपको जाज्वल्यमान कर, प्राणश्चेतना जाग्रत कर प्रफुल्ल हो उठो, रोम रोम समर्पण भाव ला सब कुछ समर्पित कर दो अपने सद् गुरु के पावन चरणों में, धो दो उनके चरणों को अपनी दोनों आंखों से, झर-झर झरती अश्रु-धार से तुम्हारा अन्तर कल्मष धुल जायेगा, कर्माधीन पापों का क्षय हो जायेगा, सिर पर प्यार भरा गुरु का वरदहस्त फिरते ही जादू सा हो जायेगा, लगेगा जीवन की तपती दुपहरी में कहीं किसी निर्मल शीतल झरने में अवगाहन किया है, कुछ भी अपना बचा कर रखना नहीं है, रखना चाहोगे भी तो रख नहीं सकते आखिर तुम्हारा यहां है क्या ? किसी पर भी तो तुम्हारा अधिकार नहीं माता-पिता, दादा-परदादा कोई भी किसी के अधिकार से रुके नहीं पत्नी, भाई, बन्धु, बेटा बेटी सभी तो इस क्रम में है, धन दौलत साथ जाती नहीं जाने की बेला में कौन साथ निभायेगा ? कोई भी तो साथ नहीं जायेगा

और कोई हमारे रोके रुकेगा भी तो फिर इस मृग मरीचिका में फंसा मन क्यों भ्रमित करता है, क्यों नहीं सच्चाई को आज ही जान लेता, विडम्बना का जीवन जीने से क्या लाभ ? हाथ छूने जब जाना ही है तो क्यों न गुरु के बताये रास्ते पर चलते हुए उसे ही सिद्ध किया जाये, क्यों न ब्रह्मानन्द प्राप्त करके ब्रह्म साक्षात्कार किया जाय यही वह अनमोल धन है जो हमारी आपकी असली पूंजी है, वास्तविक कमाई है जो साथ जायेगी जिस पर अधिकार जता सकते हो, क्योंकि यह तुम्हारी अर्जित सिद्धि है, सेवा है, साधना है, गुरु की विशेष दिव्य कृपा है।

पहिचानों गुरू के त्रिगुणात्मक शिव शिवा रूप को–

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, आद्या शक्ति रूप को स्वयं में समाहित किये साधारण आम आदमी सा दीखने वाला व्यक्तित्व अत्यन्त विलक्षण लीलाधारी है, सेवा में रत सेवक, साधक और विशिष्ट शिष्यों को भी समय समय पर भरमाता करता है, माया का पर्दा उनकी खुली आंखों पर भी डालता रहता है और यह सब करते हुए बिल्कुल अनजान, कभी कभी पूर्ण अज्ञानी की भूमिका निभाते हुए शिष्य से भी निचले स्तर पर स्वयं को प्रतिष्ठित कर मुस्कराता रहता है अन्दर ही अन्दर, कैसी अद्भुत माया है गुरु की जो सहज ही जानी नहीं जा सकती, चर्म चक्षुओं से गुरु जैसा दिखता है, वैसा है नहीं, अन्तर्चक्षु खुलने पर ही कभी कभी उसका दिव्य रूप परिलक्षित होता है, साक्षात्कार होता है उसके ब्रह्म रूप से, मगर हर पल गुरू का प्रयास रहता है शिष्य उसे समझे नहीं, समझ न सके, शिष्य का प्रयास रहना चाहिए गुरू की दिव्य झांकी पाने का उसे पहिचानने का, इस दौर में जिस दिन गुरू अपनी हार स्वीकार कर लेता है, शिष्य का सौभाग्य उदय होता है उसके जीवन के पुण्यों का फल उसके समक्ष होता है, गुरू शिष्य को सीने से लगा लेता है वह सिद्धि जिसे ब्रह्म सिद्धि कहा जाता है, पूर्णता मिलते ही शिष्य शिष्य नहीं रहता गुरुवत् बन गुरु की ही आत्मा का पूर्ण चेतन अंश हो जाता है, शिव शिवारूप में गुरू का वरदहस्त शिष्य के भाल पर आशीर्वाद की वर्षा करता है और वह वरदानमयी बेला ही शिष्य का श्रृंगार और जीवन की पूर्णता है।

गुरु सिद्धि संजो कर ही ब्रह्म सिद्धि संभव है–

गुरू चरणों में स्वयं को इस तल्लीनता की स्थिति में पहुँचा कर ही सेवक, साधक और शिष्य सांस सांस में गुरु नाम जपता हुआ उसके एकाकार हो पाता है, खाते हुए भी वह नहीं खाता, सोते हुए भी वह नहीं सोता, जागते हुए भी वह नहीं जागता, कर्म करते हुए भी वह नहीं करता, यह भाव उसमें जाग जाता है, कर्त्ता स्वयं उसके गुरु होते है और वह मात्र निमित्त बन गुरू संकेत पर कठपुतली सा नृत्य करता रहता है, कर्ता भाव विलीन होते ही वह समर्पण भाव में डूब जाता है, उसके अस्तित्व और गुरु के अस्तित्व में कहीं कोई अन्तर नहीं रहता, एक दूसरे का सुख-दुख एक दूसरे को सालता है, प्राणों से प्राणों का स्पन्दन एक साथ होता है, बाहर से अलग दिखने पर भी द्वैत नहीं अद्वैत रूप बन जाते है, चिन्तन से एक, प्राणों से एक स्थिति जब बन जाती है तो गुरू सिद्धि की स्थिति शिष्य को प्राप्त हो जाती है, प्रेम और भावातिरेक में शिष्य को हृदय से लगा सब कुछ न्यौछावर कर देता है, अपना चिन्तन, अपना ज्ञान, अपनी तपस्या, साधना सिद्धि सब कुछ प्रवाहित कर देता है शिष्य में, सिर पर हाथ फेर ब्रह्म रंध्र खोल देता है, दे देता है वह ब्रह्म सिद्धि, जिसे योगी, ऋषि, मुनि, तपस्वी, देवी देवता भी पाने को आतुर और आकुल रहते है, ब्रह्म से साक्षात्कार की यही निष्काम सिद्धि गुरू का आशीर्वाद और वरदान बन फल जाती है शिष्य में, सेवक में, साधक में, भोग और मोक्ष दोनों को देकर पूर्णता देने वाली गुरु सिद्धि ही ब्रह्म सिद्धि कही गई है, शत शत नमन है गुरु की अहैतुकी कृपा को—

ध्यान मूलं गुरू मूर्ति पूजा मूलं गुरू पदं
वेद मूलं गुरू वाक्यं मोक्ष मूल गुरू कृपा।

योगेन्द्र निर्मोही ●

बंगाल की जादूगरनी

जो मनुष्य को दिन में तोता और रात को मर्द बना देती है

मुझे प्रारम्भ से ही मंत्र तंत्र योग आदि के बारे में शौक रहा है और जब से मैंने थोड़ा बहुत होश संभाला है तब से मेरे मन में यही आकांक्षा थी कि मैं तंत्र के क्षेत्र में बहुत बड़ा नाम कमाऊं और कुछ ऐसा कार्य करूं जो अपने आपमें अनोखा और अलौकिक हो।

मेरा शरीर मजबूत कद-काठी का, सुन्दर और हृष्ट पुष्ट है, मुझे अपने शरीर पर गर्व है, परन्तु शरीर से भी ज्यादा मुझे उन योगियों और सन्यासियों से मिलने में आनन्द आता जो गांव या शहर के बाहर सुनसान स्थानों पर निवास करते हैं जो चिलम और गांजे का दम भरते हैं और जिसके पास कुछ ऐसी विद्याएं हैं जो अपने आपमें अलौकिक और अद्वितीय हैं, दिन को नौकरी समाप्त कर मैं जंगल की ओर निकल जाता और ऐसे लोगों की तलाश में रहता।

इस बीच मैं थोड़ी बहुत तंत्र विद्या सीखी भी, वशीकरण करना, सम्मोहन करके किसी को भी अपने अनुकूल बना लेना, हवा में से कोई पदार्थ प्राप्त कर लेना आदि विद्याएं मैं सीख चुका था इस बीच मेरी भेंट एक औघड़ से हो गयी और उस औघड़ के साथ श्मशान में भी तीन चार महीने रहा उसके पास वास्तव में ही कुछ अलौकिक सिद्धियां थी परन्तु वह थोड़ा कृपण और क्रोधित स्वभाव का था उससे मुझे कुछ ज्यादा प्राप्त नहीं हो सका परन्तु फिर भी उस औघड़ से मैंने दो तीन भूत साधनाएं अवश्य सिद्ध की और अब मैं इस योग्य बन गया था कि भूतों से मन चाहा कार्य सम्पन्न करवा दूं, कभी मैं उनसे पैरों की मालिश करवाता, कभी उन्हें खेतों में पानी देने का काम सौंपता और कभी कभी तो मजाक के मूड में कई ऐसे कार्य सौंप देता जिनकी कोई जरूरत ही नहीं थी परन्तु मैं यह देखकर आश्चर्य चकित रह जाता कि मेरी आज्ञा का ये तुरन्त पालन करते हैं, और सच्चे सेवक की तरह कार्य सम्पन्न करते हैं।

बातचीत के क्रम में एक दिन औघड़ से पता चला कि तंत्र विद्या अगर सीखनी है, तो इसका गढ़ बंगाल में है, बंगाल के भी कुछ सुदूर इलाकों में तंत्र की गोपनीय और महत्वपूर्ण क्रियाएं आज भी जीवित हैं और यदि वास्तविक रूप से तंत्र को सीखना है और समझना है तो बंगाल के चिरकुट कस्बे में जाना होगा, चिरकुट अपने आप में अत्यन्त प्रसिद्ध स्थान है, जहां आदिवासियों की संख्या बहुतायत से है, बंगाल में चिरकुट को तंत्र का गढ़ कहते हैं, चिरकुट यहां तंत्र के देवता हुए हैं और उनके नाम पर ही उस स्थान का नाम चिरकुट पड़ा है।

मैंने भी कई पुस्तकों में बंगाल, वहां की तंत्र विद्या और चिरकुट कस्बे के बारे में पढ़ा था पर जाने का अवसर

नहीं मिला था, मैंने उन औघड़ कपालनाथ जी से निवेदन किया कि मेरी इच्छा बंगाल जाने की और कुछ दिन चिरकुट में रहने की है ।

मेरी बात सुनकर कपालनाथ जोरों से अट्टहास कर उठे बोले तू पागल हो गया है, वहां की औरतें बड़ी मर्द-खोर होती हैं, और सुन्दर पुरुषों को या आकर्षक युवकों को देखकर उन्हें भगा ले जाती हैं, लोक लाज के भय से वे उस मनुष्य को दिन में तोता या कोई पशु पक्षी बना कर रख देती हैं परन्तु रात को उसे पूर्ण पुरुष बना देती है ।

यह मेरे लिए सर्वथा अप्रत्याशित था इस संबंध में मैंने किस्से कहानियां सुनी तो अवश्य थी पर यह विश्वास नहीं था कि आज बीसवीं शताब्दी में भी ऐसी औरतें हैं जो तन्त्र विद्या की जानकार हैं और मनुष्य को तोता या मैना बना देती हैं और बाद में जब चाहे उसे पुरुष के रूप में बदल देती हैं ।

मैंने कपालनाथ जी से निवेदन किया कि मैं अपने जीवन में एक बार चिरकुट जाना अवश्य चाहता हूं और जाना ही नहीं अपितु वहां चार छः महीने रहना चाहता हूं, मैं देखना चाहता हूं कि आपकी बातों में कितनी सच्चाई है ।

कोई उनको ललकार दे यह उनके लिए सर्वथा अप्रत्याशित था, एक दम से उनकी त्यौरियां चढ़ गयीं बोले तुझे मुझ पर भरोसा नहीं है तभी तो ऐसी बातें कर रहा है, मैं चिरकुट में तीन साल रहा हूं और इस प्रकार के हादसों से गुजर चुका हूं, मगर मैंने वहां इन विद्याओं को सीखा भी है और मैं भी इस प्रकार का प्रयोग करके दिखा सकता हूं ।

मैं मौन रहा, बात को आगे बढ़ाते हुए कपालनाथ ने कहा मेरा विचार इसी महीने बंगाल की तरफ जाने का है अगर तेरी इच्छा है तो मेरे साथ चल सकता है, पर वहां तुम्हारे साथ किसी प्रकार का कोई हादसा हो गया तो उसका जिम्मेवार मैं नहीं हूं ।

शीघ्र गमन सिद्धि

यह एक अद्भुत प्रयोग है और इस प्रयोग के द्वारा व्यक्ति बहुत तेजी से चल सकता है, तथा एक घण्टे में कई सौ मील की यात्रा पैदल कर सकता है. इस प्रकार की यात्रा करने पर भी न तो उसे किसी प्रकार की थकावट आती है और न किसी प्रकार की कोई तकलीफ ही होती है ।

यह साधना किसी भी अष्टमी से प्रारम्भ करनी चाहिए, रात्रि को स्नान कर पीली धोती पहिन कर, पीली धोती ओढ़ ले और सामने एक तेल का दीपक लगा ले फिर लाल आसन बिछा कर उस पर उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय तथा हकीक माला से निम्न मन्त्र की एक सौ माला फेरे—

मन्त्र

ॐ वीर वेतालाय शीघ्र गमनार्थे गच्छ गच्छ वेताल हुं हुं फट् ।

यह ३१ दिन की साधना है और नियमित रूप से करने पर यह साधना सिद्ध होती है, यह प्रयोग भी मुझे उस प्राणदाता सुन्दरी ने ही बताया था और मैंने इसको सैकड़ों बार आजमाया है तथा हर बार इस मन्त्र की क्षमता अनुभव कर आश्चर्य चकित रह गया हूं ।

इस मन्त्र के प्रभाव से व्यक्ति एक दिन में चाहे जितने मील पैदल चल सकता है, उसे न भूख-प्यास सताती है और न उस पर सर्दी गर्मी का ही कोई प्रभाव व्याप्त होता है, सबसे बड़ी बात यह है कि किसी प्रकार की कोई थकावट भी नहीं आती ।

मुझे मन में प्रसन्नता थी कि एक बार वहां चले जा सही, बाद में जो कुछ होगा देखा जायेगा, एक बार इस विद्या को अपनी आंखों से देख लेना चाहता था और संभव हो तो सीख लेना चाहता था।

जल्दी ही ऐसा अवसर भी उपस्थित हो गया एक दिन औघड़ ने कहा बच्चे! आज मैं यहां से अपने डेरे डण्डे उठा रहा हूं, और नवरात्रि निकट है, इसलिए बंगाल जा रहा हूं, तुमने एक बार चिरकुट चलने के लिए कहा था

देह परिवर्तन सिद्धि

यह साधना थोड़ी कठिन अवश्य है परन्तु यदि एक बार साधक परिश्रम कर इस साधना को सम्पन्न कर लेता है तो वह कुछ ही क्षणों में सामने वाले पुरुष या स्त्री का देह परिवर्तन कर मनोवांछित आकार दे सकता है, इस मन्त्र के प्रभाव से पुरुष या स्त्री को तोता, मैना, भेड़, बकरी या अन्य किसी भी पशु के स्वरूप में डाला जा सकता है और जब चाहे तब वापिस उसको असली रूप में लाया जा सकता है।

यह प्रयोग अमावस्या से प्रारम्भ किया जाता है और ६० दिन का प्रयोग है, इसमें ठीक आधी रात को सर्वथा नग्न हो कर नदी तट पर तालाब पर या कुए पर जा कर स्नान करे और वापिस बिना वस्त्र पहिने ही घर आ कर पहिले से ही बिछे हुए मृग चर्म पर दक्षिण की ओर मुंह कर बैठ जाय, अपने ललाट पर सिन्दूर का तिलक लगा ले और सामने दीवार पर सिन्दूर से ही घुर्जटा देवी का चित्र बनावे जिसके बाल बिखरे हुए हों जिसके हाथ में खप्पर तथा दूसरे हाथ में मुन्ड माला हो।

फिर घुर्जटा देवी की पूजा करे और सर्प अस्थियोंकी माला से मंत्र जप करें, एक रात में एक सौ इक्कीस माला मंत्र जप होना अनिवार्य है।

मन्त्र

ॐ घूं घूं घूर्जटे देह रूपाय परिवर्तनाये धूम धूम कार्य सिद्धयं हुं अनंग पालाये घूर्जटे फट्।

जब ६० दिन का प्रयोग समाप्त हो जाय तब उस घुर्जटा देवी पर लगे हुए सिन्दूर को अपने ललाट पर लगाये इस पूरी अवधि एक समय भोजन करें भूमि शयन करें और ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें।

पूर्ण विधि विधान के साथ जब साधना सम्पन्न हो जाय तब जिस पुरुष या स्त्री को किसी अन्य शरीर में परिवर्तन करना है तो पहले वह मुंह से बोल दे कि अमुक आकृति में यह बदल जाय और फिर तीन बार मन्त्र उच्चारण कर जोर से फूंक मार दें तो तुरन्त ही वह दूसरी आकृति में परिवर्तित हो जाता है और जिन्दा रहता है।

यह प्रयोग मेरा आजमाया हुआ है और कोई भी साधक इस को सीख कर इसकी सत्यता और प्रामाणिकता परख सकता है।

अगर तुम्हें वहाँ जाना है तो मैं तुम्हें अपने साथ ले जा सकता हूं।

मैंने नौकरी से तो इस्तीफा पहले ही दे दिया था और सर्वथा स्वतन्त्र था, मां बाप को पूछने की जरूरत मैं महसूस कर ही नहीं रहा था फिर भी मैंने उन्हें सूचना दे दी कि मैं बंगाल कलकत्ते की ओर जा रहा हूं और साल भर बाद ही लौटूंगा, ऐसा कह कर मैं घर से निकल गया था।

दूसरे दिन मैं योगेन्द्र के साथ रेल में बैठ गया और चार दिन की यात्रा करके मेदिनीपुर की ओर पहुँच गया वहां से आगे का रास्ता पैदल था और लगभग ६० मील दूर चिरकुट कस्बा था एक छोटी सी बस उस तरफ आती जाती जरूर थी हम दोनों उस बस में सवार हुए और चिरकुट कस्बे के पास ही गांव के बाहर अपनी धूनी लगा ली।

दो तीन दिन तक तो मेरे साथ कुछ भी घटना घटित

वह सम्मोहन प्रयोग : जिसे चिरकुट की सुन्दरी ने मुझ पर किया

जब मैं वहां से रवाना हुआ तो मेरी प्राणदाता उस स्त्री से मैंने निवेदन किया कि तुमने मुझे दो तीन मन्त्र तो बताये हैं पर यदि सम्भव हो तो उस मन्त्र को भी मुझे बताइये जिसके द्वारा मेरे जैसा औघड़ तांत्रिक को भी एक क्षण में सम्मोहित कर अपने पीछे चलने के लिए बाध्य कर दिया था।

मेरा प्रश्न सुनकर वह सुन्दरी पहले तो एक दो क्षण हिचकिचाई पर वह शायद मुझ से बहुत ज्यादा प्रेम करने लग गई थी इसलिए उसने इस प्रयोग को भी मुझे बता दिया जो कि मैं पत्रिका पाठकों के सामने रख रहा हूं।

अमावस्या के दिन सरसों के पांच मुट्ठी दाने ला कर स्त्री को आकृति की शक्ल बना दे और उस पर मृग चर्म बिछा कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर सर्वथा नग्न बैठ जाय और फिर सामने तेल दीपक लगा कर मन्त्र जप प्रारम्भ करें।

मन्त्र

ॐ ऐं ह्लीं क्लीं वश्य अवश्य सम्मोहय मम वश्यम् कुरु कुरु फट्।

उस रात को हकीक माला से या स्फटिक माला से एक सौ एक माला मन्त्र जप करना है, मन्त्र जप सम्पन्न करते ही उसकी आंखों में एक विशेष प्रकार की सम्मोहन शक्ति आ जायेगी और वह जिस पुरुष या स्त्री को भी देखकर उसकी आंखों में आंखें डाल कर एक क्षण के लिए भावना दें कि तुम मेरे वश में हो और मैं जैसा कहूं वैसा ही जीवन भर करोगी और फिर उपरोक्त मन्त्र का तीन बार उच्चारण कर फूंक मार दें तो सामने वाले व्यक्ति पुरुष या स्त्री की बुद्धि कुन्द हो जाती है और सम्मोहनकर्ता के वश में हो कर जीवन भर उसके अनुसार ही कार्य करती है।

यह प्रयोग अपने आप में अत्यन्त तीक्ष्ण और महत्वपूर्ण है तथा पत्थर को भी इस प्रयोग के द्वारा वश में किया जा सकता है।

नहीं हुई, एक दिन सुबह जब मैं सो कर उठा तो औघड़ का कोई अता पता नहीं था, न तो उसका चिमटा पड़ा था और न कपड़े लत्ते ही, मैंने दो तीन घंटे उसका इन्तजार भी किया परन्तु औघड़ वापिस नहीं आया।



जब लगभग सांझ ढलने लगी और पेट में भूख की माया बढ़ने लगी तो मैंने कस्बे में जाना ही उचित समझा जिससे कहीं से अन्न प्राप्त कर पेट की भूख को शान्त कर सकूं।

पूरे बंगाल में चिरकुट कस्बा प्रसिद्ध है, और मेदनीपुर से वहां तक सीधी बस जाती है, मगर यह घटना बहुत पुरानी नहीं है, केवल दो तीन वर्ष पहले की ही बात है, छोटा कस्बा था और आम बंगाली गृहस्थ लोगों के जैसे घर होते हैं वैसे ही घर थे, सूर्य लगभग अस्त होने को आ रहा था, मैं एक दरवाजे पर जा पहुंचा और दरवाजे को थोड़ा सा धक्का दिया तो दरवाजा खुल गया, सामने ही दो स्त्रियां बैठी हुई रोटियां बना रही थी और एक पुरुष मछली से भात खा रहा था।

मुझे आया देखकर उस पुरुष ने अन्दर आने के लिए कहा और एक तरफ बैठ जाने के लिए कह दिया, मैं चुप चाप बैठ गया उसने बंगाली भाषा में कुछ पूछा परन्तु मैं पूरी तरह से समझ नहीं पाया, थोड़ी देर में एक स्त्री ने संकेत से कुछ पूछा, क्या भूख लगी है? मेरे हां कहने पर उसने मेरी हथेली पर चार रोटियां और थोड़ी सी सब्जी रख दी मैं वहीं बैठे बैठे भोजन कर पानी पिया और वापिस जाने के लिए मुड़ा तो स्त्री ने जवाब दिया रात को यहीं रुक जाइये, रात घिर गई है।

यद्यपि मैं उसकी भाषा समझ नहीं पा रहा था पर उसका संकेत समझ रहा था, मैं बिना उसकी परवाह किये घर से बाहर निकल गया।

मैं गांव के बाहर वापिस उसी स्थान पर आ गया जहां पर मैं दो दिन से टिका हुआ था, मेरे मन में विचार था कि शायद औघड़ वापिस आ गया हो, औघड़ के रहने से मैं अपने आपको सुरक्षित महसूस कर रहा था पर मु[illegible] वहां औघड़ का कुछ अता पता नहीं चला और निराश हो कर वहीं लेट गया।

रात के लगभग ग्यारह बजे होंगे कि एक सुन्दर [illegible] स्त्री पास में आकर खड़ी हो गई, चांदनी रात थी, मु[illegible] नींद आ नहीं रही थी और मैं उसे पास में खड़ी सा[illegible] साफ देख रहा था, मुझे पता चला कि यह तो वही स[illegible] है जिसके घर मैं खाना खाने गया था और दो मिनट [illegible] लिए कमरे से यह लड़की बाहर आई थी शायद उ[illegible] घर की बहू बेटी थी।

उसने मुझे उठने के लिए कहा और साथ में च[illegible] के लिये बोली पर मैं औघड़ की तरह ही पैर पर [illegible] रखे हुए लेटा रहा जैसे कि मैंने उसको देखा ही नहीं, या मेरे चित्त पर उसका कोई प्रभाव पड़ा ही न हो।

इसमें कोई दो राय नहीं कि वह लड़की अत्यन्त सुन्दर थी और आकर्षक भी मैं यह भी समझ रहा था कि रात को बारह बजे किसी लड़की का अकेले आना क्या मायने रखता है, परन्तु मैं अपने आप में संयत रहना चाहता था और किसी मुसीबत में फंसना नहीं चाहता था।

उस सुन्दरी ने बंगला भाषा में कुछ कहा पर मैं समझ नहीं पाया, वह पांच सात मिनट तो मेरा इन्तजार करती रही और फिर झटके से मेरा हाथ पकड़ कर मुझे अपने स्थान से खड़ा कर दिया।

यह मेरे लिए आश्चर्य की बात थी कि एक सुकुमार नाजुक लड़की में इतनी ताकत हो कि मुझ जैसे औघड़ को एक झटके में खींच कर खड़ा कर दे और अपने साथ चलने के लिए विवश कर दे, उसने मुश्किल से दो या तीन मिनट मेरी आंखों में ताका होगा, और मुझे ऐसा लगा कि जैसे उसने मेरी बुद्धि, मेरी भावनाएं और मेरे विचारों को बांध दिया है, वह एक तरफ को रवाना हो गई और मैं अदृश्य डोर से बंधा हुआ उसके पीछे पीछे पशु की तरह चल रहा था।

इसमें कोई दो राय नहीं कि मैं अपने पूरे होशो हवास में था मैं सही प्रकार से चिन्तन कर रहा था मेरी कोख की कही हुई बातें भली प्रकार से याद थीं [illegible] मुझे यह भी स्मरण था कि इस तरफ की औरतें मर्दखोर होती हैं और पुरुषों से मनोवांछित कार्य सम्पन्न करवा लेती है परन्तु ये सब बातें सोचते विचारते समझते हुए भी मैं उसके पीछे पीछे चल रहा था, एक दो बार मेरे मन में निश्चय किया मैं उलटे पांव लौट जाऊं परन्तु मैं चाहते हुए भी लौट नहीं सका, और मैं बराबर उसके पीछे पीछे चल रहा था।

आधे घन्टे बाद वह एक मकान में मुझे ले गयी जहां उसकी दो तीन सहेलियां और भी बैठी हुई थी और शायद वे सभी मेरा इन्तजार ही कर रही थी, मैं एक

अत्यन्त तीव्र वशीकरण प्रयोग

यों तो तन्त्र विद्या में सैकड़ों सम्मोहन प्रयोग और वशीकरण प्रयोग है पर यह प्रयोग अपने आप में अत्यन्त ही तीक्ष्ण और तुरन्त प्रभाव पैदा करने वाला है, यह मुझे उस औघड़ कपालनाथ से ही प्राप्त हुआ था, इसके माध्यम से कठोर से कठोर हृदय वाले पुरुष स्त्री को पूर्ण रूप से सम्मोहित किया जा सकता है और उसे जीवन भर मनोवांछित कार्य सम्पन्न करवाया जा सकता है।

यद्यपि यह प्रयोग दुर्लभ और गोपनीय है, पर पत्रिका पाठकों के लिए मैं यहां प्रस्तुत कर रहा हूं-

अमावस्या की रात्रि को बगीचे या घर के किसी कोने में बैठ जाय और अपने आसन के नीचे श्मशान से लाकर थोड़ी सी राख रख दें आसन लाल रंग का होना चाहिए फिर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर सामने उसका चित्र रख दें जिसे पूर्ण वशीकरण या सम्मोहन करना है।

इसके बाद उस चित्र के सामने मात्र इक्यावन माला मन्त्र जाप करना है और ऐसा करने पर आश्चर्यजनक रूप से चमत्कार देखने को मिलता है और जो आपका सर्वथा विरोधी होता है, वह भी आपके अनुकूल हो कर आपके कहे अनुसार कार्य सम्पन्न करने लग जाता है।

मन्त्र

ॐ ऐं ऐं अमुक वश्यमानाय मम आज्ञां परिपालय ऐं ऐं फट्।

यह प्रयोग दिखने में अत्यन्त सरल है परन्तु इसका प्रभाव अचूक होता है और तुरन्त ही हम जिसे सम्मोहित करना चाहें उसे अपने वश में करने में समर्थ हो पाते है।

तरफ खड़ा हो गया उसमें से एक सुन्दर स्त्री शायद थोड़ा बहुत हिन्दी जानती थी उसने मुझे आदेश दिया कि मैं स्नान कर लूं और जो सुन्दर वस्त्र पड़े हैं उनको धारण कर लूं।

मैं निरीह भाव से उन पांचों को देखता रहा वे स्त्रियां सुन्दर थी और सभी लगभग बीस बाईस वर्ष की आयु की थी, उनकी आंखों की कामुकता मुझे साफ साफ दिखाई दे रही थी उनके कहने के अनुसार मैंने स्नान किया, एक तरफ सुन्दर वस्त्र पड़े हुए थे उन वस्त्रों को धारण किया और उसके बाद जब मैं इन सब कामों से निवृत्त हुआ तो लगभग रात के तीन बज गये थे।

मेरी आंखों में नींद आ रही थी परन्तु उनकी भावनाएं छेड़खानी करने की थी और वे पांचों मुझ से चुहल कर रही थी छेड़खानी कर रही थी, उत्तेजित कर रही थी और मैं चारों तरफ से घिरा हुआ कुछ भी निश्चय नहीं कर पा रहा था।

कुछ ही समय बाद उसमें से एक स्त्री ने मुझ पर कुछ मन्त्र पढ़ा, यद्यपि मैं थोड़े बहुत तन्त्र का जानकार था परन्तु मुझे ज्ञात नहीं कि उसने किस मन्त्र का उच्चारण किया मैं जरूरत से ज्यादा उत्तेजित हो उठा और उन पांचों स्त्रियों ने उस रात मेरे साथ जो कुछ भी किया उनको लिखते हुए या कहते हुए भी शर्म सी आ रही है।

सुबह रवाना होने से पूर्व उसमें से एक स्त्री ने प्यार से मेरे सिर पर हाथ फेरा और हवा में से कुछ सरसों के दाने निकाले और पढ़ कर मेरे शरीर पर फेंक दिये।

शायद आप विश्वास नहीं करें और यह विश्वास करने लायक बात भी नहीं है परन्तु यह भी सच्ची और सत्य बात है कि उसी क्षण मेरा मानव शरीर एक छोटे से तोते में परिवर्तित हो गया, उस स्त्री ने मुझे उठा कर प्यार से एक लोहे के पींजरे में रख दिया और बाहर से दरवाजा बन्द कर दिया, यही नहीं अपितु उसने



पींजरे के अन्दर ही एक कटोरी चने की दाल भी रख दी और छत पर टांग कर दरवाजे को ताला लगा कर वह[illegible] से चली गई।

मैं अपने आप पर आश्चर्य कर रहा था, मुझे अपने आप पर विचार आ रहा था मेरी बुद्धि और सोचने की शक्ति में किसी प्रकार का कोई अन्तर नहीं आया था परन्तु मेरा शरीर छः फीट का पुरुष आकृति का न हो कर एक छोटे से तोते के रूप में परिवर्तित हो गया था और उस लोहे के पींजरे में कैद चोंच मार मार कर अपने आपको लहू लुहान कर रहा था।

मुझे रह रह कर औघड़ की बातें याद आ रही थी कि यह विद्या बंगाल में आज भी जीवित है और आज भी वे इस विद्या के सहारे किसी पुरुष को बकरा, मेढ़ा या तोता बना कर रख देती है तथा रात को उसे पुरुष बना कर अपना मनोरंजन करती है।

मुझे रह रह कर औघड़ पर गुस्सा आ रहा था कि वह अचानक कहां चला गया कुछ कह कर तो जाता

उससे भी ज्यादा मुझे अपने आप पर क्रोध आ रहा था क्यों मैं इस तरफ आया और क्यों अपने आपको इस मुसीबत में डाला पर अब हो भी क्या सकता था, रात भर मे उन्होंने मेरे साथ जो जो किया था, वह तो मैं ही जानता हूं ।

लगभग रात के तीन या चार बजे होंगे, दरवाजे का ताला खुलता हुआ अनुभव हुआ, थोड़ी देर में वे चारों स्त्रियां अन्दर आ गयी, उनमें से आज एक स्त्री नहीं आई थी, उनमें से एक स्त्री ने मुझे बाहर निकाला और हवा में से सरसों के दाने प्राप्त किये और कुछ मन्त्र बुदबुदा कर मेरी ओर फेंके तो आश्चर्य की बात यह है कि दूसरे ही क्षण मैं अपने असली शरीर में आ गया था, कभी मैं अपने आपको देख रहा था और कभी मैं उस खाली पड़े हुए पिंजरे को देख रहा था जिसमें कुछ क्षण पहले मैं बंद था ।

वे अपने साथ उत्तम भोजन ले कर आई थी उन्होंने

सिद्ध योगीश्वर

मेरे पूर्व जन्म के और इस जन्म के पुण्यों का उदय है कि मैं सिद्धाश्रम तक पहुंच सका हूं, मैंने जीवन में सोचा भी नहीं था, कि मुझे कभी सिद्धाश्रम पहुंचने का अवसर भी प्राप्त हो सकेगा, पर आज इस धरती पर आकर मैं अपने आपको रोमांचित अनुभव कर रहा हूं, यहां का कण-कण पवित्र दिव्य और मनोहारी है, यहां की धरती पर लोटने को जी चाहता है, यहां के एक कण के बदले यदि पूरा जीवन भी न्यौछावर हो जाय तो घाटे की बात नहीं ।

मैं घूमता घामता सिद्ध योगा झील के किनारे पहुंच जाता हूं, इतना स्वच्छ और पारदर्शी जल मैंने अपने जीवन में पहली बार देखा है, मैं देख रहा हूं कि यहां साधु सन्यासी विचरण कर रहे हैं, युवा सन्यासी सन्ध्या वंदन अर्घ्य, जप, तप, ध्यान में लीन है, देवांगनाएं आस-पास विचरण कर रही हैं, और सारा वातावरण मनोहारी मुग्ध और स्वप्निल सा है, तभी मैं सिद्ध योगा झील के किनारे एक स्वच्छ स्फटिक शिला पर बैठे हुए सन्यासी को देखकर पहचान लेता हूं कि यह तो वही सन्यासी है जिन्हें मैंने कनखल में देखा है, गोमुख पर साधनारत पाया है, हहराती नदी में छलांग लगाते हुए देखा है, यहां इनके स्वरूप को देखकर जीवन धन्य हो उठा, इतना दिव्य और तेजस्वी स्वरूप पहली बार देख रहा हूं, यौवन और तपस्या की ज्योत्सना से आपूरित यह शरीर अपने आप में अद्वितीय है ।

देख रहा हूं कि सामने सन्यासी और सन्यासिनियां बैठी हुई हैं, और उस योगी निखिलेश्वरानन्द जी के मुंह से निकले हुए एक एक शब्द को ध्यान से सुन रही है, उनकी वाणी में लोच है, एक एक शब्द में आत्म विश्वास और शब्दों का प्रवाह ऐसा है, कि जी चाहता है, वहीं उसी स्थान पर हजार-हजार वर्षों तक बैठे रहें, वे बोलते रहें, हम सुनते रहें ।

कई-कई विशेषताओं, गुणों और व्यक्तित्वों से सम्पन्न ऐसे योगीराज निखिलेश्वरानन्द जी को मेरा शत् शत् प्रणाम ।

मुझे खाना खिलाया पास में ही गर्म पानी रखने की व्यवस्था थी मुझे स्नान करने के लिए कहा और कपड़े बदल देने की आज्ञा दी।

मैं यन्त्र चालित सा कार्य कर रहा था मुझे ज्ञान नहीं था कि मैं क्या कर रहा हूं बस इतना ही ज्ञान था कि जो कुछ वह कह रही है, वह सब कुछ करने के लिए मैं बाध्य हूं।

वह पूरी रात उन्होंने मेरे साथ बिताई, सुबह जब प्रभात होने को था मैं थक कर पूरी तरह से चूर हो गया था, शरीर में शक्ति का लवलेश भी नहीं रहा था और मुझे इसी प्रकार से वापिस तोता बना कर पींजरे में कैद कर कमरे का ताला लगाकर चली गई।

यह क्रम लगभग महीने तक चला एक दिन जब मैं पूर्ण पुरुष रूप में था तो एक सुन्दरी को मैंने अपनी व्यथा कह सुनाई, शायद उसे मुझ पर दया आ गयी उसने कहा यों तो जब तक तुम्हारे शरीर में ताकत है, तुम्हें यहां से जाने नहीं देंगे परन्तु मैं तेरी व्यथा से भावुक हो उठी हूं मैं तुम्हें एक मन्त्र बता देती हूं जिसकी बदौलत तुम जब दिन में यह तोता बना कर चली जाय तो उस मन्त्र को पढ़ कर वापिस अपने असली स्वरूप में आ जाना और फिर साथ ही साथ में दूसरा मन्त्र भी बता देती हूं जिससे कि रात होते होते तुम चिरकुट कस्बे से लगभग सौ मील दूर जा सको, जिससे कि ये वापिस तुम्हें पकड़ कर न ला सके।

यद्यपि वह ऐसा कहते हुए और करते हुए भयभीत थी, परन्तु उसने मुझे दोनों मन्त्र दिये पहला मन्त्र तो देह रूपान्तर मन्त्र था जिसके द्वारा मानव देह भेड़ा या तोता की देह में रूपान्तरित किया जा सकता है और वापिस उससे मानव देह में बदला जा सकता है तथा दूसरा मन्त्र शीघ्रगामी मन्त्र था जिसके माध्यम से व्यक्ति एक घन्टे में सौ या इससे ज्यादा मील दूरी पार कर सकता है।

दूसरे दिन सुबह जब वे मुझे बन्द करके चली गई मैंने इन दोनों मन्त्रों का प्रयोग कर पहले तो अ आप को तोते की योनि से अपने असली मानव स्वरूप लाया और जोरों से धक्का दे कर बन्द किवाड़ को त दिया।

मैं चारों तरफ संशकित नजर से देख रहा था कोई मुझे देख न ले या पहिचान न ले और ठीक दोप समय जब सभी लोग भोजन आदि से निवृत्त हो कर क्षण विश्राम के लिए उद्यत होंगे तब मैंने दूसरे मन्त्र प्रयोग कर उस चिरकुट कस्बे से बाहर निकल आ और कुछ ही घन्टों में मैं सौ मील से भी ज्यादा पै निकल आया।

और जब मैं काफी दूर निकल आया जहां मुझे उनका भय नहीं रहा था तो आश्चर्य की बात यह सामने ही वही औघड़ कपालनाथ बैठे हुए दिखाई दि एक बार तो मुझे उन पर गुस्सा भी आया परन्तु उन गुस्सा करना व्यर्थ था।

मैं आज भी उस अज्ञात नामा सुन्दरी के प्र कृतज्ञ और ऋणी हूं कि उसने मेरी मदद की उन दो मन्त्रों को सिखाया और वहां से भाग जाने में सहाय की।

इसके बाद मैंने इन प्रयोगों को दिल्ली, बम्बई अ कई स्थानों पर वैज्ञानिकों के सामने प्रदर्शित कर सिद्ध कर चुका हूं कि हमारे तन्त्र आज भी उतने प्रामाणिक और सक्षम है तथा उनके द्वारा देह रूपान्त किया जा सकता है, आज भी जब मैं उन बीते दिनों को याद करता हूं तो मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं।



औघड़ ...औघड़....औघड़....।

हां मैं औघड़ हूं

औघड़ का नाम उच्चारण करते ही आंखों के सामने एक भयानक तस्वीर उभर कर आ जाती है, विकराल रूप अस्त व्यस्त वेशभूषा लम्बी बिखरी उलझी हुई दाढ़ी, बड़ी बड़ी आंखें, हाथ में खप्पर, सारे शरीर पर राख मली हुई, लम्बा चौड़ा डील डौल और मुंह से गालियों की अजस्र वर्षा करने वाला....वास्तव में ही औघड़ तो औघड़ ही होता है, यह न किसी की परवाह करता है और न किसी पर इसे दया आती है, जो कुछ मन में आया, उसे कर गुजरता है, इस बात की भी परवाह नहीं करता कि इसका परिणाम क्या निकलेगा, अपनी ही धुन में मस्त रहने वाले ये औघड़ भारतवर्ष में चारों ओर बिखरे हुए देखने को मिल जायेंगे।

औघड़ सम्प्रदाय अपने आप में अलग सम्प्रदाय है, इनकी साधना पद्धति इनका क्रिया कलाप, इनका आचार विचार और इनका जीवन दर्शन सब कुछ अलग होता है, भगवान शिव के ये उपासक होते हैं परन्तु तन्त्र की इनके पास कुछ विशेष क्रियाएं होती हैं जिनके माध्यम से ये असंभव को संभव कर दिखाते हैं, इनके पास कुछ ऐसी गुप्त विद्याएं होती हैं, जिनका प्रयोग करने पर आसमान भी थर्रा उठता है यदि ये प्रसन्न होते हैं तो सामने वाले को पल में निहाल कर देते हैं और यदि किसी पर क्रोधित हो जाते हैं तो उसका तथा उसके वंश का सत्यानाश करने से भी नहीं चूकते, इसीलिए लोग औघड़ों से यथा संभव दूर ही रहते हैं।

कुछ लोग सट्टा खेलने वाले या जुआ खेलने वाले इनके पास जरूर जाते रहते हैं, और गांजा, सुलफा, चरस आदि देते रहते हैं, कभी कभी ये उस नशे की पीनक में सट्टे का कोई अंक बता देते हैं या लोटरी का कोई नम्बर बता देते हैं और अधिकतर इनकी बात सत्य ही निकलती है।

ऐसे औघड़ गांव या शहर के बाहर जंगल में या अधिकतर श्मशान के किनारे ही रहते हैं, कई बार तो इन्हें मुर्दा जलाने के बाद बचे हुए अंगारों पर रोटी सेंकते हुए और खाते हुए देखा जाता है, कई औघड़ रात को श्मशान में भूत प्रेतों के साथ विचरण करते हुए देखे गये हैं, मैंने अपनी आंखों से औघड़ों को कब्र में से लाश निकाल कर उसकी छाती पर बैठ कर साधना करते देखा है, यह बात तो निश्चय है कि इनकी साधनाएं तीक्ष्ण और भयानक होती हैं तथा प्रत्येक के बस की बात नहीं होती, परन्तु ये साधनाएं अपने आप में महत्वपूर्ण कही जाती हैं।

मुझे बचपन से ही तन्त्र सीखने का शौक था और मैं चाहता था कि इन तन्त्र साधनाओं के माध्यम से उन विशिष्ट तन्त्रों को सीखूं जो अपने आप में महत्वपूर्ण हैं, कठिन हैं और आज के युग में चमत्कार हैं यह बात भी निश्चित है कि आज के युग के लोग चमत्कार को ही नमस्कार करते हैं जब तक आपके पास कोई महान सिद्धि नहीं होती, जब तक आपके पास कोई तीक्ष्ण मारण प्रयोग नहीं होता, जब तक आपके पास में कुछ चमत्कार करके दिखाने की क्रिया नहीं होती तब तक लोग मानते नहीं, और ऐसी साधनाएं औघड़ साधनाओं में ही प्राप्त हो सकती हैं।

औघड़ अपने आप में एक सम्प्रदाय है, और तंत्र की विशिष्ट क्रियाओं के माध्यम से इसका प्रभाव है, कहते है कि जब भगवान शिव सती के वियोग में पागल हो कर इधर उधर विचरण कर रहे थे, और जब किसी भी प्रकार से उनके मन को शान्ति नहीं मिली तो क्रोध से उनका सारा शरीर अंगारे की तरह जलने लगा और उन्होंने भयानक ताण्डव नृत्य प्रारम्भ कर दिया, इस ताण्डव नृत्य से ही औघड़ सम्प्रदाय की उत्पत्ति हुई, भगवान शिव के वीरभद्र, पुष्पदन्त, और औघड़ ये तीन विशिष्ट गण थे और इन तीनों के द्वारा ही तीन विशेष प्रकार के सम्प्रदाय प्रचलित हुए जिनके नाम पर ही ये सम्प्रदाय कहलाते है, इन सब में औघड़ सम्प्रदाय ज्यादा लोकप्रिय हुआ, क्योंकि इसके माध्यम से तंत्र का प्रभाव तुरन्त और अचूक होता है

औघड़ साधना के पांच विशेष नियम होते है (१) वह श्मशान में ही रहता है और वहीं पर मुर्दे की छाती पर बैठ कर साधना सम्पन्न करता है, (२) वह चिता के अंगारों पर ही भोजन पकाता है, और भोजन खाता है (३) उसके संगी साथी भूत प्रेत होते है उनके माध्यम से ही कार्य सम्पन्न करता है, (४) ये साधक भगवान रुद्र को अपना इष्ट मानते है और औघड़नाथ को अपना गुरु मानकर कार्य सम्पन्न करते है, (५) तंत्र की विशिष्ट क्रियाओं में हमेशा रत रहते है, और ऐसी विशिष्ट सिद्धियां प्राप्त कर लेते है जो आज के युग में लगभग असंभव है, या अविश्वसनीय है।

मैं प्रारम्भ से ही तंत्र के प्रति आसक्त था और कुछ तांत्रिकों के पास गया भी, उन्होंने मुझे मारण मोहन वशीकरण आदि क्रियाएं सिखाने की कोशिश की पर इससे मेरा मन नहीं भरा, मैं तो कोई ऐसी साधना करना चाहता था जो अपने आप में अलौकिक हो, मैं दुनियां को दिखा देना चाहता था कि मेरी भी कुछ हस्ती है और मैं भी बहुत कुछ कर के दिखा सकता हूं, मां-बाप मेरे बचपन में ही मर गये थे और बेसहारा जीवन काट कर मैं बड़ा हुआ था, इसलिए मेरे मन में साधना के प्रति खासकर ऐसी विलक्षण साधनाओं के प्रति जरूरत से ज्यादा रुचि थी

श्मशान शान्त प्रयोग

यह श्मशान जागृत करना तो आ जाय और आप उसे जागृत भी कर दे पर यदि उसे समाप्त करने की क्रिया ज्ञात नहीं हो तो बड़ी भारी मुसीबत का सामना करना पड़ सकता है अत: जब साधक को श्मशान जागरण करने की सिद्धि प्राप्त करनी हो तो साथ ही साथ उसे चाहिए कि श्मशान शान्त करने की विधि भी ज्ञात हो।

यह भी तीन दिन का प्रयोग है, त्रयोदसी की रात्रि को श्मशान में जा कर चिता की भस्म अपने शरीर पर लगा ले और सर्वथा न हो कर पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय और फिर भगवान भूतनाथ का नाम उच्चारित कर अपने चारों ओर चिमटे से रक्षात्मक घेरा बना लें।

इसके बाद निम्न मन्त्र को छ: घन्टे तक जपे इसमें किसी भी प्रकार की माला या अन्य उपकरण आदि की जरूरत नहीं होती केवल तीन दिन यह मन्त्र जप करने पर श्मशान शान्ति सिद्धि प्राप्त हो जाती है और फिर वह जब भी चाहे जागृत श्मशान को शान्त कर सकता है, यही नहीं अपितु इस साधना को सिद्ध करने के बाद यदि किसी को भूत प्रेत परेशान कर रहे हो या उपद्रव कर रहे हो तो उसे बांध सकते है, तथा उसका प्रभाव समाप्त कर सकते है।

मन्त्र

ॐ भं भं भूतनाथाय शान्त रूपाये श्मशान
शान्तायं भूतनाथाय नम:

यह तीन दिन का प्रयोग सम्पन्न करने पर उसे यह सिद्धि प्राप्त हो जाती है और इसके द्वारा वह किसी भी प्रकार के उपद्रवी भूत को अपने वश में कर सकता है या जागृत श्मशान को शान्त कर सकता है उसे किसी प्रकार का कोई भय या डर जीवन में व्याप्त नहीं होता।

इसके बाद मेरी कई औघड़ों से भेंट हुई, मेरा अधिकांश समय श्मशान में ही व्यतीत होने लगा और मेरा रहन-सहन औघड़ों की तरह हो गया, कई बार तो मुझे स्नान किये छः छः महीने बीत जाते पर मुझे स्नान का होश ही नहीं रहता और न स्नान करने की इच्छा होती पर इस सम्प्रदाय के कुछ औघड़ों से सम्पर्क स्थापित करने पर और उन लोगों से मिलने पर मैं तन्त्र की छोटी छोटी क्रियाएं अवश्य सीख गया था और छोटे मोटे कार्य मैं कर लेता था, मैं देखता था कि सीधे सादे दिखने वाले इन सन्तों में गजब की ताकत है और वास्तव में ही इनके माध्यम से आकाश को जमीन पर उतारा जा सकता है, हवा को बांधा जा सकता है और मुंह से शब्द उच्चारित होते ही सामने वाले को समाप्त किया जा सकता है।

उन्हीं दिनों मुझे समाचार मिला कि जूनागढ़ में एक औघड़ इन दिनों आया हुआ है जो कि पहले तो मध्य प्रदेश के जंगलों में साधनाएं करता था परन्तु कुछ कारणों से वह जूनागढ़ आया हुआ है और वहीं पर साधना सम्पन्न कर रहा है।

मैं राजस्थान का रहने वाला हूं और गुजरात मेरे प्रान्त के निकट ही है, जूनागढ़ गुजरात का प्रसिद्ध शहर है, और इसके पास ही एक काफी बड़ा श्मशान है, जिसमें योगी यति, सन्यासी विचरण करते ही रहते हैं, जूनागढ़ के पास ही एक बहुत बड़ा पहाड़ है, जिसको सिद्ध पहाड़ कहा जाता है, और कहते हैं कि आज भी वहां पर कई उच्च कोटि के साधु सन्यासी विचरण करते रहते हैं, और यदा-कदा देखने को मिल जाते हैं।

मैंने बस का टिकट कटाया और अहमदाबाद से होता हुआ, जूनागढ़ जा पहुंचा, जूनागढ़ के बाजार में घूमा तो मुझे लगा कि यह आम गुजराती शहर है और प्राचीन तरीके से बसा हुआ है, शहर में मुझे कोई विशेषता नजर नहीं आयी, जूनागढ़ शहर से लगभग पांच सात किलो मीटर दूर प्रसिद्ध पहाड़ है, और इसी के एक किनारे पर वह श्मशान है जिसके बारे में मैंने सुना था कि कोई

श्मशान जागरण प्रयोग

औघड़ साधना के लिए कई बार श्मशान में जाकर श्मशान जागृत करना होता है, जागृत करने पर पूरा श्मशान जाग जाता है, और जितने भी भूत प्रेत होते हैं वे चारों तरफ से आ-आ कर एकत्र होते रहते हैं, और भयानक दृश्य उपस्थित करते हुए, नृत्य करते रहते हैं।

यह गोपनीय प्रयोग है पर फिर भी जो इस साधना में विशेष सफलता प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें श्मशान सिद्धि तो प्राप्त करनी ही पड़ती है।

नीचे मैं उस औघड़ के बताये हुए, विशिष्ट प्रयोग को बता रहा हूं जिससे कुछ ही क्षणों में पूरा श्मशान जागृत हो जाता है और जागृत हो जाने के बाद किसी भी भूत को कोई भी कार्य दें तो वह तुरन्त सम्पन्न कर लेता है।

यह प्रयोग कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से अमावस्या अर्थात् तीन दिन करना चाहिए, आधी रात को श्मशान के मध्य में पश्चिम दिशा कि ओर मुंह कर बैठ जाय अपने चारों ओर लोहे के चिमटे से भगवान रुद्र का नाम ले कर रक्षात्मक घेरा बना दें और फिर निम्न मन्त्र का बराबर उच्चारण करता रहे कुछ ही क्षणों में श्मशान जागृत हो जाता है और जागृत श्मशान को देखने का तो अपना ही एक आनन्द है।

श्मशान जागरण मन्त्र

क्रीं क्रीं कालिके भूतनाथाय रौद्र रूपायै भूत प्रेत पिशाच जाग्रय श्मशान उत्थापय क्रीं क्रीं कालिके फट्।

वास्तव में ही यह थोड़ा तीक्ष्ण प्रयोग है पर जिन साधकों में हौसला हिम्मत हो उन्हें यह प्रयोग अवश्य सम्पन्न करना चाहिए।

औघड़ आया हुआ है और साधना सम्पन्न कर रहा है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि तन्त्र साधना अपने आप को मिटा करके ही प्राप्त की जा सकती है, यदि आप में त्याग करने की प्रवृत्ति है यदि अपने आपको विसर्जित करने की भावना आप में है, यदि आप अपने जीवन को दाव पर लगाने की हिम्मत रखते हैं, तो अवश्य ही साधना के क्षेत्र में उतर सकते हैं, और जो अपने जीवन को पूरी तरह से भुलाने की हिम्मत रखता है, जो अपने आप को मटिया मेट कर देने की क्षमता रखता है, वही तन्त्र के क्षेत्र में बहुत कुछ प्राप्त करने की क्षमता रखता है।

मैं घूमता घामता पहाड़ के आस पास जा पहुंचा और पहले तो पहाड़ की चोटी की ओर बढ़ा, चोटी पर पहुंचने के लिए ठेठ तक सीढ़ियां बनी हुई हैं और सबसे ऊपर जगदम्बा की मूर्ति स्थापित है, चढ़ाई अत्यन्त कठिन और मुश्किल है परन्तु मैंने निश्चय किया कि भगवान शिव की आराधना करने और उनका वरदान प्राप्त करने के लिए यह जरूरी है कि मैं भगवती जगदम्बा के दर्शन करूं।



जब तक मैं पहाड़ से नीचे उतरा तब तक लगभग सांझ हो गई थी मैं भूख से थका हुआ था पहाड़ के नीचे दुकान थी और मैं दुकान के सामने ही खड़ा हो गया, मेरा शरीर और डील डौल देख कर दुकानदार कांप सा गया, लम्बी लम्बी जटाएं, बड़ी बड़ी आंखें और सारे शरीर पर मली राख ने उसे आश्वस्त किया कि मैं कोई पहुंचा हुआ साधु हूं उसने मुझे दुकान के किनारे पर बैठने के लिए कहा और पास से ही कुछ पूड़ियां, मिठाई और सब्जी खरीद कर ले आया मेरे सामने रख दी।

मैंने बिना इधर उधर देखे डट कर भोजन किया फिर वहां से उठ कर बिना उसको कुछ कहे श्मशान की ओर बढ़ गया, मुझे श्मशान से किसी प्रकार का भय अब नहीं रहा था क्योंकि मेरा अधिकांश समय श्मशान में ही व्यतीत हुआ है, और छोटी मोटी साधनाएं सम्पन्न करने से श्मशान से एक प्रकार का लगाव सा हो गया है, अब तो यदि हकीकत में कहा जाय तो शहर या गांव में आराम ही नहीं मिलता, श्मशान में आराम से लम्बी तान कर सो जाता हूं और एक दो मिनट में ही खर्राटे भरने लग जाता हूं।

मैं जब उस विशाल श्मशान में गया तो रात घिर आई थी, मगर अभी तक रोशनी समाप्त नहीं हुई थी मैंने इधर उधर चक्कर लगाया तो मुझे वहां कोई औघड़ नजर नहीं आया, मैंने श्मशान में रहने वाले डोम से इस संबंध में पूछा तो उसने जवाब दिया कि पिछले महीने से एक भयानक अघोरी अवश्य इस तरफ आया हुआ है, पर कभी तो पांच सात दिन श्मशान में ही रह जाता है और कभी गायब हो जाता है तो पता ही नहीं चलता कि कहां गया है उसके आने का और जाने का कोई निश्चय ठौर ठिकाना नहीं है इसके अलावा उसमें क्रोध की मात्रा जरूरत से ज्यादा है और आवेश में वह कुछ भी कर बैठता है, उसने अपनी घटना सुनाते हुए कहा कि मैंने एक दिन उसके चिता ठण्डी होने तक उस जगे

के लिए कहा तो उसने चिमटे से मेरी पीठ पर अचानक वार कर दिया जिसका निशान अभी तक मेरी पीठ पर विद्यमान है।

फिर मुझे समझाते हुए कहा यदि तुम उस औघड़ से मिलने के लिए आये हो तो अवश्य तुम गलती कर रहे हो वह तो अपनी ही धुन का मस्त मौला व्यक्ति है और सारे शरीर में गुस्सा भरा हुआ है, किस समय वह क्या कर दे इसका कुछ पता नहीं है, ऐसा औघड़ लाभ तो कम करता है, पर हानि ज्यादा पहुंचा देता है।

मैंने उस डोम की बात सुनी अनसुनी कर दी और श्मशान के एक किनारे पर ही चादर तान कर लेट गया, दिन भर का तो थका-मांदा था ही, लेटते ही मुझे नींद आ गई।

सुबह मैं कितनी देर तक लेटा रहा, मुझे कुछ पता नहीं चला तभी मेरी पसलियों में जोर से ठोकर लगी मैं भक-चका कर उठ खड़ा हुआ, देखा तो सामने एक विशाल काय शरीर लम्बा चौड़ा डील डौल सारे शरीर पर राख मली हुई, लगभग नंगा सा एक औघड़ खड़ा

भूतों को वश में करने का प्रयोग

औघड़ सम्प्रदाय का आधार ही भूतों के बीच रहना और उनसे मनोवांछित कार्य सम्पन्न करना है, यों तो भूत साधना करने के कई प्रयोग हैं पर यह प्रयोग अपने आप में तुरन्त सिद्धिदायक है और इससे कई भूत जीवन भर नौकर की तरह उसके पास बने रहते है और वह जो भी आज्ञा देता है, उसका पालन करते रहते हैं भूतों से घर का काम करवाना, पैरों की मालिश करवाना खेतों में काम करवाना और ढोर चराना, मन चाही वस्तु प्राप्त करना, दूर बैठे हुए व्यक्ति को संदेश भेजना आदि सभी कार्य इसके द्वारा सिद्ध किये जा सकते है यह प्रयोग मैंने कई लोगों को कराया है और पहली ही बार में इससे सफलता मिल गई है।

अमावस्या की रात्रि को ताजे मुर्दे की भस्म बिछा कर उसके ऊपर पालथी मार कर बैठ जाय और अपने चारों ओर चिमटे से घेरा बना ले फिर भगवान रुद्र की मन ही मन पूजा कर निम्न मन्त्र को छः घन्टे तक बराबर जपता रहे तो श्मशान में उपस्थित भूतों में से लगभग पांच छः भूत पूर्णतः उसके वश में हो जाते है और उसका मन चाहा कार्य सम्पन्न करते रहते है।

मन्त्र

ॐ रुद्र भूतनाथाय षटभूत वश कुरु कुरु आज्ञा पालय पालय रुद्राय हुं हुं फट्।

मन्त्र जपते समय कई प्रकार के उपद्रव और विचित्र दृश्य देखने को मिल सकते है, पर इससे घबराने की जरूरत नहीं है छः घन्टे के बाद अवश्य ही छः भूत सिद्ध हो जाते है और वे जीवन भर साधक के वश में बने रहते है, यह प्रयोग मेरा आजमाया हुआ है केवल एक दिन का प्रयोग है और निश्चित ही सिद्ध होता है।

था जिसकी आँखें रात भर चरस या सुल्फा पीने से लाल सुर्ख हो रही थी, आँखों से जैसे अंगारे बरस रहे थे, उसकी ठोकर का प्रहार ही इतना जबरदस्त था कि मैं एक बारगी ही कांप कर रह गया, मैं एक दम से उठ खड़ा हुआ, मैंने अनुमान लगा लिया कि यह वही औघड़ होना चाहिए जिसकी चर्चा मैंने सुन रखी थी और कहते है कि इसे काफी कुछ सिद्धियां प्राप्त है।



मुझे देखते ही वह त्यौरी चढ़ा कर गुस्से से आग उगलता हुआ बोला साले कुत्ते, हरामी, यहाँ आकर भगवान शिव के मन्दिर में तुझे लेटने की हिम्मत कैसे हुई, यह तेरे बाप का घर है, बिना पूछे तू यहां आया ही कैसे, यहाँ पर मेरा राज्य है और मैं इसका मालिक हूं.......और कहते कहते पन्द्रह बीस गालियां उसके मुंह से निकल गई।

मैं तो अभी तक कुछ कह भी नहीं पाया था कि इससे पहले ही गुस्से से वह दहकने लगा था, मैं कुछ निवेदन करने जा ही रहा था कि उसने अपने हाथ में पड़ा चिमटा उठाया और जोरों से मुझे पीटने के लिए मेरे पीछे लपक पड़ा।

ऐसे समय भागने से कोई लाभ नहीं होता, इसके बजाय अपने आपको पूरी तरह से आत्मसमर्पित कर देना ज्यादा बुद्धिमानी होती है, मैं उसके चरणों में गिर पड़ा और कस कर उसके दोनों पांव पकड़ लिये, मैंने कहा आप चाहे मुझे मारिये, चाहे बचाइये, मैं तो आपसे ही मिलने के लिए आया हूं, और आपका ही एक गण हूं, आप ही मेरी रक्षा करें।

मुझे इस प्रकार अपने चरणों में पड़ा देखकर उसे थोड़ी दया आई और चिमटे को एक ओर फेंक कर मेरे बालों को पकड़ कर झटके के साथ मुझे खड़ा किया पूछा तू यहां किस को पूछ कर आया है, किसने तुझे यहां भेजा है, यहां तू क्या करने आया है, यह भगवान शिव का लीला-स्थल है, यहां भगवान शिव रोज रात को भूत-प्रेतो के साथ नृत्य करते है तुझे आने के लिए किसने कहा।

अब तक मैं संभल चुका था और अपने पैरों पर हाथ जोड़ कर खड़ा हो चुका था, मैंने निवेदन किया मैं बचपन से ही औघड़ हूं और अधिकतर समय श्मशान में ही पड़ा रहता हूं, आप जैसे गुरुओं की खोज में मैं भटक रहा था जब मुझे आपके बारे में पता चला तो मैं यहां आपके दर्शन के लिए आ गया। मेरी इच्छा है कि मैं आपकी सेवा करूं और बदले में आप जो कुछ भी मुझे सिखाना चाहे तो यह मेरे ऊपर आपकी बड़ी कृपा होगी।

मेरी वेष भूषा और मेरे शब्दों का शायद उस पर असर पड़ा और उसका गुस्सा थोड़ा शान्त हुआ, बोला चल मेरे साथ, यदि तुझे कुछ सीखना है तो फिर चेले की तरह काम कर, गुरु से पहले उठने की कोशिश कर और गुरु के सोने के बाद सोने का ध्यान कर, अन्यथा मैं तुझे मार कर यहीं भगवान रुद्र को भोग लगा दूंगा, और ऐसा कहते कहते चिमटा उठा कर वह एक ओर को चल पड़ा।

मैं भी उसके पीछे पीछे चल पड़ा, वास्तव में ही जूनागढ़ का श्मशान बहुत बड़ा है, काफी दूर चलने के बाद

एक बड़ का पेड़ श्मशान के किनारे ही है वहीं पर वह जाकर बैठ गया, मैंने देखा कि चारों तरफ पन्द्रह बीस नर मुण्ड बिखरे हुए हैं, कुछ शराब की बोतलें भी इधर उधर बिखरी हुई है और मांस के टुकड़ों पर कुत्ते खींच-खसोट कर रहे थे, मगर अघोरी इन सब के प्रति निश्चेष्ट और निश्चिन्त था, वह बरगद की उभरी हुई जटाओं पर एक तरफ बैठ गया और मेरे बारे में पूछने लगा, मैंने अपनी बात कह सुनाई, उसने कहा तुम दिन भर यहीं रहोगे, हिलोगे डुलोगे नहीं, इधर उधर भटकोगे नहीं, मैं शाम को यहीं पर तुम से मिलूंगा और ऐसा कहते कहते वह जंगल की ओर निकल गया

मैं दिन भर वहां बैठा रहा मुझे तो उनकी आज्ञा का

पुरुष को स्त्री में परिवर्तित करने का प्रयोग

जिस अघोरी के पास मैं रहा था यह उनकी बहुत बड़ी कृपा है कि उन्होंने इस अद्भुत चमत्कारिक प्रयोग को भी मुझे पूरी तरह से सिखा दिया था और मैं पाठकों के हित के लिए इस प्रयोग को भी गोपनीय नहीं रखना चाहता।

यह १८ दिन का प्रयोग है अमावस्या से इस साधना का प्रारम्भ करना चाहिए, श्मशान में ठीक आधी रात को किसी मुर्दे को कब्र से निकाल कर उसके सीने पर बैठ कर पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर रुद्राक्ष माला से निम्न मंत्र की ५१ माला मंत्र जप करना चाहिए।

मंत्र जप से पूर्व मुर्दे को पानी से नहला कर पवित्र करना चाहिए और स्वयं के शरीर पर ताजे मुर्दे की भस्म को लगा लेना चाहिए मन में किसी प्रकार की घबराहट न रखे और अविचलित भाव से बराबर मंत्र जप करता रहे, मंत्र जप करते समय कई प्रकार के दृश्य या बिम्ब दिखाई दे सकते है पर इससे न तो घबराना चाहिए और न विचलित होना चाहिए, साधना करते समय अपने साथ गुरु के अलावा और किसी को ले जाना वर्जित है।

मन्त्र

ॐ क्रां क्रां क्रां क्रीं क्रीं क्रीं देह परिवर्तनाय क्रौं क्रौं क्रौं हुं हुं फट्।

इस प्रकार १८ दिन इसका नियमित रूप से जपने पर यह साधना सिद्ध हो जाती है, इसके लिए अन्य किसी भी प्रकार के उपकरण आदि की जरूरत नहीं होती और पहली बार में ही साधना सिद्ध हो जाती है।

जब इसका प्रयोग करना हो तो इस मंत्र को एक या दो बार उच्चारण कर सामने वाले पर जोरों से थूक दे तो सामने वाला यदि पुरुष होता है तो वह तुरन्त स्त्री हो जाता है और यदि वह कोई स्त्री होती है तो तुरन्त पुरुष रूप में बदल जाती है।

यह प्रयोग मेरा आजमाया हुआ है और सैकड़ों बार मैंने इस प्रयोग को सिद्ध किया है, उस अघोड़ का ही यह प्रसाद स्वरूप प्रयोग मुझे प्राप्त हुआ है जो कि वास्तव में ही एक लोप होती हुई चमत्कारिक विद्या और प्रयोग है।

पालन करना ही था, जब लगभग रात होने को आई तो वह लौट आया, इस बीच श्मशान में कई लोग अपने संबंधियों को जलाने के लिए आये थे और जगह जगह चिताएं जल रही थीं, मैं निर्लिप्त भाव से उन जलती हुई चिताओं को देख रहा था, सोच रहा था मनुष्य का जीवन क्षण भंगुर है, और आखिर मनुष्य को इसी रास्ते से जाना होता है।

जब औघड़ वापिस लौटा और मुझे वहीं बैठे हुए देखा तो थोड़ा प्रसन्न हुआ बोला तुझे कुछ भूख लगी है तो कुछ पका कर खा ले, मुझे भी लगी है और ऐसा कहते कहते वह मुझे लेकर एक चिता के पास ले गया, चिता आधी से ज्यादा जल चुकी थी और संबंधी अपने घरों को लौट चुके थे, उसने एक मुर्दे की खोपड़ी ली जो बरगद के नीचे पड़ी हुई थी उसमें पानी डाल कर चिता पर रख दिया और उसमें कहीं से चावल ला कर डाल दिये, थोड़ी देर में चावल पक गये तो उसने एक दूसरी खोपड़ी में आधे चावल डाल कर मुझे खाने के लिए दे दिये और बाकी उस खोपड़ी में ही उसने चावल खा कर उसी में पानी भर कर पिया और डकार ले कर वापिस बरगद के पेड़ के नीचे आकर बैठ गया।

अब तक रात्रि के लगभग दस बज गये थे, उसने मुझे अपने पास बैठने के लिए कहा और मैंने देखा कि उसने हम दोनों के चारों ओर एक चिमटे से घेरा बनाया है और फिर वह कुछ मन्त्र बुदबुदाने लगा मैंने अनुमान लगाया कि यह श्मशान जगाने का मन्त्र है लगभग पांच सात मिनट बीते होंगे, कि श्मशान के चारों ओर से भूत-प्रेतों के ठट्ट के ठट्ट आते हुए दिखाई दिये चारों तरफ से ही हल्ला करते हुए भूत-प्रेत, पिशाच, राक्षस आ रहे थे और मैंने देखा कि कई भूत प्रेत नौकर की तरह उस औघड़ से व्यवहार कर रहे थे शायद इनमें से अधिकांश भूत औघड़ ने सिद्ध कर रखे हों, मुझे कोई विशेष डर नहीं लगा क्योंकि इससे पहले मैं श्मशान जागरण क्रिया और भूतों को सिद्ध करने की क्रिया सीख चुका था।

थोड़ी ही देर के बाद औघड़ ने मुझे उस घेरे में ही बैठने के लिए कह कर खुद घेरे से बाहर कूद गया और उन भूत प्रेतों के साथ नृत्य किया करने लगा, ऐसा लग रहा था कि वे कोई विशेष तांत्रिक क्रिया सम्पन्न कर रहे हों, यह मेरे लिए सर्वथा आश्चर्यचकित था, भूतों के साथ मानव कोई साधना सिद्ध करे, यह एक अनोखी बात थी पर मैं पहली बार देख रहा था।

इस प्रकार पूरी रात बीत गई, सुबह लगभग चार बजे वह वापिस अपने घेरे में आ गया और मन्त्र पढ़ कर श्मशान को शान्त कर दिया, थोड़ी देर में चारों ओर शान्ति सी हो गई वहां पर भूत प्रेतों का कोई अस्तित्व बाकी नहीं बचा था।

जब वहां से उठकर बरगद के पेड़ की ओर हम बढ़ रहे थे तो औघड़ ने कहा ये सभी मेरे औघड़ भाई बहिन हैं और इनमें से कुछ तो बहुत ही उच्च कोटि के साधक हैं इनमें से कुछ को मैं औघड़ साधनाएं सिखा रहा था और एक दो से सीख रहा था।

वास्तव में ही यह औघड़ साधनाएं तो अत्यन्त विलक्षण और तेजस्वी दिखाई देती हैं, अधिकांश साधक या औघड़ खींचे गये घेरे से बाहर निकलने की हिम्मत नहीं करते जब कि यह तो उन भूतों के साथ ही उठ बैठ रहा था, नाच रहा था, शराब में स्नान कर रहा था और मन्त्र पढ़ता हुआ, कुछ विशेष क्रियाएं सम्पन्न कर रहा था, मैंने मन में सोचा कि यह कोई साधारण औघड़ नहीं है बहुत ही पहुंचा हुआ है और कुछ ऐसी साधनाएं सम्पन्न करने की कोशिश कर रहा है जो अब तक अज्ञात हैं, अन्तरिक्ष से या शून्य से इन प्राचीन औघड़ आत्माओं को मन्त्रों के बल से इसने यहां एकत्र किया होगा और उनको साधनाएं सिखा रहा होगा या उनसे साधनाएं सीख रहा होगा, दोनों ही स्थितियों में यह औघड़ अद्वितीय है और वास्तव में ही इसके पास उच्चकोटि की साधनाएं होना संभव है।

पर दूसरे ही दिन एक अजीब घटना घट गई, जिसे मैं भुलाना चाहते हुए भी नहीं भुला पा रहा हूं, गुलाब

के ही सेठ हरीभाई जीवाजी भाई पटेल अत्यन्त ही धना-ढ्य व्यक्ति है और-पूरा गुजरात उन्हें जानता है पर उन्हें जुआ खेलने का और सट्टा लगाने का दुर्व्यसन था जिसकी वजह से वह ऐसे साधु फकीरों के चक्कर में लगा रहता था, उसके एक ही लड़का था जिसका नाम हरीभाई था, इकलौता लड़का होने के कारण वह लाड प्यार में पला हुआ था इसके अलावा सेठ जी के कोई सन्तान नहीं थी।

पहाड़ के पास में सेठजी ने मेरे बारे में उस दुकान-दार से सुना होगा और मुझे खोजते हुए संयोगवश उस दिन श्मशान में आ गया दिन लगभग ग्यारह बजे थे और मैं और औघड़ दोनों बरगद के नीचे पसरे हुए बैठे थे, औघड़ कुछ थक गया था तभी सेठजी और उसके पुत्र ने आकर प्रणाम किया वह अपने साथ कुछ मिठाई और कुछ फल भी लाये थे, जो कि सामने रख दिये, फिर बोला मैं अमुक सेठ हूं और मेरा नाम पूरे गुजरात में मशहूर है।

सुनते ही औघड़ उठ खड़ा हुआ और बाप बेटे दोनों को घूरने लगा, एक दो मिनट तक तो बाप बेटे को घूरता रहा और फिर कहा चला जा यहां से साले, हरामी, कुत्ते ....रुपयों के लालच में यहां आया है।

औघड़ सिद्धि

औघड़ साधना के लिए पहले औघड़ सिद्धि प्राप्त करनी जरूरी होती है यह प्रयोग-गोपनीय प्रयोग उस औघड़ से ही मुझे प्राप्त हुआ था उसने बताया था कि लोग औघड़ साधना करते है और सफलता प्राप्त नहीं कर पाते इसका कारण औघड़ सिद्धि प्राप्त करना नहीं होता है, जब तक साधक इस औघड़ सिद्धि को प्राप्त नहीं करता तब तक औघड़ साधनाओं में से किसी भी साधना में सिद्धि नहीं मिलती।

इसका प्रयोग बताते हुए, उसने बताया था कि अमावस्या की रात्रि को किसी ताजे मुर्दे की भस्म ला कर उसका शिवलिंग बनावे और अपने सामने उसको स्थापित कर दें, फिर पश्चिम की ओर मुंह कर अपने सामने वह शिवलिंग रख कर उसे रौद्र रूप से स्मरण करते हुए, लगभग छः घन्टे निम्न मन्त्र जप करें, ऐसा करने पर औघड़ सिद्धि प्राप्त हो जाती है और उसे कई सिद्धियां तो स्वतः प्राप्त होने लग जाती है, इस औघड़ सिद्धि को सिद्ध करने के बाद कोई भी औघड़ साधना की जाय तो उसे सफलता मिलती ही है।

मन्त्र

ॐ वीर भूतनाथाय औघड़ महेश्वराय रक्ष रक्ष हुं हुं फट्।

यह प्रयोग केवल वर्ष में एक दिन अमावस्या की रात्रि को ही करना चाहिए इससे औघड़ का शरीर सुरक्षित रहता है उस पर किसी तांत्रिक क्रिया का असर नहीं होता, और उसके शरीर में अतुलनीय बल साहस और पराक्रम आ जाता है, इसके अलावा उसे छोटी मोटी कई सिद्धियां स्वतः प्राप्त हो जाती है।

सेठजी ठूंठ की तरह खड़े रहे बोले मैं तो इनके साथ आया हूं आपको कौन पूछ रहा है और उसने मेरी ओर संकेत कर दिया, ऐसा लग रहा था कि वह शायद मुझ से ही मिलने के लिए आया था, क्योंकि दुकानदार से उसने मेरी ही उम्र कद काठी लम्बाई चौड़ाई के बारे में जानकारी प्राप्त की होगी।

सुनते ही औघड़ बिफर गया और चिमटा उठा कर सेठजी की पीठ पर दे मारा कहा साले जब तुझे कह दिया कि यहां से चला जा फिर यहां तेरे बाप का राज है जिसकी वजह से यहां अकड़ कर खड़ा हुआ है।

सेठजी के बेटे को गुस्सा आ गया और उसने चिमटा अपने दोनों हाथों से पकड़ लिया, औघड़ के लिए तो यह अप्रत्याशित था कि कोई उसे चेलेन्ज कर दे, उसने जोरों से चिमटे को खींचा और दो तीन चिमटे उस सेठ पुत्र की पीठ पर दे मारे, बोले साले मैं तुझे मजा चखाता हूं, जा तू अभी औरत बन जा हीजड़े कहीं के।

बाप बेटे दोनों घबरा गये क्योंकि दूसरे ही क्षण बेटे की शक्ल में बदलाव आना शुरु हो गया था, उसका चेहरा औरत की तरह बनने लग गया था और पांच मिनट के अन्दर अन्दर वह सेठ पुत्र पूरी तरह से औरत बन चुका था, इतना होने पर भी औघड़ का गुस्सा शान्त नहीं हुआ था और उसने सेठ पुत्र के गले को पकड़ कर उसके सारे शरीर के कपड़े उतार कर फेंक दिये।

मैं दंग था वास्तव में ही आधा घन्टा पहले जो भर-पूर हट्टा कट्टा जवान युवक था, वह बिल्कुल दुबली सी औरत बन कर रह गया था, दाढ़ी मूंछ साफ हो गयी थी वक्षस्थल पूरी तरह से उभर आया था और किसी भी दृष्टि से स्त्री होने में कोई शक शुबह नहीं रहा था।

बाप ने अपने नग्न बेटे को औरत के रूप में देखा तो आधा बेहोश सा हो कर औघड़ के चरणों में गिर पड़ा उसने कहा मुझ से गलती हो गई मुझे मालूम नहीं था, इतना बड़ा अनर्थ हो जायेगा यह मेरा इकलौता पुत्र है, इसके अलावा मेरे और कोई संतान नहीं है, और सेठ जोर जोर से रोने लगा।

औघड़ ने कहा साले तुझे पहले ही कहा था पर तू अपने धन के नशे में चूर था अब जा जाओ तेरा यह बेटा एक महीने भर तक ऐसे ही जूनागढ़ में घूमेगा, एक महीने भर बाद आ जाना मैं इसे वापिस पुरुष बना दूंगा पर तब तक तू जितने भी डाक्टर वैद्य, हकीम हों उन सब से ईलाज करवा लेना, मेरे अलावा इसको कोई ठीक नहीं कर सकता और कहते कहते उसने हाथ में चिमटा उठा लिया।

पिता पुत्र दोनों आगे बोलने की कोई गुंजाईश नहीं थी, पर मैं इस पूरी घटना को देखकर आश्चर्यचकित था कुछ ही मिनटों में औघड़ ने उस सेठ पुत्र को पूरी तरह औरत बना दिया था।

बाद में जब औघड़ का क्रोध कुछ शान्त हुआ तो मैंने उनसे निवेदन किया यह सेठ का इकलौता बेटा है, आप उसे वापिस ठीक कर दें अन्यथा उसके घर का दीपक बुझ जायेगा, औघड़ ने कहा ज्यादा चापलूसी मत कर, एक महीने भर तक तो उस सेठ को भटकने ही दे तभी साले को पता चलेगा कि औघड़ से टकराने का क्या हश्र होता है।

बाद में मुझे औघड़ से कई साधनाएं सिखाई, वास्तव में ही उसका दिल बहुत ही कोमल और भावुक था कुछ ऐसी उच्चकोटि की क्रियाएं और विद्याएं भी मुझे सिखाई जो कि अन्य कहीं से भी प्राप्त होनी कठिन थी मुझे यह भी स्मरण है कि महीने भर बाद सेठ अपने उस औरत बनी हुई बेटे को ले कर अपने परिवार के साथ और गुजरात के आठ दस महत्वपूर्ण व्यक्तियों को ले कर औघड़ के चरणों में आया था और सभी ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि आप कृपा कर इसे वापिस पुरुष बना दें और मेरे देखते देखते ही औघड़ ने कुछ मन्त्र पढ़ा और सेठ पुत्र के चेहरे पर थूक दिया, दूसरे ही क्षण सेठ पुत्र अपनी पूर्व अवस्था में आ गया था, इसके कई जूनागढ़ के प्रतिष्ठित व्यक्ति साक्षी है, और वह सेठ पुत्र हरीभाई आज भी जीवित है। ❀

अल्हड़ भैरवी के सात चमत्कार, सात साधनाएं



तन्त्र में प्रत्येक साधक को "भैरव और प्रत्येक साधिका को भैरवी" कहा जाता है, मगर समय समय पर पुरुषों की अपेक्षा तन्त्र के क्षेत्र में साधिकाओं ने कुछ ऐसे गजब ढाये हैं, कुछ ऐसी साधनाएं सिद्ध की हैं कि उन्हें देखकर दांतों तले उंगली दबानी पड़ जाती है, अल्हड़ भैरवी भी ऐसी ही एक तांत्रिक साधिका थी।

जब मैं तन्त्र के क्षेत्र में काफी कुछ साधनाएं सीख चुका था, और वाममार्गी साधना सम्पन्न करने के बाद श्यामा साधना को पार कर औघड़ साधनाओं में प्रवेश पा चुका था; उस समय मैं नेपाल के दक्षिणी भाग में दक्षिण काली मन्दिर के पास ही एक खण्डहर में रहता था एक तांत्रिक होने के नाते न तो मैं अपने पास किसी प्रकार की कोई सामग्री रखता था और न किसी प्रकार की आवश्यकता ही अनुभव करता था मेरे पास तीन चार शिष्य भैरव और तीन चार शिष्याएं भैरवी थीं, जो साधना के क्षेत्र में बराबर आगे की ओर बढ़ रही थीं।

यह स्थान नेपाल का पूर्णतः तांत्रिक स्थान कहा जाता है, यहां के कण कण में तन्त्र बिखरा हुआ है और उच्चकोटि के तांत्रिक यहीं आ कर तांत्रिक साधनाएं सम्पन्न करते हैं, वामलोचा, औघड़नाथ, त्रिनयन भैरव आदि उच्च कोटि के तांत्रिक मुझे यहीं पर विचरण करते हुए और साधना करते हुए मिले थे, तन्त्र के क्षेत्र में अद्वितीय मां योग माया को मैंने यहीं पर देखा था, और यह मेरा सौभाग्य था कि मैंने तीन दिन तक उनके पास रह कर तांत्रिक साधना सम्पन्न की थी, श्यामा साधना उन्होंने ही मुझे सिखाई थी और इसमें मुझे दीक्षा प्रदान की थी।

भारत में हिमालय, गोरखपुर, मध्य प्रदेश के जंगल बंगाल का कामाख्या मन्दिर और आसाम का कामरूप क्षेत्र जहां मेरे प्रिय क्षेत्र हैं वहीं पर नेपाल में पशुपतिनाथ का मन्दिर और दक्षिण काली का क्षेत्र मेरे लिए अत्यन्त सम्माननीय रहा है, यहां पर विचरण करते हुए मुझे कई उच्च कोटि के साधक योगी यति सन्यासी, भैरव साधक साधिकाएं मिल जाती हैं और जिनके द्वारा मुझे काफी कुछ सीखने का अवसर मिला है।

अब तक तन्त्र के क्षेत्र में मेरा नाम बहुत काफी आगे बढ़ गया था और उच्चकोटि के तांत्रिक भी मुझ से मिलने और सीखने का अवसर पाने की इन्तजार करते थे इस बीच में वायुगमन विद्या और सुगन्ध विद्या की साधनाएं भी सिद्ध कर चुका था, और इससे भी बड़ी बात यह है कि जब से मुझे स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी का तांत्रिक शिष्य बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है तब से मेरा सम्मान तन्त्र के क्षेत्र में हजार गुना बढ़ गया है, इनका शिष्य होना ही अपने आप में गौरव है, और बड़ी कठिनाई से पूरी परीक्षा लेने के बाद ही ये किसी को अपना शिष्य बनाते हैं, जब उन्होंने मुझे दीक्षा दी तो मैं उस समय संसार का सबसे अधिक सौभाग्यशाली अनुभव कर रहा था, यही नहीं अपितु मेरे से पहले जो इस क्षेत्र में थे, वे भी मुझ से ईर्ष्या करने लगे थे कि मुझे ऐसा गौरव प्राप्त हुआ है।

खैर, उस दिन मैं दक्षिणकाली के दर्शन कर वापिस

आश्रम की ओर लौट रहा था प्रातः लगभग नौ दस बजे थे, सूर्य आकाश में काफी ऊंचा चढ़ गया था, गुलाबी सर्दी थी, और वातावरण अत्यन्त सम्मोहक सा था, तभी मुझे एक अत्यन्त ही सुन्दर तेजस्वी तरुणी मेरे सामने खड़ी हुई दिखाई दी, भगवे वस्त्र पहने हुए, नीचे का परिधान मात्र घुटनों को छूता हुआ, लम्बे और बिखरे हुए बाल सुन्दर आकर्षक तेजस्वी आंखें, चेहरे पर एक अजीब सा सम्मोहन कि जिसे देखते ही आदमी ठगा सा रह जाय एक हल्की सी मुस्कराहट और सारा शरीर सांचे में ढला हुआ....ऐसा लगा कि जैसे विधाता ने अभी अभी कोई

वीर साधना

यह साधना अत्यन्त कठिन और तीक्ष्ण है, मेरी राय में बिना किसी उच्च गुरु के सानिध्य यह साधना सम्पन्न नहीं करनी चाहिए, इस साधना के माध्यम से वीर वेताल स्वयं सिद्ध हो जाता है और वह अकेला ही हजार भूतों के समतुल्य होता है, उसके माध्यम से असंभव कार्य भी सम्भव किये जा सकते है।

यह २१ दिन की साधना है, अमावस्या की रात्रि को श्मशान में जा कर ठीक अर्द्ध रात्रि के समय कब्र में से एक ताजा मुर्दा निकाले और उसे स्नान करावे फिर उसका सिर दक्षिण की ओर तथा पैर पश्चिम की ओर रख कर लेटा दें और सीने पर श्मशान की राख को पानी में घोल कर स्याही बना कर उसमें "क्रीं फट्" शब्द लिखे और फिर सीने पर ही पालथी मार कर स्वयं के सिन्दूर का तिलक करें और उस मुर्दे के भी ललाट पर सिन्दूर का तिलक करें फिर उसका पूजन करें और प्राण चेतना क्रिया सम्पन्न करें।

इसके बाद उस मुर्दे को वीर वेताल अभीषेक मन्त्र आपूरित करें और सर्प अस्थियों की माला से उसके सीने पर ही बैठे बैठे एक सौ एक निम्न मंत्र जप करें।

मन्त्र

क्रीं क्रीं वीर वेतालयै ऐं ऐं क्रीं क्रीं हुं हुं क्लीं क्लीं वेताल सिद्धि ह्रीं ह्रीं फट्।

मन्त्र साधना करने से पूर्व श्मशान जागरण क्रिया सम्पन्न कर लेनी चाहिए और अपने चारों ओर रक्षा कवच करते हुए दसों दिशाओं को बांध कर फिर यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए, साधना समाप्ति के बाद श्मशान शान्त क्रिया कर लेनी चाहिए।

वास्तव में ही यह संसार का अत्यन्त तेजस्वी और कठिन मन्त्र है, परन्तु जो साधक इस मंत्र को सिद्ध कर लेता है, वह अपने आप में अजेय और अद्वितीय बन जाता है, उसके समान इस पृथ्वी पर दूसरा कोई नहीं होता, यह साधनाओं में सर्व श्रेष्ठ साधना कही जाती है।

इस साधना को सिद्ध करने के बाद पूरे मकान को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना नोटों की या पत्थरों की निरन्तर वर्षा कर देना तथा संसार का कोई भी कठिन कार्य सम्पन्न कर देना साधक के बांये हाथ का खेल होता है।

नवीन कांति बना कर आकाश से जमीन पर उतारी हो, ऐसा सौन्दर्य कि जो देखने में अत्यन्त सुगन्धित आकर्षक और अद्वितीय लगे, महसूस होता था कि कहीं उंगली लगने पर यह सौन्दर्य मैला न हो जाय, आकर्षक देह यष्टि जिसे मेरे जैसा कठोर तांत्रिक भी एक बारगी देखता ही रह गया, मन में आया कि अगर यह कोई [illegible] या नेपाली राजकुमारी है, और तन्त्र का सम्मोहन इसे इस क्षेत्र में खींच लाया है, पर तन्त्र अपने आप में काफी कठिन विषय है, जिसमें बहुत कठोर साधनाएं सम्पन्न करनी पड़ती है और यह बालिका अभी अत्यन्त सुन्दर सुकुमार और नाजुक सी है, तन्त्र का इतना भारी बोझ यह शायद नहीं उठा सकेगी, मैं ऐसा सोच ही रहा था कि उसने मुझे तांत्रिक विधान से प्रणाम किया।

मैं प्रकृतिस्थ होकर सावधान हुआ, और प्रणाम का उत्तर देते हुए पूछा यहां पर आई हो आने का क्या उद्देश्य है ?

उसने उत्तर दिया मेरे मन की अंतिम अभिलाषा परम योगीराज स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी की शिष्या बनने का है, इसके लिए चाहे मुझे प्राणों की आहुति भी देनी पड़ जाय तो भी कम है, परन्तु जब तक उनसे सम्पर्क नहीं हो पाता या उनका सानिध्य प्राप्त नहीं हो पाता, तब तक उनके शिष्य अर्थात् आपके साथ रह कर कुछ साधनाएं सीखना चाहती हूं, मुझे ज्ञात हुआ है कि आपने स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी से काफी ऊंची और महत्वपूर्ण सिद्धियां प्राप्त की है मैं आपकी कसौटी पर खरी उतरूंगी और यदि आप मुझे अपने आश्रम में रहने की आज्ञा दें और कुछ साधनाएं सिद्ध कराएँ तो मैं अवश्य ही इन साधनाओं को सिद्ध कर यह बता दूंगी कि मैं आपके अन्य शिष्य शिष्याओं की होड़ में सबसे आगे हूं और कठिन से कठिन साधनाएं भी सिद्ध कर सकती हूं।

उसने एक ही सांस में यह सब कुछ कह दिया जो वह कहना चाहती थी, उसकी दो टूक बेलाग बातचीत सीधी सरल और स्पष्ट थी, ऐसा लग रहा था कि उसके मन में किसी प्रकार का छल-कपट नहीं है, उसके मन में

वायु गति साधना सिद्धि

यह साधना भी उच्च कोटि की कही जाती है, अमावस्या की रात्रि को श्मशान में बैठ जाय अपने नीचे ताजे मुर्दे की भस्म बिछा दें ऐसा नित्य करना आवश्यक है फिर किसी कब्र में से दूसरा मुर्दा निकाल कर सहारा दे कर अपने सामने बिठा दें और उसे जल से स्नान करावे, ललाट पर सिन्दुर का तिलक लगावे और स्वयं दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय तथा हकीक माला से १०१ माला मन्त्र जप करें, मंत्र जप करते समय मुर्दे की आंखों में निरन्तर ताकते रहना जरूरी है, आगे चलकर यह मुर्दा ही वायु साधना का आधार बनता है।

मन्त्र

ॐ अचेतन चेतन वायु न्य भुताये मम वश्य सिद्धाये वायुगमन सिद्धि देहि देहि फट्।

यह ५१ दिन की साधना है, इसमें नित्य उसी मुर्दे की पूजा होती है और रात को उसे पुनः कब्र में लिटा दिया जाता है दूसरे दिन उसे फिर निकाल कर पूजा कर मंत्र जाप किया जाता है इस बात का ध्यान रहे कि अपने नीचे ताजे मुर्दे की भस्म बिछा कर उस आसन पर ही साधना सिद्ध करें।

यह अपने आप में महत्वपूर्ण प्रयोग है, और कठोर हृदय वाले अपने गुरु की आज्ञा से ऐसी साधना को सिद्ध कर पूर्ण सफलता पा सकता है।

इसकी पहिचान यह है कि ५१ वें दिन मन्त्र जप सम्पन्न होते ही यह मुर्दा सशरीर आकाश में अदृश्य हो जाता है और फिर साधक जब भी चाहे पुरे संसार में एक स्थान में दूसरे स्थान पर आकाश मार्ग से गतिशील होता हुआ, कुछ ही सेकण्डों में कहीं पर भी पहुंच सकता है।

किसी प्रकार की हीन भावना भी नहीं है, वह जो कुछ कहना सुनना या सीखना चाहती है, स्पष्ट शब्दों में कह देती है।

मैंने उसके चेहरे को ध्यानपूर्वक देखा, निश्चय ही अत्यन्त उच्चकोटि की कोई राजकुमारी है, चेहरे पर पूर्ण यौवन और तरुणाई आ जाने के बावजूद भी अभी तक भोलापन मिट नहीं पाया है, मैंने उसे अपने आश्रम में रहने सीखने और साधना सम्पन्न करने की आज्ञा दे दी

थोड़े ही दिनों में वह आश्रम में रहने वाले उन आश्रम वासी साधकों के दिलो दिमाग पर छा गई, ... क्या ... उनके दिलों पर शासन करने लगी, जैसे सारंगी की धुन पर सांप नृत्य करता है, ठीक उसी प्रकार सभी उसके इशारों पर काम करते थे, एक विचित्र प्रकार का अनुशासन साधना में आ गया था, आश्रम में कहीं किसी प्रकार

श्यामा साधना

उच्चकोटि की साधनाओं को सम्पन्न करने के लिए श्यामा साधना आवश्यक मानी गयी है, चाहे पुरुष साधक हो या स्त्री साधिका हो, यह साधना दोनों के लिए समान रूप से उपयोगी है, इससे मन पर कठोर नियन्त्रण होता है और उसका सारा शरीर आबद्ध हो जाता है, पांचों कर्मेन्द्रियों और पांचों ज्ञानेन्द्रियों पर उसका पूरा पूरा नियन्त्रण होता है, और आगे चलकर वह किसी भी साधना में तुरन्त सफलता प्राप्त करने में सक्षम हो पाता है।

यह साधना रविवार के दिन दोपहर को श्मशान में जाकर अपने गुरु की आज्ञा से दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर सर्वथा नग्न हो बैठ जाय और सामने किसी साधक को सर्वथा नग्न बिठा दें जो कि उससे सर्वथा विपरीत हो, जो सामने साधक बैठा हुआ हो, उसके लिए यह आवश्यक है कि श्यामा साधना में सिद्ध हो, इस प्रकार से एक दूसरे के सर्वथा विपरीत योनि में बैठे हुए भी मन पर पूर्णतः नियन्त्रण रखने में समर्थ होना तथा निरन्तर मन्त्र जाप करना ही श्यामा साधना की श्रेष्ठता और सफलता मानी गयी है।

इसमें ऐसे सुनसान स्थान को चुने जहां पर लोगों का आवागमन नहीं के बराबर हो और फिर हकीक माला से आंखें खुली रखते हुए निम्न मंत्र की ५१ माला फेरे, इस । गुरु का कर्त्तव्य है कि वह बराबर साधकों के ऊपर अपनी कठोर दृष्टि बनाये रखें।

साधना मन्त्र

ॐ सोऽहं मणिभद्रे हुं।

यह मंत्र अपने आप ... आत्म चेतना मंत्र है, मन पर नियन्त्रण प्राप्त करने का मंत्र है, कठोर साधनाओं को सिद्ध करने का मन्त्र है, और संसार में कहीं पर भी सिद्ध विचरण करने का मन्त्र है, महावीर स्वामी ने इसी साधना को सिद्ध कर केवल्य ज्ञान प्राप्त किया था, ऐसी जनश्रुति है।

आज भी उच्च कोटि की साधनाओं में प्रवेश देने से पूर्व साधक को ऐसी साधनाएं सम्पन्न करवा कर उसकी परीक्षा ली जाती है।

की कोई इच्छुकता दिखाई नहीं दे रही थी, सब काम [illegible] अपने ढंग से चल रहा था, वह लगभग एक साल तक मेरे आश्रम में रही पर पूर्ण [illegible] एक प्रकार से देखा जाय तो उसने मेरे सारे तन्त्र की [illegible], जो साधनाएं मैंने दो तीन साल परिश्रम कर सीखी थी, जिन साधनाओं को सीखने में मुझे एड़ी चोटी का जोर लगाना पड़ा था उन साधनाओं को भी वह इतनी आसानी से सीख रही थी और उसमें सफल हो रही थी कि कई बार आश्चर्य होता था कि वास्तव में यह कोई पूर्व जन्म की साधिका है और इस जन्म में किसी राज घराने में जन्म ले लिया है, थोड़े ही दिनों में वह तन्त्र के क्षेत्र में एक आश्चर्यजनक दक्षता प्राप्त कर चुकी थी।

एक दिन सुबह सुबह मैं परमात्मा की स्तुति में लगा हुआ था कि भैरवी मेरे सामने आकर खड़ी हो गई, मैंने पूछा आखिर तुम्हारा नाम क्या है, उसने सहज संबोधन से जवाब दिया अभी तक तो मां बाप ने जो नाम दिया था वह मैं भुला बैठी हूं, लोग मुझे अल्हड़ भैरवी कहते हैं, क्यों कहते हैं इसका मुझे स्वयं भी पता नहीं, मेरा नाम करण तो पूज्य गुरुदेव निखिलेश्वरानन्द जी ही करेंगे तभी मेरा सही अर्थों में नामकरण संस्कार हो सकेगा, यों सभी मुझे अल्हड़ भैरवी कहते हैं तो आप भी मुझे इस नाम से पुकार सकते हैं।

एक दिन उसने कहा मैं आज से वीर साधना सम्पन्न करना चाहती हूं, और मैं जल्दी से जल्दी इस साधना को सम्पन्न कर लूंगी।

मैं जैसे आसमान से नीचे गिर गया, वीर साधना अत्यन्त कठिन और दुर्बोध है, तन्त्र के महारथी भी वीर साधना करते हुए घबराते हैं, वे यथासंभव अन्य सभी साधनाएं सिद्ध करते हैं, परन्तु वीर साधना का नाम लेते ही उन्हें चक्कर सा आने लगता है।

वीर साधना अत्यन्त कठिन क्रिया है, और श्मशान में मुर्दे की छाती पर बैठ कर काली मन्त्र का आवाहन कर दसों दिशाओं को बांध कर वीर का आवाहन करना

शून्य साधना सिद्धि

यह साधना सरल है और कई साधकों ने इस साधना को सिद्ध कर पूर्ण सफलता पाई है।

यह श्मशान साधना है, अमावस्या की मध्य रात्रि को दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर साधक बैठ जाय और सामने सवा किलो जौ के आटे से एक मानव आकृति बना दें और उसे सिन्दूर से पोत दें फिर उसमें प्राण संजीवन क्रिया सम्पन्न कर अपने चारों ओर सुरक्षा घेरा बना कर दसों दिशाओं को बांध दे और हकीक माला से निम्न मन्त्र का जप करें।

मन्त्र

ॐ शून्य पिण्डाये मनोवांछित कार्य सिद्धये क्रीं क्रीं
श्मशान कालिके भूत दाहनाये सिद्धये फट्।

इस प्रकार नित्य जौ के आटे का पुतला बनाये और फिर उसे मन्त्र जप पूरा होने पर दक्षिण दिशा की ओर जा कर रख दें, यह २१ दिन की साधना है और साधना समाप्त होने पर निश्चय ही शून्य साधना सिद्ध हो जाती है इसके द्वारा वह शून्य में से कुछ भी प्राप्त कर सकता है, नोटों की वर्षा, मनोवांछित वस्तु प्राप्त करना, ताजी भोज्य सामग्री उपलब्ध करना, और अन्य किसी भी प्रकार के कार्य सम्पन्न करने की वह सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है।

वास्तव में ही यह महत्वपूर्ण साधना है और साधक इसे सिद्ध कर पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है।

पड़ता है, यह साधना मामूली साधना नहीं है, पुरुष वर्ग भी इस को सम्पन्न करते हुए हिचकिचाते है, विचलित हो जाते है, और कई लोग तो इस साधना के बीच में ही समाप्त हो जाते है।

मैंने उत्तर दिया, तुम कुछ समझ भी रही हो कि तुम क्या कह रही हो, पहले अपने शरीर को देखो और उसके बाद वीर साधना का नाम लो।

उसने कहा जब आपने वीर साधना सिद्ध कर ली तो मैं वीर साधना क्यों नहीं सिद्ध कर सकती, नृसिंह चतुर्दशी है और मैं इसी अमावस्या से इस सा[illegible] को प्रारम्भ कर लेना चाहती हूं, आप मुझे आज्ञा दे[illegible] और इसका विधि विधान बता दें उसके बाद [illegible]

भैरव साधना

अन्य साधनाएं तो सरल कही जा सकती है और उससे साधक को किसी प्रकार का नुकसान नहीं होता पर कुछ साधनाएं इतनी अधिक तीक्ष्ण कठोर और तलवार की धार के समान होती है कि जरा सी चूक होते ही मृत्यु का वरण करने के लिए बाध्य होना पड़ता है, भैरव साधना भी ऐसी ही साधना है।

इसमें "बावन भैरव" को पूर्णतः सिद्ध किया जाता है जिसमें काल भैरव, रुद्र भैरव, और रौद्र भैरव जैसे भी है, इसलिए इस साधना को भी बेताल साधना के समान ही कठिन मानी गयी है, उच्चकोटि के साधक ऐसी साधनाएं सम्पन्न कर संसार में अजेयता प्राप्त करने में सक्षम हो पाते है।

किसी भी अमावस्या को अर्द्ध रात्रि के समय श्मशान में जाकर किसी एक स्थान पर बैठ जाय और अपने चारों ओर सुरक्षा मन्त्र पढ़कर लोहे के चिमटे से घेरा बना दें और बकरे की कुछ मांस बोटियां किसी एक पात्र में भर कर अपने पास रख दें, दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठते हुए, दसों दिशाओं को आबद्ध कर महा श्मशान जागरण क्रिया सम्पन्न करें।

जब पूरा श्मशान जागरण हो जाय और चारों तरफ से भूत प्रेत पिशाच यक्ष, तथा ब्रह्म राक्षस घिर जाय तब बलि देते हुए एक एक बोटी उनकी ओर फेंकता चला जाय, इसमें नित्य ५१ माला मन्त्र जप सर्प अस्थियों की माला से करनी जरूरी होती है और प्रत्येक माला के बाद भूतों को बली देना आवश्यक होता है।

इस प्रकार जब ५१ माला सम्पन्न हो जाय तब श्मशान जागरण समाप्त कर दे और उठ कर अपने घर आकर स्नान कर ले।

मन्त्र

ॐ ब्रह्म भूताये भैरवाये बलि ग्रहण ग्रहण मम वश्यं साधयै क्रीं क्रीं हुं हुं फट्।

यह २१ दिन की साधना है, पर अपने आप में काफी दिलेरी और हिम्मत की साधना है, अतः किसी गुरु के निर्देशन में ही इस साधना को सम्पन्न किया जाय तो ज्यादा उचित रहता है।

निश्चित रहे, मैं इस कठिन साधना को भी सिद्ध कर दूंगी।

मैं कुछ क्षणों के लिए हिचकिचाया मैंने सोचा यह इतनी तीक्ष्ण साधना सम्पन्न कर ही नहीं सकती, अभी एक यह सम्भव ही नहीं है, परन्तु उसने मन की बात ताड़ ली और कहा जब मैं घबरा नहीं रही हूं, जब मुझे अपने प्राणों का मोह नहीं है, तब फिर आप बेकार ही परेशान हो रहे है, आप यदि मुझे यह साधना नहीं सिखायेंगे तो मैं यह आश्रम छोड़ कर किसी और स्थान पर चली जाऊंगी और ऐसे गुरु को ढूंढ लूंगी जो मुझे यह साधना सिद्ध करवा सके।

यद्यपि मैं उसके दृढ़ निश्चय और आत्म विश्वास से पूरी तरह से प्रभावित था मुझे विश्वास था कि वह जिस साधना को भी आरम्भ करेगी उसे पूरा अवश्य करेगी परन्तु एकदम से और साधना में बिठा देना तो उसके प्राणों से खेलना है, जब श्मशान जागरण होगा तो ऐसा दृश्य देखकर यह अवश्य ही दहल जायेगी और इसका प्राणान्त हो जायेगा फिर भी मैंने सोचा आज नृसिंह चतुर्दशी है, पास में ही श्मशान है, मैं आज श्मशान जागरण किया कर इसको बीच में बैठा देता हूं और जब यह विचित्र और विचित्र दृश्य देखेगी तो अपने आप ही साधना करने का हठ छोड़ देगी।

मैंने अनमने भाव से हां भर दी, जाते जाते उसने कहा मुझे श्मशान जागरण साधना ज्ञात है, इसलिए यदि आप केवल परीक्षा की दृष्टि से ही श्मशान में बैठाना चाहते है तो आपकी मरजी, भूत प्रेतों को मैं अपनी उंगलियों पर नचाती हूं, और वे तो मेरे दास की तरह कार्य करते है।

खैर, मैं रात्रि को दक्षिण काली मन्दिर के पास वाले महा श्मशान में उस रात्रि को उसे ले गया और श्मशान के ठीक मध्य में उसको बिठा दिया तथा पांच सात गज की दूरी पर मैं बैठ गया, मैंने रक्षा के लिए अपने चारों ओर चिमटे से लकीर खींची तो वह हंस पड़ी

उग्र तारा सिद्धि

यों तो तारा साधना कई स्थानों पर स्पष्ट की गई है पर उग्र तारा अपने आप में महत्वपूर्ण साधना है और इसके सिद्ध होने पर अन्य सभी देवियां और महादेवियां स्वतः सिद्ध हो जाती है।

अमावस्या की रात्रि को श्मशान के मध्य में सर्वथा नग्न हो कर बैठ जाय और सामने ताजे मुर्दे की भस्म को पानी से गीला कर उग्र तारा की मूर्ति बनावे उस पर सिन्दूर का तिलक करें और स्वयं के भी सिन्दूर का तिलक करें, इसके बाद दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर सर्प अस्थियों की माला से निम्न मंत्र की ५१ माला मंत्र जप करें।

मन्त्र

ॐ ह्रीं ह्रीं उग्र तारायै क्रीं क्रीं फट्।

जब ५१ माला पूर्ण हो जाय तब उग्र तारा को दक्षिण दिशा की ओर किसी पेड़ की छाया के नीचे रख कर विश्राम करने की प्रार्थना करें।

यह २१ दिन की साधना है और इसमें नित्य उग्र तारा की नवीन मूर्ति बना कर उसकी पूजा कर प्राण चैतन्यता प्रदान कर पंचोपचार पूजन कर मंत्र जप सम्पन्न किया जाता है।

यह साधना सिद्ध होने पर साधक "महासिद्ध" कहलाता है, और उसके शरीर में समस्त देवियां और महादेवियां स्थित होती है वह किसी भी असंभव कार्य को संभव सम्पन्न करने की क्षमता रखता है।

वास्तव में ही यह साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साधना है जिसे उच्चकोटि के योगी ही सिद्ध कर पाते है।

बोली जब रक्षात्मक घेरा ही बना लिया है तो फिर श्मशान जागरण करने से लाभ ही क्या, मजा तो तब है, कि जब अपना रक्षात्मक घेरा बनाया ही न जाय और भूत प्रेतों का प्रभाव, प्रताप और आक्रमण देखा जाय।

और वास्तव में ही उसने किसी प्रकार की सुरक्षा रेखा नहीं खींची और मेरे आज्ञा देने से पूर्व ही उसने श्मशान जागरण की क्रिया प्रारम्भ कर दी, वह जोरों से तीव्र प्रयोग प्रारम्भ कर रही थी, और सारा श्मशान एक बारगी ही जाग्रत हो रहा था, ऐसा लग रहा था कि उसे श्मशान जागरण की क्रिया पूर्णता के साथ ज्ञात हो।

थोड़ी ही देर में भूत, प्रेत पिशाच, राक्षस चारों तरफ से उमड़ उमड़ कर आ रहे थे, मैं इन पंक्तियों को लिखते समय सत्य बोल रहा हूं कि सुरक्षा घेरा खींचने के बावजूद भी श्मशान के उस भयानक दृश्य को देखकर मैं अन्दर ही अन्दर थोड़ा विचलित अवश्य हो रहा था परन्तु मैंने कनखियों से अल्हड़ भैरवी की ओर देखा वह किसी भी प्रकार से परेशान नहीं थी, विचलित नहीं थी, बड़ा राक्षस जैसे पिशाच उसके चारों ओर बैठ गये थे, और वह मुस्कराती हुई उनसे बतिया रही थी जैसे कि वह उसके भाई बहिन या सगे साथी हों।

लगभग यह एक घण्टे तक यहां श्मशान जागरण रहा, और इस बीच मैं लगभग पचास बार भयभीत हुआ होऊंगा, जब कोई बड़ा राक्षस मेरे ऊपर झपट्टा मारता तो मेरा दिल दहल जाता पर रक्षात्मक घेरा होने की वजह से वह कुछ कर नहीं पा रहा था पर इसके बावजूद वह पूर्णतः शान्त थी उसके चेहरे पर किसी प्रकार का कोई उद्वेग नहीं था।

श्मशान जागरण सम्पन्न होने के बाद मैं उसके साथ आश्रम की ओर लौट रहा था तो मैंने पूछा अल्हड़ यह श्मशान जागरण की विशेष विधि कहां से सीखी?

उसने कोई उत्तर नहीं दिया बोली यह मैंने ऐसे व्यक्ति से छुप कर सीखी है, जिसे मैं अपना गुरु बनाना चाहती हूं, पर जब वह अपने किसी अन्य शिष्य को यह विधि सिखा रहा था, तो दूर पेड़ के साये में खड़ी यह क्रिया और यह मन्त्र जप सीख रही थी, विधिवत शिक्षा मैंने प्राप्त नहीं की है, परन्तु आप देख रहे हैं कि श्मशान जागरण में कोई त्रुटि भी नहीं रहने दी है।

मैंने अन्दाज लगाया कि हो सकता है, कभी इधर स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी आये होंगे और वे अपने किसी शिष्य को श्मशान जागरण सिखा रहे होंगे, इसके मन में सीखने की अत्यधिक तीव्र लालसा रही होगी, और इसने उनके शिष्यत्व स्वीकार करने की इच्छा भी प्रकट की होगी तो उन्होंने मना कर दिया होगा और तब इस ने छुप कर उस क्रिया को और मन्त्र विधान को समझ लिया होगा।

मेरे मन ने तर्क किया कि इसमें दोष भी क्या है, जब द्रोणाचार्य ने एकलव्य को शिष्य बनाने से मना कर दिया था, तो उसने भी तो छिपकर धनुर्विद्या सीखी थी और अर्जुन से आगे निकल गया था इसमें कोई दो राय नहीं कि मेरी अपेक्षा इसे उच्चकोटि की श्मशान जागरण क्रिया ज्ञात है।

मैंने उसे वीर साधना सिद्धि सम्पन्न करने की स्वीकृति दे दी और वास्तव में ही जिस साधना को करने में मुझे सात महीने लग गये थे, उस साधना को इस अल्हड़ ने केवल चौबीस दिनों में ही सिद्ध करके दिखा दिया कि इसमें गजब का अटल विश्वास और कठोर से कठोर साधनाएं सम्पन्न करने की इच्छा है।

वीर साधना सम्पन्न करने के बाद इसने मेरे सामने ही पवन को बांध कर और वीर वैताल से पहाड़ को चूर चूर करवा कर यह बता दिया कि उसने भली प्रकार से साधना सिद्ध की है, और सफलता पाई है।

वीर साधना सम्पन्न करने के बाद साधक बहते हुए पवन को रोक सकता है, भयंकर आंधड़ और तूफान ला सकता है, पत्थरों को हवा में उछाल कर एक प्रकार से

पहाड़ को चकनाचूर कर सकता है, हजारों आदमियों को एक ही क्षण में नष्ट कर सकता है और बैताल के माध्यम से संसार के किसी भी कठिन कार्य को सम्पन्न कर सकता है, बैताल साधना तो एक अद्वितीय साधना है, जिसका कोई मुकाबला ही नहीं है और इस लड़की ने मात्र चौबीस दिनों में ही इस साधना को सम्पन्न कर यह बता दिया था कि वह किसी भी प्रकार की कठिन साधना को सम्पन्न कर सकती है।

इसके बाद अल्हड़ भैरवी कुछ दिन शान्त रही, और फिर उसने एक दिन प्रातःकाल मेरे सामने नम्रता के साथ प्रार्थना की, कि मैं अपने गुरु के सामने पहुंचने से पूर्व सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त कर लेना चाहती हूं और ''श्यामा साधना'' में दक्षता प्राप्त करना चाहती हूं।

श्यामा साधना अत्यन्त ही तीक्ष्ण और कठोर साधना है जिसमें पूर्णतः पांचों कर्मेन्द्रियों और पांचों ज्ञानेन्द्रियों

जल गमन प्रक्रिया साधना

यह उच्चकोटि की साधना कही जाती है, और इस साधना को सिद्ध करने पर व्यक्ति जल पर भी उसी आसानी से चल सकता है जिस प्रकार से व्यक्ति जमीन पर चलता है इससे साधक को किसी प्रकार की कोई असुविधा नहीं होती और न डूबने का खतरा ही रहता है, उच्चकोटि के साधक इस साधना को सिद्ध करने के लिए लालायित रहते हैं।

रविवार की मध्य रात्रि को जल में खड़े होकर इस साधना को सम्पन्न करना पड़ता है और अगले रविवार तक अर्थात आठ दिन तक उसे चौबीसों घन्टे निरन्तर जल में खड़े रह कर मन्त्र साधना सम्पन्न करनी होती है, नींद के झोंके में साधक पानी में गिर न जाय इसके लिए दोनों तरफ लकड़ी के खम्भे गाड़ कर उन खम्भों से साधक को बांध लिया जाता है जिससे गिरने का खतरा नहीं रहता, साथ ही साथ उसके एक दो गुरु भाई हमेशा निगरानी करते रहते हैं, इस साधना में नाभि से ऊपर तक जल में खड़े रह कर साधना सम्पन्न करनी आवश्यक है।

इस साधना में हकीक माला का प्रयोग होना चाहिए और चौबीसों घन्टे मन्त्र जाप करते रहना चाहिए, दिन रात में केवल दो बार दूध या कोई तरल पदार्थ लिया जा सकता है, पानी के बाहर नहीं निकले इसमें माला की संख्या निर्धारित नहीं है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं वह्नि वरुणायै श्रुं सिद्धयै क्लीं कालिके जलगमन सिद्धयै फट्।

वास्तव में ही यह साधना कठिन है, क्योंकि कई बार जल में खड़े रहने से मछलियां उसके पांवों के मांस को नोचने लग जाती हैं इसलिए शरीर पर कड़वा तेल लगा कर पानी में खड़े रहने में सुविधा होती है।

इस साधना को सिद्ध करने पर व्यक्ति आसानी से जल पर चल कर यह सिद्ध कर सकता है कि हमारे भारतीय तन्त्र कितने अधिक सक्षम और समर्थ हैं।

मन पर पूर्ण विजय प्राप्त करना होता है, सर्वथा नग्न हो कर किसी भैरव के सामने बैठ कर इस साधना को सम्पन्न करना होता है, और इस बात का पूरा प्रयत्न रखना पड़ता है कि मन में किसी भी प्रकार की उत्तेजना या उद्वेग उपस्थित न हो।

मैंने इसके लिए स्वीकृति दे दी, मेरे अत्यन्त प्रिय शिष्य माधव को इस बात के लिए अनुमति दे दी कि वह श्यामा साधना में सहयोग प्रदान करें, मैंने देखा कि वास्तव में ही यह लड़की इस्पात की बनी हुई है न यह किसी प्रकार से टूटना जानती है और न कोई इसको झुका सकता है, मेरे मन ने कहा यह एक दिन अवश्य ही अत्यन्त उच्च कोटि की साधिका बनेगी और अपने गुरु की सफलतम शिष्याओं में से एक होगी।

श्यामा साधना में तीन दिन तक बिना आसन से हिले, बिना खाना खाये, एक ही आसन पर बैठना पड़ता है, और सर्वथा आंखें खुली रख कर मन्त्र साधना सम्पन्न करनी होती है, और इसने अगले ही दिन से श्यामा साधना प्रारम्भ कर दी, और तीन दिनों में ही इस साधना को सम्पन्न कर यह सिद्ध कर दिया कि यह शरीर से और मन से पूर्णतः आत्मनियन्त्रित है और इसे किसी भी प्रकार से विचलित नहीं किया जा सकता।

कुछ समय यह शान्त रही परन्तु एक सप्ताह भर बाद ही इसने "बावन भैरव" सिद्ध सम्पुट करने की आज्ञा चाही, मैंने कहा बावन भैरव सिद्ध सम्पुट करना कोई हंसी मजाक नहीं है, यह कोई वीर वैताल साधना नहीं है, जिसको कि तुम भूल रही हो बावन भैरव सिद्ध करना अत्यन्त कठिन है, और उसमें तारा भैरव, उग्र भैरव और छिन्नमस्ता भैरव तो अत्यन्त दुष्कर दुर्बोध है, यदि थोड़ी सी भी गलती हो जाती है तो साधक का सिर एक सैकण्ड में ही धड़ से अलग हो जाता है।

उसने कहा सिर ही धड़ से अलग होना इससे ज्यादा कुछ हो भी नहीं सकता, जब वह सिर को धड़ से अलग करेगा, तब मैं देख लूंगी, मैं आज इस साधना को प्रारम्भ कर रही हूं आप मुझे आशीर्वाद दीजिये कि मैं इस साधना को पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न कर सकूं।

धीरे धीरे मुझे ऐसा लगने लगा था कि यह शिष्[य] तो मुझ पर ही हावी होने लगी है, पर जब शिष्य [...] से आगे बढ़े और वह सफलता प्राप्त करे तो गुरु [...] आनन्द ही होता है, और यह जिस साधना में भी ह[ा]थ डाल रही थी उसमें सफलता पा रही थी।

जब मैंने स्वीकृति दी और बावन भैरव साधना [...] पूर्ण विधि इसको समझाई तो आश्रम से बाहर जंगल [...] पहाड़ की एक गुफा में बैठ कर इसने अकेले उस कठि[न] और असंभव साधना को भी संभव कर दिया, इ[...] इशारों पर बावन भैरव नृत्य करने लगे, मैंने देखा [...] काल भैरव, उग्र भैरव और रौद्र भैरव जैसे तीक्ष्ण भ[ैरव] भी इसके संकेत पर कार्य करते और शान्त हो जाते, [...] प्रकार से इसने पूर्णता के साथ उन समस्त साधनाओं [...] सिद्ध कर दिया था।

इसके बाद इसने चौबीस दिन जल में रह कर [...] शयन प्रक्रिया साधना सिद्ध की जो कि तन्त्र की अत्य[न्त] तीक्ष्ण साधना कही जाती है, इसने वायु मार्ग गति साध[ना] सम्पन्न की जिसके माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थ[ान] पर कुछ ही क्षणों में पहुंचा जा सकता है, इसने [...] साधना सम्पन्न की जिसके द्वारा आकाश से जहां [...] की वर्षा कराई जा सकती है, वहीं पर पत्थरों की [...] भी की जा सकती है, आगे चल कर इसने उग्र तारा [...] सिद्ध किया, जो कि अपने आप में अत्यन्त कठिन [...] तीक्ष्ण तांत्रिक क्रिया है, देखते ही देखते छः महीने [...] भीतर भीतर दो महाविद्याएं सिद्ध कर ली और मुझे लगने लगा कि अब सिद्धाश्रम में जाने से इसे कोई [नहीं] रोक सकता।

पाठक कल्पना कर सकते हैं कि एक तो भरी ज[वानी] चेहरे पर भोलापन पूरे शरीर में अल्हड़ता और [...] उसके पास ऐसी उच्चकोटि की साधनाएं हो तो वह क्या गजब नहीं ढा सकती और वास्तव में ही उसने [...] वर्ष में तन्त्र के क्षेत्र में हम सब को आश्चर्य च[कित] करके रख दिया। ★

आखिर ये साधना शिविर क्यों?

प्रत्येक पुनीत कार्य के पीछे एक विशिष्ट एवं विराट लक्ष्य होता है, 'यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत' ..... गीता में स्वयं भगवान कृष्ण ने स्पष्ट किया है कि जब-जब पृथ्वी पर धर्म की हानि अर्थात् धर्म ह्रास होता है तब मैं 'स्वयं अवतरित होकर उसकी रक्षा करता हूं' भारत भूमि इस दिशा में सिरमौर रही है, यहां धर्म एवं नीति की जड़ें इतनी गहरी पैठी हुई हैं कि देशी और विदेशी आततायियों के लाख प्रयत्न करने पर भी इसे रंच मात्र हिला न सके निर्मूल करना तो बहुत ही दूर की बात है।

सनातन संस्कृति पर कुठाराघात

हमारी सनातन संस्कृति आज भी यदि शाश्वत है तो निश्चय ही उसका आधार कहीं बहुत गहरा एवं ठोस धरातल पर टिका हुआ है, विश्व का धर्मगुरु बनने के लिये निश्चय ही कहीं न कहीं दिव्य प्राणश्चेतना चाहिये ही, और भारतीय हमारी सनातन संस्कृति इस संदर्भ में सदा ही भाग्यशाली रही है, जब जब इस पर कहीं से भी कोई चोट हुई, कोई न कोई धर्म गुरु सामने ही उठा और गुमराह की जाने वाली भोली भाली जनता को उसके व्यामोह एवं स्वार्थ परता से निकाल कर सनातनता का जय घोष देकर लड़खड़ाते पावों को थाम लिया इस्लाम और ईसाई धर्म ने सैकड़ों वर्षों तक अपने तरीके से हमारी पुरातन पुनीत इस भारतीय संस्कृति पर जो कुठाराघात किया है, वह जग विदित है, इतना ही नहीं हमारे अपने ही देश के अन्दर इसी संस्कृति में उत्पन्न और विकसित अनेक धर्म एवं धर्मानुयायियों ने मठ एवं मठाधीशों ने अपनी व्यक्तिगत संतुष्टि के लिए नये नये सम्प्रदायों को अपने नाम से नामकरण किया, अलग मत मतान्तर चलाकर अपने पीछे लोगों का एक समूह बना कर गढ़ निर्मित कर लिया, वे चाहे बौद्ध रहे हों अथवा जैनी, पारसी रहे हों अथवा मुस्लिम, सिख रहे हों या ईसाई, सभी का मूल उद्गम आर्य संस्कृति ही रही है, अपनी इस पुनीत सनातन संस्कृति की लोप होती हुई स्वस्थ परम्पराओं की रक्षा करते हुए अपनी आध्यात्मिक दिव्यता को पुनः अपने उसी अलौकिक पुरातन स्वरूप में प्रतिस्थापित करने का यह एक लघु, पर ठोस प्रयास है जिस महायज्ञ में मन्त्र तन्त्र यन्त्र विज्ञान पत्रिका के सभी पाठक एवं पूज्य पाद गृहस्थ रूप सद्गुरु डा० नारायणदत्त श्रीमाली जी के सभी प्रेमी साधक एवं शिष्य एकजुट हो पिछले अनेक वर्षों से उनके निर्देशन में दिन रात सेवारत जुटे हुए हैं।

धर्म एवं संस्कृति की रक्षा का बीड़ा

पूज्य गुरुदेव ने गृहस्थ रूप में रहते हुए भी धर्म एवं संस्कृति की रक्षा का जो बीड़ा उठाया है उसकी प्रेरणा एवं आधार उनका संन्यासी रूप परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द ही रहा है, सिद्धाश्रम संस्पर्शित ही नहीं वरन सिद्धाश्रम के अधिष्ठाता एवं प्रमुख संचालक पूज्य पाद परम हंस स्वामी सच्चिदानन्द महाराज के प्रमुख शिष्य के रूप में वहां के चैतन्य संजीवन प्राण के रूप में आप अपने पूज्य गुरु के आदेश पर वर्तमान विडम्बनाओं एवं विभीषिकाओं से युक्त समाज का गरल पीते हुए अपना कर्म महायज्ञ सम्पन्न करने में पूरे मनोयोग से लगे हुए

है, हम सब जो भी जहां पर है, जहां भी जो किसी रूप में जुड़े हुए शुभ संकल्प से प्रतिज्ञा करें कि उनसे इस दिव्य पवित्र महायज्ञ में जो कुछ भी अधिक से अधिक बन पड़े, करेंगे, तो निश्चय ही आप सब मिलकर आज पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव एवं व्यामोह के चक्रव्यूह में फंसे समाज के अपने इस भ्रष्ट समाज में नई चेतना संचरित कर नयी करवट ला सकते हैं।

नई पीढ़ी एवं समाज का विकृत रूप

आज आप जिधर भी निकल जाय विज्ञान एवं भौतिकवाद का भूत अपने दूनों पंजों से सबको दबोचे हुए सब पर हावी है, बेतहाशा लक्ष्यहीन दौड़ में सब लगे हुए है, पागल है एक रात में लखपति बन कोठी, महल, अटूट धन दौलत सब कुछ पाने को, धार्मिक मर्यादायें एवं परम्पराएं ताक में रख छोड़ी है, पाश्चात्य चकाचौंध जो स्वयं में प्रकाशित हो किंकर्त्तव्य विमूढ़ बन भौचक्की है उसकी ही नकल कर हमारी-आपकी पीढ़ी स्वयं के अस्तित्व को दांव पर लगाये मृग मरीचिका का शिकार हो रही है।

इस विडम्बना से अपने आपको बचाकर नई पीढ़ी का भविष्य सुरक्षित रखना ही होगा अन्यथा कल की भावी संतान हमें किसी भी कीमत पर माफ नहीं करेगी, चरमरा कर टूट जायेगी हमारी मर्यादाओं एवं परम्पराओं की सभी सीमाएँ भारतीय संस्कृति के उज्ज-

साधना शिविर

१८ अक्तूबर १९८७। दिल्ली में सिद्धाश्रम साधक परिवार। दिल्ली शाखा के द्वारा ऊजवा ग्राम में साधना दीक्षा, संस्कार का भव्य आयोजन, शालीनगर के अरुण श्रीवास्तव के देख-रेख में पूर्ण उत्सवमय वातावरण, कंवर लाल डागर के प्रयत्नों से सम्पूर्ण व्यवस्था, और इस एक दिवसीय साधना शिविर में भाग लेने वाले थे दिल्ली के प्रबुद्ध वर्ग, व्यवसायी, उद्योगपति, और बुद्धिजीवी साथ ही साथ ग्रामीण जनता भी, जिनके मन में साधना के प्रति एक भावना थी।

और इस भौतिक वातावरण में रहने वाले-साधनाओं से सर्वथा दूर दैनिक समस्याओं से ग्रस्त पूर्णतः भोगवादी प्रवृत्ति से युक्त उन सभी उपस्थित दीक्षा लेने वाले साधकों और श्रोताओं ने अनुभव किया कि वास्तव में ही इस घोर भौतिकतावादी युग में यदि पूर्ण शान्ति प्राप्त हो सकती है, तो उसका एक मात्र रास्ता है "साधना शिविर" में उपस्थित होना, गुरु का साहचर्य प्राप्त करना, दीक्षा संस्कार से सम्पन्न होना, और नित्य गुरु-मन्त्र या अन्य साधना मंत्रों के द्वारा अपने चित्त को पवित्र बनाते हुए पूर्णतः मानसिक शान्ति की ओर अग्रसर होना।

पूर्णतः व्यवसाय से सम्पन्न श्री पुष्कर बिड़ला और मलीन जैसे अत्यधिक व्यस्त रहने वाले व्यक्तियों ने यह स्वीकार किया कि ऐसे साधना शिविर ही मन को शान्ति दे सकते है, ऐसे साधना शिविरों के माध्यम से ही मानसिक तनाव दूर हो सकते है और इस प्रकार के शिविरों के आयोजन के द्वारा ही जीवन में समस्त प्रकार की सफलताओं को प्राप्त किया जा सकता है।

राधेश्याम नामा आदि साधकों ने तो प्रण लिया कि हम पूरी दिल्ली में समय समय पर ऐसे शिविर आयोजन करने का प्रयत्न करेंगे ही, क्योंकि भावनाओं को पूर्णता देने का एक मात्र यही रास्ता है।

वल मुखौटे पर नकली आवरण का कलंक लग जायेगा, धर्माचार्यों के नये नये प्रयोग, उनके रेशमी एवं आडम्बर युक्त परिवेश में बुने गये षड्यन्त्र धर्म प्रेमी एवं धर्म भीरू जनता को एक ऐसे मोड़ पर ले जाकर खड़ा कर देंगे जहां से वापिस लौट कर प्रायश्चित करने की भी कोई गुंजाइश बाकी नहीं बचेगी।

अपने आप में भगवान कहलाने वाले योगी, विदेशों में भारतीय योग दर्शन के नाम पर दुकान खोले अथवा पहने छद्मवेश धारी योगी हो चाहे साधु सन्यासी, सभी का केन्द्रीय मूल लक्ष्य एक ही है, जल्दी से जल्दी करोड़ों की जायदाद का आश्रम कैसे भी बना कर अपनी व्यक्तिगत पूजा करा संसार का सारा भोग ऐश्वर्य स्वयं में समेट लेना।

यही दौड़ संस्कृति के नाम पर भ्रष्टाचार फैला रही है, यही दौड़ राजनैतिक नेताओं एवं व्यापारियों को चैन की नींद नहीं सोने दे रही है, पूरे समाज को भ्रष्टता में डुबो कर रख छोड़ा है, सीधी सच्ची शान्त जिन्दगी, सात्विक चिन्तन की कल्पना मात्र सपना हो गई है, आश्रम पर आश्रम बने जा रहे है लेकिन प्रत्येक की नींव के नीचे दबी हुई है वासना, भोग, ग्रह और सब कुछ हड़प लेने की भयंकर अजगरी वृत्ति।

कैसे मुक्त होगा आज का यह समाज, भ्रष्टता के ताने बाने से

इसी चिन्तन इसी प्रश्न का ही उत्तर है आपके ये साधना शिविर, जो पूज्य पाद सद्गुरु देव के प्रत्यक्ष संरक्षण एवं दिशा निर्देशन में पिछले कई वर्षों से निरन्तर लगाये जा रहे है जिनकी महत्ता एवं सफलता इसी से स्पष्ट है कि इन सात दिनों के शिविर में भाग लेने के लिये भारत के कोने कोने से और विदेशों तक से साधक और साधिकायें दौड़ दौड़ कर आते है, साधना सम्पन्न करते है, और सारे मानसिक तनावों से मुक्त होकर दिन प्रति दिन की भौतिक समस्याओं का समुचित एवं सटीक हल प्राप्त करते है, आध्यात्मिक स्तर पर साधना काल में ब्रह्मानन्द को प्राप्त हो झूम झूम जाते है।

मानसिक शान्ति

१६ अक्तूबर ८७ का सांयकाल। रोहतक नगर में चन्दा सिंह पहल, सविता सभा, रेडियो स्टेशन के डायरेक्टर श्री हरियाणवी जी के प्रयत्नों से एक भव्य आयोजन, पूज्य गुरुदेव का आमन्त्रण और उन्होंने विशाल हॉल में प्रबुद्ध डाक्टरों, प्रिन्सीपलों और बुद्धिजीवियों के सामने "योग, शान्ति और समाधि" विषय पर एक घण्टे का अद्भुत प्रवचन।

उन्होंने बताया कि विज्ञान की प्रगति से व्यक्ति एक तरफ जहां भौतिक प्रगति कर रहा है, दूसरी ओर उतनी ही मानसिक अशान्ति बढ़ गई है और जब तक मानसिक शान्ति नहीं है, तब तक जीवन जीने का कोई उद्देश्य ही नहीं है, और उपस्थित सभी उच्चकोटि के श्रोताओं ने पहली बार अनुभव किया कि केवल विज्ञान ही समस्याओं का समाधान नहीं कर सकता, साधना मन्त्र जप और योग के द्वारा ही जीवन में पूर्णता, आनन्द और मानसिक शान्ति प्राप्त की जा सकती है।

और आज के इस घोर भौतिक युग में तो ऐसे शिविरों का आयोजन एक अनिवार्य बन गया है और यह आज के युग की अनिवार्यता है जिससे कि मानवता भौतिकता के भार से उबर कर मानसिक शान्ति पा सके।

साधना शिविर की प्रमुख विशेषता

साधक साधिकाओं की अनुभूति के आधार पर उन्हें साधना काल में और साधना के उपरान्त प्राप्त हुई उपलब्धियों के आधार पर इन शिविरों की कुछ विशेषतायें पत्रिका पाठकों के लिए स्पष्ट कर देना उचित रहेगा।

भारतीय संस्कृति की आधार भूत पुरातन विद्याओं का पुनर्स्थापन

इन साधना शिविरों के माध्यम से साधक साधिकाओं को मन्त्र तन्त्र यन्त्र के प्रति भ्रामक चिन्तन एवं प्रचार करके पर्दाफाश करते हुए सही दृष्टि देना और सही मूल्यांकन करके लोप होते हुए इस आधार को सशक्त बनाना, सार भूत अपनी भारतीय विद्याओं के प्रति अनास्था एवं अज्ञान से लोगों को बाहर निकाल सही मायनों में इन विद्याओं का रहस्योद्घाटन करना।

(२) वैदिक ज्ञान एवं मन्त्रों के प्रति लोप होती हुई आस्था को पुनः जगाना

वेदों की गरिमा और मन्त्रों के प्रभाव के प्रति पाश्चात्य सभ्यता ने हम भारतीयों को भी गुमराह करके एक बड़ा प्रश्न चिह्न इसी से हमारे चिरन्तन शाश्वत ज्ञान पर लगवा दिया है जिसे समय रहते यदि हम नहीं हटा सके तो आने वाले कल का नक्शा किसी और रंग में रंगा दिखाई पड़ेगा, इन साधना शिविरों के माध्यम से पूज्य गुरुदेव का प्रयास रहा है कि सही वस्तु स्थिति सबके सामने रखकर मन्त्र साधना एवं वैदिक यज्ञ अनुष्ठान सम्पन्न कराते हुए साधारण जन को इनका प्रत्यक्ष लाभ एवं महत्व दिखा सके।

(३) वैदिक यज्ञ एवं अनुष्ठानों के प्रति लोप होती हुई श्रद्धा को पुनः स्थापित करना

वैदिक यज्ञों को सम्पन्न करा कर व्यक्तिगत राष्ट्रीय स्तर पर समस्याओं का समाधान करके अनुकूलता दिलाना पूज्य गुरुदेव का विशेष लक्ष्य रहा है, उनका दावा है कि आज भी इन यज्ञ और अनुष्ठानों के माध्यम से प्रकृति को वश में करके मन मुताबिक कार्य सम्पन्न कराया जा सकता है अनेक बार साधक और शिष्यों के बीच ऐसा

साधना

साधना हमारे पूर्वजों की एक ऐसी विद्या जो आज के इस भौतिक युग में भी चमत्का[र] प्रभाव दिखाने में समर्थ है, और इस प्रकार [के] प्रभाव कोई भी साधक अपना कर उसका उपयो[ग] कर सकता है तथा इन साधनाओं के माध्यम [से] जन कल्याण कर सकता है।

दिल्ली के विलिंगडन होस्पीटल के पास र[हने] वाले श्रवण कुमार गोयल के चौबीस वर्षीय पुत्र [को] पक्षाघात (लकवा) हो गया उसे अस्पताल [में] भरती करवाया डाक्टरों ने प्रयत्न भी किया [पर] कुछ न हो सका और उसका आधा अंग लगभ[ग] शून्य सा प्रतीत होने लगा।

तीसरे दिन उन्होंने पूज्य गुरुदेव से टेलीफ[ोन] पर सम्पर्क किया तो उन्होंने कहा आज मैं इ[स] संबंधित साधना सम्पन्न करूंगा, शाम को फि[र] टेलीफोन आया और बताया कि उसके कुछ [भी] फर्क नहीं पड़ा है और आधा शरीर पूर्णतः लकव[ा] ग्रस्त हो गया है, गुरुदेव ने टेलीफोन पर ही क[हा] तुम अभी जाकर उसके पैर में जोर से सुई चु[भा] दो यदि साधना सही है तो वह ठीक होना चाहिए और होगा ही।

जोधपुर से छः सौ मील दूर दिल्ली में गो[यल] जी ने घर जा कर ऐसा ही किया और चु[भाते ही] चमत्कारिक प्रभाव हुआ, उसी क्षण से उ[सका] आधा शरीर सक्रिय हो गया और ऐसा प्रतीत [हुआ] कि मानो उसे पक्षाघात हुआ ही नहीं था।

मन्त्र और साधनाएं तो आज भी जीवित सप्राण है, आवश्यकता है उन्हें सही प्रका[र] समझने की और कार्य करने की, तो उससे नि[श्चय] ही चमत्कारिक प्रभाव अनुभव किये जा सकते

करवाया और किया गया है, वरन यज्ञ एवं पुत्रेष्टि यज्ञ के माध्यम से क्रमशः वर्षा एवं पुत्र रत्न की प्राप्ति आज भी सम्भव करवाई गई है।

(४) "मंत्र आज भी ज्यों के त्यों सजीव एवं शक्तिशाली है", सिद्ध करना

जिन साधकों और साधिकाओं ने तपश्चर्या शिविरों में ऋषितुल्य जीवन जी कर भाग लिया है उन्हें मालूम है कि मन्त्रों की विस्फोटक शक्ति आज भी गोली की तरह असर करती है, यज्ञ कुण्ड में अग्नि आज भी मन्त्र से प्रज्वलित होती है, मन्त्र से आज भी देवी देवता का आह्वान कर उनसे साक्षात्कार किया जा सकता है, मन्त्रों के माध्यम से सम्मोहन वशीकरण, उच्चाटन, विद्वेषण और मारण पहले की भांति आज भी संभव है, इन शिविरों में अनेक प्रकार के प्रयोग साधकों ने सम्पन्न किये है।

(५) तन्त्र के भ्रामक प्रचार एवं समाज विरोधी अनैतिक तत्वों से मुक्ति

तन्त्र सही मायनों में साधना की एक विशिष्ट पद्धति है जिसके माध्यम से अपने शरीरगत सभी नाड़ी संस्थानों को विशेष क्रम में क्रियाशील करके तुरन्त सफलता पाई जाती है, मांस, मदिरा, सम्भोग की आड़ ले कर भोग लिप्सा में लिप्त भ्रष्ट लोगों ने अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिये तन्त्र के प्रति लोगों में एक भयावह चिन्तन एवं डर व्याप्त कर दिया है ताकि उनका प्रभाव भोली भाली जनता पर बना रहे, वरना शास्त्रों में कहीं पर भी इन वस्तुओं की तन्त्र में आवश्यकता नहीं बताई है, इन शिविरों में साधक और महिला साधिकाओं में साथ साथ तन्त्र साधना में भाग लेते हुए पूर्ण सात्विक एवं मर्यादित जीवन में रह कर पूर्ण सफलता प्राप्त की है।

अनास्था में आस्था

बम्बई का प्रशस्त क्रांति मैदान। गायत्री यज्ञ का भव्य आयोजन। पूज्य गुरुदेव डा० श्रीमाली जी के सान्निध्य में एक सौ एक कुण्डीय यज्ञ का सूत्र पात और उन चार दिनों में यज्ञ का वेद मंत्रों का और आध्यात्मिक पवित्रता का ऐसा प्रवाह बना कि जैसे बम्बई पूरी तरह से आध्यात्मिक नगरी बन गयी है, दूर दराज से लोगों का समूह भाग लेने के लिए और देखने के लिए उत्सुक था, प्रताप शंकर पण्डिया सूर्य कान्त शेलाणी, प्रह्लाद खन्ना, ओमप्रकाश सूद, अभिमन्यु सोलंकी, आदि के प्रयत्नों जो वातावरण बना, जो आध्यात्मिक प्रवाह बना उसका फल आज भी देखने को मिलता है, हजारों हजारों घर साधनाओं में प्रवृत्त हुए, और उन्होंने अपनी समस्याओं का स्वयं ही समाधान किया, सैकड़ों हजारों नवयुवक-युवतियों ने भौतिकता से ऊब कर साधना में मानसिक शान्ति अनुभव की, और लाखों लोगों ने इन साधनाओं और मंत्रों के माध्यम से अपनी समस्याओं का समाधान किया वहीं हजारों दूसरे परिवारों की समस्याओं के निराकरण में भी योगदान दिया।

वास्तव में ही आज का प्रत्येक परिवार अपनी ही समस्याओं से ग्रस्त है, जूझ रहा है और उन्हें कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा है, ऐसी स्थिति में केवल साधना और साधना शिविर ही मानसिक शान्ति दे सकते है तथा पारिवारिक समस्याओं का निराकरण कर सकते है।

(६) भूत-प्रेत, पिशाच योनियों के प्रति स्वस्थ चिन्तन का श्रीगणेश

इन साधना शिविरों के माध्यम से भूत सिद्धि साधना सम्पन्न करते हुए, साधकों को पहली बार आभास

कराया गया कि भूत-प्रेत पिशाच भी मनुष्य की तरह ही निम्न योनियां होती हैं जो पूर्ण सेवा, समर्पित और विश्वसनीय हैं, इनसे मनुष्य का कोई भी अहित नहीं होता उल्टे वह इन्हें सिद्ध कर अपने जीवन में इनसे कार्य लेता हुआ उन्हें मुक्ति प्रदान करने में समर्थ और सफल होता है।

(७) हिमालय स्थित योगी ऋषि, मुनियों की गोपनीय साधनाओं को सम्पन्न कराना

गृहस्थ शिष्य एवं साधक साधिकाओं को गृहस्थ के सब दायित्व निभाते हुए भी महाविद्या साधना शिव साधना, दुर्गा साधना, भूत, भविष्य संबंधी पंचांगुली साधना, महालक्ष्मी साधना, महाकाली साधना, भैरव साधना, साबर मंत्र साधना, आयुर्वेद साधना द्वारा नवदी पर काया प्रवेश, वायुगमन आदि साधनाएं सम्पन्न करा कर सिद्ध एवं सक्षम बनाना और अपनी इन गौरवशाली विद्या की थाती को जीवित बनाये रखना यही पूज्य गुरुदेव का इन शिविरों के माध्यम से प्रमुख लक्ष्य रहा है, उनका तो हर पल यही प्रयत्न है कि ये साधना भी अपने आप में पूर्ण ब्रह्मानन्द की प्राप्ति है, जो साधक एक शिविर में भाग ले लेता है वह इस आनन्द का रस पान कभी जीवन भर भुला नहीं सकता।

(८) गुरु-शिष्य के यथार्थ पावन सम्बन्ध को पुनर्स्थापना

शास्त्रोक्त गुरु दीक्षा के माध्यम से पूज्य गुरुदेव अपने शिष्य को पुत्रवत् स्नेह वात्सल्य ममत्व प्रदान कर सीने से लगा आशीर्वाद एवं शक्तिपात क्रिया से उसके पापों का ध्वंस कर उसे नव्य जीवन प्रदान करते हैं, साधनाओं के द्वारा उसे स्वयं बोध करा ब्रह्मत्व की ओर अग्रसर करते हैं, शिष्य उनके चरणों में बैठकर अपना जीवन धन्य समझता है।

(९) सूर्य सिद्धान्त एवं संजीवन क्रिया से आज के विज्ञान को भी चुनौती

अमरीका में इस सिद्धान्त का प्रतिपादन एक शिविर में करके पूज्य गुरुदेव ने अमेरिका वासियों को और दुनिया के सभी वैज्ञानिकों को मंत्र मुग्ध करके आश्चर्य में डाल दिया जो विज्ञान को अभी भी करने में सैकड़ों साल लगेंगे, फिर भी कर पाये यह संभावना नहीं की जा सकती, आज मंत्र एवं सूर्य सिद्धान्त के माध्यम से सिद्धहस्त साधक कुछ ही क्षणों में करके दिखा सकता है।

भोग और मोक्ष की प्राप्ति

अनास्थावादी आज की पीढ़ी जो हर कदम पर वैज्ञानिकता का दम भरती है, इन साधना शिविरों में भाग लेकर नतमस्तक हो जाती है, सारा गरूर उसका धुएं के बादल सा उड़ जाता है, फिर भी जिनकी प्रवृत्ति जहर उगलने की है, उन्हें आप कितना ही दूध पिलायें वे तो जहर उगलेंगे ही, वणिक वृत्ति के आधार पर पैसों के बल से सिद्धियां खरीदना चाहेंगे, स्वयं अकर्मण्य बन कर पंडितों से मंत्र जाप करा कर पूरा फल चाहेंगे, ऐसे लोग स्वयं तो भ्रम के शिकार हो गुमराह होते ही हैं, दूसरों को भी गुमराह करने से बाज नहीं आते, आप स्वयं साक्षी-भूत हो कर एक बार, कम से कम एक बार अवश्य ही अपना बहुमूल्य समय निकाल कर इन साधना शिविरों में भाग लें, आपको निश्चय ही लगेगा कि पीताम्बर धारण कर तपश्चर्या भवन में बैठकर ऋषितुल्य स्वरूप में मंत्रजाप योग-आसन, मुद्राएं प्राणायाम करके आप कितना आनन्द महसूस करते हैं, आपको लगेगा कि निश्चय ही यही वह जीवन है जो अपने आप में सार्थक और सही है, गृहस्थ रहते हुए इस आनन्द का भी साल में एक दो बार रसपान अवश्य करें ताकि ये सिद्धियां आपके जीवन को धन धान्य और सजा कर भोग और मोक्ष दोनों में ही पूर्णता प्रदान कर सकें।



दहकते अंगारों पर थिरकता गुलाब

पेरिस सुन्दरता और फैशन का घर है, सारे संसार में सौन्दर्य और कला का साम्राज्य माना जाता है फ्रांस की राजधानी पेरिस को। यह एक नगरी है जहां पर नैतिक कला अपने आप में जीवित रहती है, इस नगरी में जहां कैबरे और डिस्को जैसे क्लब मिल जायेंगे, वहां शराब पीकर मदहोश युवक युवतियां थिरकती हुई नजर आयेंगी वहीं दूसरी ओर पिकासो जैसे चित्रकार भी यहीं पर दिखाई देंगे जिनकी कलाकृतियां लाखों करोड़ों में बिकती हैं, यहां की माटी में [illegible] मादकता और सौन्दर्य बोध है, यहां के लोगों में एक प्रकार की शालीनता है और यहां के जन जन में कुछ न कुछ नया सीखने की इच्छा बराबर बनी रहती है, कहावत है कि संसार में आदमी कहीं पर भी भूखा और निर्धन रह सकता है, पर वह यदि एक बार पेरिस की धरती पर कदम रख दें और यदि उसमें कुछ हुनर है तो वह कुछ ही दिनों में करोड़पति बन जाता है और नाम कमा लेता है।

और इससे भी बड़ी बात यह है कि यहां पर आदमी गुमनाम की जिन्दगियों में भी बसर करते हैं, जो हुनर वाले व्यक्ति रातोंरात प्रशंसा के पन्नों पर बैठ कर पूरे विश्व में छा जाते हैं, वहां इस नगरी में यूरोपीय सभ्यता के प्रति मोह है वहीं भारत के प्रति प्रबल आकर्षण और जिज्ञासा भी, आज भी उनके मानस में यह बात बैठी हुई है कि भारत में तन्त्र मन्त्रों का जोर है और तन्त्र के माध्यम से वे कुछ भी असम्भव को सम्भव कर सकते हैं, उनमें एक प्रकार की भूख है इन सिद्धियों को जानने की, भारतीय तन्त्र को जानने की, आम आदमी के मन में जिज्ञासा है, और तन्त्र के माध्यम से कुछ ऐसा चमत्कार देखने और दिखाने के लिए लालायित से हैं कि जिसे देख-कर आदमी आश्चर्यचकित रह जाय।

और जिज्ञासा केवल जन साधारण में ही नहीं राज घराना भी इससे अछूता नहीं है, वहां के नवयुवक, नव-युवतियों में यह प्रबल इच्छा है कि भारतवर्ष जाय और किसी ऐसे तांत्रिक से मिले जो वास्तव में ही तन्त्र के बारे में सही ज्ञान रखता हो, किसी ऐसे योगी के साथ कुछ दिन बिताये जाए, जो इस मामले में सिद्ध हस्त हो और कुछ नहीं हो तो कुछ दिनों के लिए भारत चले जाय और वहीं पर किसी साधु सन्यासी, योगी तांत्रिक की खोज करें जो कि चमत्कार दिखाने में सिद्ध हस्त हो, जो अद्भुत चमत्कार दिखा सकता हो जिसके पास तन्त्र बल हो और जो वास्तव में ही कुछ कर गुजरने की क्षमता रखता हो।

इन्हीं राजकुमारियों में मिस एनैल का नाम छन-छन कर बाहर आ रहा था इसके प्रमुख कारण थे एक तो मिस एनैल अत्यधिक सुन्दर और आकर्षक थी, उसके बारे में कहा जाता है कि विधाता ने बहुत फुरसत के समय उसकी रचना की है, सैकड़ों हजारों आस-पास के राजकुमार और राज-घराने के लोग उसकी झलक देखने के लिए तरस कर रह जाते थे, उसके चेहरे में कुछ ऐसा आकर्षण और चमक थी कि जो भी एक बार उसे देखता वह अपने आप ही ठगा सा रह जाता, पूरे पेरिस में उसके सौन्दर्य की चर्चा थी और राजघराने के बाहर सैकड़ों हजारों युवक घण्टों उसकी एक झलक देखने लिये खड़े रहते जब वह बाहर

निकलती तो पुलिस की कड़ी सुरक्षा व्यवस्था होती, कई बार तो सैकड़ों युवक उस रास्ते पर बैठ जाते जिस रास्ते से मिस इवैल की कार जाने को होती, उनके मन में और कोई भाव नहीं होता, केवल एक ही इच्छा होती कि एक बार मिस इवैल को, उसकी एक झलक को क्षण मात्र के लिए ही सही, देख लिया जाय उन पर पुलिस के डंडों का कोई असर नहीं पड़ता और आखिर हार मान कर मिस इवैल को एक सैकण्ड के लिए कार से बाहर आना पड़ता और इन युवकों को दर्शन दे कर कृतार्थ करना पड़ता और मिस इवैल को देखकर वे युवक धन्य धन्य हो उठते और विनम्रतापूर्वक रास्ता दे देते।

परन्तु इवैल का मन इन विषय वासनाओं की ओर कभी नहीं लगता भगवान ने उसे जवानी दी थी और भर भर कर सौन्दर्य दिया था परन्तु उसके चित पर कोई युवक चढ़ा ही नहीं था उसके मन में इन युवकों के प्रति कोई विशेष आकर्षण था ही नहीं, उसे यह ज्ञात था कि मुझ पर मर मिटने के लिए सैकड़ों हजारों युवक लालायित हैं, मेरी एक झलक पाने के लिए ये राजकुमार तरसते हैं और केवल फ्रांस से ही नहीं अपितु पूरे संसार के राज घरानों के युवक शादी के लिए प्रस्ताव भेज रहे थे, पर इवैल के मन में तो भारतीय तन्त्र के प्रति एक अजीब सा आकर्षण और सम्मोहन था, उसकी हर समय यह इच्छा बनी रहती कि मैं उड़ कर भारत चली जाऊं और हिमालय की कंदराओं में निवास करने वाले किसी ऐ

मेरे बेटे ने वशीकरण सीखा और....और....

पहले मैं नहीं जानता था कि आज के युग में तन्त्र मन्त्र जीवित है, और उनके माध्यम से आश्चर्यचकित कार्य किये जा सकते है, मेरा जवान लड़का एक प्रकार से निकम्मा सा है, न तो वह व्यापार की तरफ ध्यान देता है, और न व्यापारिक कार्यों में रुचि लेता है, इससे मैं कभी कभी बड़ा खिन्न रहता हूं, बात करने की उसे तमीज नहीं, क्रोध इतना कि बात बात पर उबल पड़ता है, और कोई भी यदि उससे एक बार बातचीत कर लेता है तो दूसरी बार उससे बात करने की उसे इच्छा नहीं होती।

चेहरा और शरीर भी कोई विशेष सुन्दर और आकर्षक नहीं है, मेरी ही तरह थोड़ा सा भारी शरीर और सांवला सा साधारण नाक नक्श का चेहरा है, किसी भी प्रकार से उसके शरीर पर, चेहरे पर या वाणी में लावण्य बोध नहीं है, कभी कभी वह अपने कमरे में बैठा रहता, सामने कुछ तांबे के यंत्र रखे रहता और चुप प मंत्र जाप करता रहता, पर मुझे तो कभी कोई सिद्धि दिखाई दी नहीं और मैं इन सब को बकवास ही समझता था।

एक दिन वह जोधपुर चला गया और लगभग महीने भर बाद लौटा, शायद जोधपुर से जयपुर, उदयपुर आदि घूमने निकल गया होगा, आया तो उसने अपने कमरे में एक विशेष प्रकार का यन्त्र रखा और रोज रात को स्नान कर पीली धोती पहिन कर हकीक माला से मंत्र जाप करत रहता, कभी कभी तो वह पूरी रात ऐसा करता रहता, जहां तक मुझे स्मरण है, पूरी बम्बई में उसक कोई संगी साथी या मित्र नहीं था, और फिर ऐसे साधारण रूप रंग वाले अनाकर्षक व्यक्ति का संगी साथी हो भी कौन सकता है?

लगभग उसने ग्यारह दिन तक साधना की और साधना के बाद मैंने देखा कि उसके चेह

योगी की शिष्या बनूं जो अपने आप में उच्चकोटि का तांत्रिक हो, जिसके पास अपूर्व शक्तियां हों, जो चमत्कारों का भण्डार हो और उसके पास से कुछ ऐसा सीखा जाय जो यूरोप में और फ्रांस में धूम मचा दें, वह अपने जीवन में कुछ ऐसा करना चाहती थी जिससे केवल फ्रांस में ही नहीं अपितु पूरे संसार में अपना नाम हो, और यह तभी संभव था जब वह कुछ ऐसा कर गुजरे जिसको देख कर लोग दांतों तले उंगली दबा दें, और उसने भारतीय तांत्रिक ग्रन्थों में और भारतीय तांत्रिकों में रुचि लेना प्रारम्भ किया, जहां से भी और जो भी ग्रन्थ मिल जाता वह उसे बड़े चाव से पढ़ती, भारतीय दूतावास ने भी सम्पर्क स्थापित कर ऐसे लोगों का [illegible] करने की कोशिश की जो कि इस विद्या में माहिर हों, ऐसे तांत्रिक ग्रन्थ मंगवाये जो प्रामाणिक थे, और जिनमें तन्त्र की महत्वपूर्ण क्रियाएँ स्पष्टता के साथ अंकित थीं।

और उसने यह निश्चय कर लिया कि मुझे हर हालत में भारतीय तन्त्र विद्या सीखनी है और इस क्षेत्र में कुछ कर गुजरना है।

अंगारों पर नृत्य

और इन तांत्रिक ग्रन्थों को छानते खंगालते एक स्थान पर उसने पढ़ा कि कामाक्षा मन्दिर के सामने नव-रात्रि के दिन वहां के कुछ विशिष्ट जानकार बीस

पर एक विशेष प्रकार की चमक है और आंखों में आकर्षण शक्ति भी, मैंने इस तरफ कोई ध्यान नहीं दिया धीरे धीरे उसके मित्रों की विशेष कर लड़कियों की संख्या बढ़ने लगी, वे यदाकदा घर पर आ जाती और घन्टों बातें करती रहती, टेलीफोन हर समय खड़कता ही रहता, मैं आश्चर्यचकित था, जब कि मैं हाथ खर्च के लिए महीने में दो सौ/तीन सौ रुपये से ज्यादा नहीं देता: पर अब उसे पैसों की कमी नहीं थी, और वह किसी को भी प्रभावित करने की क्षमता प्राप्त कर चुका था, एक बार तो कठिन व्यापारी से व्यापारिक समझौता नहीं हो रहा था व बड़ा हठी और घाघ था, तो लड़के ने कहा मैं इस व्यापारी को अपनी शर्तों पर और अपनी इच्छानुसार मनवा लूंगा, मैंने सोचा यह कैसे संभव हो सकता है, पर एक दिन सुबह लड़का उसकी दुकान पर गया और घन्टे भर बाद ही वह उस सेठ को ले कर मेरे प्रतिष्ठान में आया और वह अड़ियल सेठ मेरी ही शर्तों पर व्यापारिक सम-झौते पर हस्ताक्षर कर चला गया, मैं आश्चर्यचकित था, अपने इस निकम्मे पुत्र पर जिसने असंभव कार्य को संभव कर दिखाया, उसने कहा मैंने वशीकरण विद्या सिद्ध की है और मैं किसी को भी एक दो मिनट में ही अपने वश में कर सकता हूं और उससे मन चाहा कार्य करवा सकता हूं।

इसके बाद मैंने कई बार इसको अनुभव भी किया, उसके मित्रों की श्रेणी में व्यापारिक पुत्र थे तो सुन्दर आकर्षक अभिनेतियां भी, जिसको देखने के लिए लोग तरसते थे, उसकी वजह से मेरा परिचय क्षेत्र तो बढ़ा ही, जब भी कोई कठिन व्यापारिक अनुबन्ध करना होता, या कोई किसी उच्च अधिकारी से काम निकालना होता तो मैं उसे ही भेजता और वह तुरन्त कार्य सम्पन्न कर लौट आता, वास्तव में ही वह मुझ से भी ज्यादा व्यापारिक सफलता पा चुका था।

और मैंने पहली बार अनुभव किया कि आज के युग में भी वशीकरण विद्या बिल्कुल सही प्रामाणिक है और इससे किसी को भी जीवन भर के लिए अपने वश में किया जा सकता है, और उससे मनोवांछित कार्य सम्पन्न करवाया जा सकता है।

फीट लम्बी, दस फीट चौड़ी अंगारों की खाई बनाते हैं और वे उन पर नृत्य करते हैं, ठीक उसी प्रकार से जैसे कि वे [illegible] पर नृत्य कर रहे हों, उसने यह भी पता कि राजस्थान में आज भी कई स्थानों पर ऐसे भोपे हैं जो अंगारों पर नाचते हैं, और उनके पांव झुलसते नहीं या पांवों पर किसी प्रकार का कोई दाग नहीं पड़ता, उसने यह भी पता कि आबू अंचल में गरासिया जाति के भील आज भी देवी को प्रसन्न करने के लिए अंगारों पर

किसी भी क्षेत्र में सफलता के सात गुण

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में सफलता पाना चाहता है, वह चाहे नौकरी करने वाला हो या व्यापारिक क्षेत्र में कार्य करने वाला हो, वह चाहे डाक्टर हो, इन्जीनियर हो या कोई अन्य व्यवसाय में संलग्न हो, प्रत्येक व्यक्ति की यह आकांक्षा होती है कि वह अपने क्षेत्र में सफलता प्राप्त करे, पूर्णता प्राप्त करे और ऊंचाई पर पहुंचे।

इसके लिए वे भरसक प्रयत्न भी करते है, पर यह आवश्यक नहीं कि उन्हें सफलता ही मिले, प्रयत्न करने के बावजूद भी व्यापार नहीं बढ़ पाता या नौकरी में प्रमोशन नहीं हो पाता, या आर्थिक उन्नति में सफलता नहीं मिल पाती, इसके लिए समाज विज्ञानियों ने सफलता के सात गुण बताये है, जिनको अपनाने पर निश्चय ही आप अपने क्षेत्र में सफलता पा सकते है।

१– हमेशा सुसज्जित रहिये, आपका व्यक्तित्व ही आपकी पूंजी है, दूसरों के सामने आपका व्यक्तित्व ही आपको सफलता प्रदान करेगा, अतः जब घर से बाहर निकले तब शीशे में अपने आप को देख ले कि क्या आप सभी दृष्टियों से सुसज्जित है।

२– हमेशा अपने से उच्च स्तर के व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित कीजिये, सौ सामान्य की अपेक्षा एक उच्च स्तर का व्यक्ति ज्यादा सहायक हो सकता है, और आपको आगे बढाने में अनुकूलता प्रदान कर सकता है।

३– कंजूस मत बनिये, जहां पर जितना व्यय करना पड़े जरूर करिये इस बात का ध्यान रखिये कि मित्रता निभाने में त्यागवृत्ति आवश्यक होती है।

४– सर्वथा क्रोध रहित रहिये, सामने वाला कितना ही उत्तेजित हो आप अपने आप पर पूरा नियन्त्रण रखिये, आपकी यह अक्रोधता ही आपको सफलता प्रदान करेगी।

५– व्यसनों से सर्वथा दूर रहिये और किसी भी प्रकार के व्यसन के गुलाम मत बनिये, इससे आपका व्यक्तित्व निखरेगा।

६– नित्य एक नवीन मित्र बनाइये, आप अनुभव करेंगे कुछ ही दिनों में आपके पास मित्रों की एक काफी बड़ी संख्या हो गई है।

७– किसी भी क्षेत्र में पूर्ण सफलता पाने के लिए "सिद्धि साधना" सम्पन्न करिये, "सिद्धि साधना यन्त्र" के सामने नित्य एक माला मन्त्र जाप निम्न मन्त्र का करिये—

मन्त्र

ॐ मणिभद्रे हुं।

आप स्वयं अनुभव करेंगे कि आप प्रत्येक क्षेत्र में सफलता की ओर अग्रसर है।

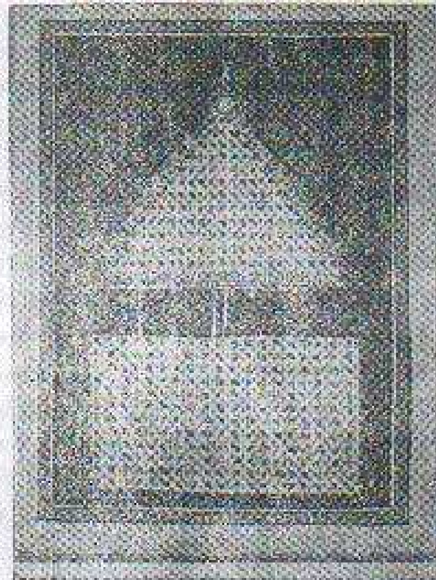
सकते है।

और उसके मन में एक विचार कौंधा कि यदि यह विद्या सीख ली जाय तो फ्रांस में तो क्या पूरे यूरोप में हंगामा सा मच जायेगा, दहकते हुए अंगारों पर नृत्य करना कोई मामूली बात नहीं है, जब चारों तरफ लपटें उठ रही हों, जब अंगारों के पास जाने से भी लोग हिचकिचा रहे हों ऐसी स्थिति में उन दहकते हुए अंगारों पर नृत्य करना अपने आप में एक अद्वितीय नृत्य ही कहेगा और सारी रात टेली विजन तथा अखबारों के द्वारा यह पूरे यूरोप में छा जायेगी।

और उसने पक्का निश्चय कर लिया कि मुझे यह विद्या सीखनी ही है, उसने इससे संबंधित कुछ और पुस्तकें मंगवाईं और उनका अध्ययन किया, उसे विश्वास हो गया कि इस प्रकार के प्रदर्शन में किसी प्रकार का कोई छल कपट या झूठ नहीं है, किसी प्रकार का रासायनिक लेप पांवों पर नहीं लगाया जाता, किसी भी प्रकार का कपड़ा या प्लास्टिक नहीं बांधा जाता, यह सब कुछ अपने आप में प्रामाणिक है और यथार्थ है, इसमें संदेह अंश को कोई गुंजाइश नहीं है।

और फिर भारतवर्ष में किसी एक स्थान पर नहीं अपितु कई स्थानों पर यदि इस प्रकार का नृत्य सम्पन्न किया जाता है तो यह विद्या कोई जुआ जैसी विद्या नहीं है अपितु भारतवर्ष की जानी पहिचानी विद्या है, यह बात है कि इसको सीखने के लिए या तो किसी ऐसे तांत्रिक की सेवाएं प्राप्त की जाय जो कि इस मामले में दक्ष हो या फिर भारत जा कर इन लोगों से मिला जाय जो इस नृत्य में दक्ष हों और उनसे यह विद्या सीखी जाय।

उसने पूरे फ्रांस में मालूम करवाया जो इस विद्या का जानकार हो परन्तु उसे कोई व्यक्ति साधु या सन्यासी नहीं मिला जो दावे के साथ यह कह सके कि वह अंगारों पर नृत्य कर सकता है, या नृत्य सिखा सकता है और अन्त में मिस एवैल ने निश्चय कर लिया कि भारत जा कर यह विद्या सीखी जा सकती है, वहीं पर इस विद्या



की बारीकियां ज्ञान हो सकती हैं, पहले भारतवर्ष चला जाय वहां जाने पर अपने आप कोई साधु सन्यासी या औघड़ मिल ही जायेगा जो कि इसे सिखा सकता हो, पर इसके लिए राजकुमारी का वेष और दम्भ छोड़ना होगा, सामान्य टूरिस्ट की तरह जाना होगा, और खुली आंखों से इस बात को समझना होगा और जब एवैल ने यह निर्णय कर लिया तो एक दिन उसने फ्रांस की धरती छोड़ दी और भारत के पालम हवाई अड्डे पर उतर गई।

उसने वायुयान में बैठे बैठे ही निश्चय कर लिया था कि मुझे आबू की ओर जाना होगा, जो कि राजस्थान में है और वहीं पर किसी मिरासिया जाति के लोगों से मिलना होगा, वह वहां से सीधी ट्रेन द्वारा आबू जा पहुंची और तीन चार दिन आबू की मनोहर प्रकृति ऊंचे ऊंचे पर्वत और हरी भरी उपत्यकाओं में अपनी सारी थकावट को दूर कर दी।

एक दिन वह गुरु शिखर जो कि अरावली पर्वत की सबसे ऊंची चोटी है से नीचे उतर रही थी कि उसे एक तरफ एक औघड़ सन्यासी बैठा हुआ दिखाई दिया, लम्बे लम्बे बाल बिखरी हुई जटाएं, सारे शरीर पर राख मली हुई और नाभी के नीचे एक टाट का टुकड़ा लपेटे हुए, श्वेल ने आश्चर्य से देखा कि जहां पर वह बैठा हुआ है, उसने अपने चारों तरफ लकड़ियां जला रखी है, उसके मध्य में बैठा हुआ, वह औघड़ निरन्तर मंत्र जाप में तल्लीन है श्वेल ने आश्चर्य के साथ देखा कि चारों तरफ सुलगती हुई जलती हुई लकड़ियों की आंच अपने आप में काफी तेज है, श्वेल लगभग छः सात फीट दूर खड़ी थी फिर भी वह उन सुर्ख जलती हुई लकड़ियों की आंच तीव्रता के साथ महसूस कर रही थी जब कि वह औघड़ उसके मध्य में बैठा हुआ निश्चल भाव से आंखें बन्द किये मन्त्र जाप कर रहा था, न तो उसके मन में किसी प्रकार का प्रदर्शन का भाव था और न किसी प्रकार का कोई दिखावा ही, वह अपने ही ध्यान में और अपनी ही साधना मग्न था।

श्वेल ने अनुभव किया कि मैं जो विद्या सीखना चाहती हूं वह विद्या इसके पास हो सकती है, यदि चारों तरफ धू धू करती हुई लकड़ियों और आग की लपटों के बीच मुस्कराता हुआ यह बैठ सकता है तो निश्चय ही अंगारों पर भी चल सकता है, मेरा जो लक्ष्य है मैं जो कुछ सीखना चाहती है वह इस औघड़ से सीखा जा सकता है और वह दूर पत्थर की एक चट्टान पर बैठ गई और एक टक उस औघड़ को निहारती रही।

लगभग एक घन्टे बाद जब लकड़ियां जलकर अंगारों मे परिवर्तित हो गई तो उस औघड़ ने आंखें खोली और उन अंगारों को–उन दहकते हुए अंगारों को मुट्ठी में ले ले कर मसलता रहा, ऐसा लग रहा था कि जैसे वह दहकते हुए अंगारे न हो अपितु छोटे मोटे कंकर पत्थर हो, जब वह उन अंगारों से खेल चुका तो अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ, और बिछे हुए मृगचर्म को बगल में दबाकर अंगारों को पावों से रोंदता हुआ बाहर निकल आया।

ज्यों ही वह औघड़ बाहर निकला श्वेल ने आगे ब कर प्रणाम किया, औघड़ ने एक नजर श्वेल को देखा उस मन पर उसकी सुन्दरता का कोई प्रभाव नहीं पड़ा बि एक तरफ चल दिया, पहली बार श्वेल ने अपने सौन्द का अपमान अनुभव किया, पहली बार अपने यौवन परांजित होते हुए देखा, पर फिर वह हिम्मत क औघड़ के सामने जा खड़ी हुई और झुक कर चरणों पकड़ लिया।

औघड़ ने पूछा क्या बात है, क्या चाहती हो ?

भारत आने से पूर्व श्वेल ने काम चलाऊ हि भाषा सीख ली थी, अटकते अटकते बोली मैं-आप शिष्या होना चाहती हूं और अभी अभी जो कुछ देखा है वह विद्या आप से सीखना चाहती हूं।

औघड़ जोरों से हंसा, बोला तुम बहुत नाजुक और ये साधनाएं बहुत कठोर है, तुम्हारा शरीर ऐ साधनाओं का बोझ कैसे सहन [क]रेगा?

श्वेल ने उत्तर दिया मैं आपकी हर कसौटी पर ख उतरुंगी और आप जिस प्रकार से भी मुझे साध सिखायेंगे, उसी प्रकार से सीखने का प्रयत्न करूंगी फ्रांस से आई हूं, मेरा नाम श्वेल है और मैं केवल य विद्या सीखने के लिए फ्रांस से चलकर भारतवर्ष पहुं हूं।

औघड़ ने श्वेल की बातों में सत्यता अनुभव उसकी आंखों में दृढ़ निश्चय देखा और अपने पीछे के लिए कह दिया।

औघड़ वहां से चलता हुआ, श्मशान में आकर गया, श्वेल भी उस श्मशान में पहली बार एक औ के पास बैठी थी, फिर भी उसके मन में किसी प्रकार भय या संकोच नहीं था, उसके मन मे एक संकल्प हृदय में दृढ़ निश्चय था और उसे विश्वास था कि अवश्य ही इस साधना को सिद्ध कर लुंगी।

र्स्वेल लगभग एक महीने तक उस औघड़ के पास श्मशान में ही रही, औघड़ जो भी लाता उसकी एक मोटी सी रोटी बना देता, जो औघड़ खाता, र्स्वेल भी वह खाकर सन्तोष अनुभव करती, बड़ा कठोर नियन्त्रण था औघड़ का, बड़ी कठ साधना थी अंगारों पर चलने की, और र्स्वेल ने हिम्मतपूर्वक उस साधना को सीखने का प्रयत्न किया, उसने सबसे पहले प्राणायाम किया सौ श्वास कुम्भक रेचक का अभ्यास किया, पानी का मद्यतुल्य बनाने का अभ्यास किया और फिर मुख्य साधना प्रारम्भ की।

र्स्वेल लगभग चालीस दिन तक उस औघड़ के साथ रही, इन चालीस दिनों में उसने पंचाग्नि तप किया, अग्नि को सिद्ध किया अंगारों पर खड़े होने का अभ्यास किया, अंगारों को हाथ में ले कर खेलने की क्रिया सम्पन्न की और दहकते हुए अंगारों पर लेटने उठने नाचने का सफल अनुभव प्राप्त किया, और फिर औघड़ से विदा ली।

औघड़ तो औघड़ था न तो र्स्वेल के आने में प्रसन्नता प्रकट की और न जाने का उसे दुख हुआ, उसने सहर्ष

आप में अपराजिता प्रतिभा है,
उसे उजागर कर सकते है विपश्यना साधना से।

जैन धर्म में विपश्यना साधना का अत्यधिक महत्व है, विपश्यना का मतलब है, अपने मन को बराबर मांजते रहना और उस पर कठोर नियंत्रण करना।

हकीकत यह है कि मनुष्य का मन पर नियंत्रण नहीं होता, इसलिए वह कभी कामी हो जाता है, कभी उसमें क्रोध की मात्रा बढ़ जाती है, कभी वह लालच में आ जाता है और इस प्रकार मन के स्वच्छ दर्पण पर इन काम, क्रोध, लोभ, मोह की धुंधली सी परत छाती रहती है, और धीरे धीरे मन धुंधला सा हो जाता है और व्यक्ति की आध्यात्मिक और साधनात्मक प्रतिभा समाप्त हो जाती है, वह केवल कामुक, भोगी और अय्याश बन कर रह जाता है, साधना में उसको सफलता नहीं मिल पाती, धीरे धीरे उसकी मनुष्यता समाप्त हो जाती है इन सारी खराब और विपरीत स्थितियों को अनुकूल बनाया जा सकता है, विपश्यना साधना से।

धर्माचार्यों ने बताया है कि रोज रात्रि को सोते समय अपने दिन भर के किये गये दुष्कर्मों को याद कर लेना चाहिए और प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि भविष्य में ऐसे दुष्कर्म नहीं करूंगा इसी प्रकार प्रातःकाल भी यही क्रिया अपनानी चाहिए, इससे धीरे धीरे चित्तवृत्तियों में सुधार होता है, और दिन भर मन पर जो धुंधलापन छाता है वह दूर हो जाता है, धीरे धीरे इसका अभ्यास बढ़ता जाता है और एक दिन ऐसा आता है कि उसका मन पवित्र, स्वच्छ और दर्पण की तरह निर्मल हो जाता है, ऐसी स्थिति होने पर वह गलत कार्यों की ओर नहीं बढ़ता उसके हाथों से गलत काम होते ही नहीं, बुरे रास्ते पर पांव रखते ही उसका मन धिक्कारने लग जाता है, कि तुम यह गलत काम करने जा रहे हो और वह उन बुराइयों से बच जाता है, इस प्रकार धीरे धीरे व्यक्ति काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से परे हो कर पूर्ण शुद्ध चैतन्य एवं निर्मल हो जाता है और ऐसा ही व्यक्ति साधना क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है।

विदा दे दी, और एवैल बिना एक क्षण भी गंवाये भारत से फ्रांस की धरती पर उतर गईं।

एवैल ने यह निश्चय किया कि मुझे अभूतपूर्व नृत्य प्रस्तुत करना है एक ऐसा नृत्य जो पूरे संसार में तहलका मचा दे और उसने विश्व प्रसिद्ध ग्लोब एडवरटाईजिंग की सेवाएं प्राप्त की और एक दिन निश्चय कर लिया कि फ्रांस के प्रसिद्ध बोर्दन स्टेडियम में वह चालीस फीट लम्बे बीस फीट चौड़े और दस फीट गहरे गड्ढे में दहकते हुए अंगारे भर कर उस पर नृत्य प्रस्तुत करेगी, इसके लिए उसने तारीख भी निश्चित कर दी, २४ अगस्त १९८७ सायं ५ बजे।

एवैल....और वह भी दहकते हुए अंगारों पर नृत्य जिसने भी सुना, सन्न रह गया, यह कैसे संभव है, एवैल को तो देखने के लिए लोग सैकड़ों डालर खर्च करने के लिए तैयार थे, और फिर वह एवैल अंगारों पर नृत्य प्रस्तुत करती है तो वह तो अपने आप में अद्वितीय नृत्य होगा, कुछ अखबार वालों ने इसे बेवकूफी भरा कदम बताया तो कुछ ने इसे असंभव बताया, कुछ ने लिखा कि कि यह एक ट्रिक हो सकती है।

एवैल ने आठ लोगों की एक कमेटी बना दी, टैली-विजन के द्वारा एनाउंस करवा दिया कि नृत्य के समय उन विशेषज्ञों के सामने ही वह अपने शरीर का परीक्षण करवायेगी और यह बता देगी कि उसने न तो किसी प्रकार की ट्रिक का इस्तेमाल किया है और न किसी प्रकार के रसायन का लेप हाथों और पैरों पर किया है, कमेटी जांच करके जब पूरी तरह से प्रामाणिक कर देगी तभी वह नृत्य प्रस्तुत करेगी।

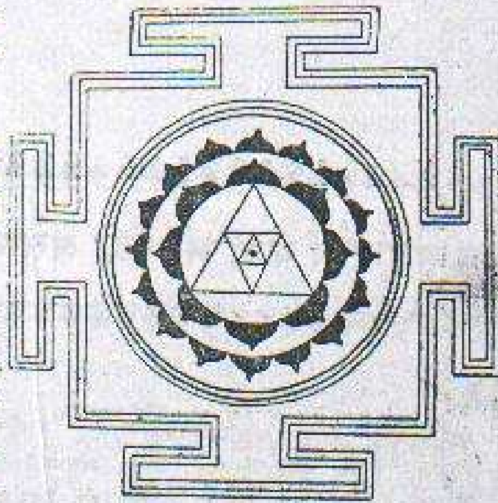
इस बयान से तो भूकम्प सा मच गया, अब तो शक करने की कोई गुंजाइश भी बाकी नहीं बची थी, अखबार वालों की बोलती बन्द हो गई थी और मात्र तीन दिनों में ही दो महीने पहले ही पूरे स्टेडियम के टिकट मंहगे दामों पर बिक गये थे, एक एक टिकट ब्लेक में बिक रहा था और ऊंचे अधिकारी को भी एक टिकट पाने के लिए आरजू विनती करनी पड़ रही थी।

दहकते हुए अंगारों पर गुलाब का फूल

और २४ अगस्त ८७ का सायंकाल, पूरा स्टेडियम खचाखच भरा हुआ था, लगभग पूरे संसार की टेलिविजन टीमें इस अद्भुत नृत्य को कैमरे में बन्द करने के लिए प्रस्तुत थीं टेलिविजन चैनल के मालिकों ने पहले से ही उस चैनल पर सीधा प्रसारण करने का अधिकार प्राप्त कर लिया था, स्टेडियम के बाहर कड़ी सुरक्षा व्यवस्था थी, चालीस फीट लम्बा बीस फीट चौड़ा और दस फीट गहरा गड्ढा पहले से ही खोद कर विशेषज्ञों को दिखाया जा चुका था और ठीक समय पर उसे दहकते हुए अंगारों से मजदूरों द्वारा भर दिया गया था, फिर एवैल के सारे शरीर का निरीक्षण किया गया, खासतौर से कपड़ों का हाथ पैरों का तो सूक्ष्मता से निरीक्षण किया गया और उन्होंने बाहर आकर एनाउन्स किया कि एवैल ने पावों पर या शरीर पर किसी प्रकार का कोई लेप या रसायन नहीं लगाया है और पूरा स्टेडियम तालियों की गड़गड़ाहट से भर गया।

ठीक पांच बजे एवैल मन्थर गति से कमरे से बाहर निकली, लोग आंखें फाड़े उस सुन्दर भावुक, कोमल गुलाब के पुष्प को चलते हुए देख रहे थे और साथ ही साथ वे देख रहे थे दहकते हुए अग्नि कुण्ड को, जिसके अंगारे जोरों से दहक रहे थे और उनमें से एक एक फीट की लपटें बाहर निकल रही थीं, उस कुण्ड की आंच इतनी तेज थी कि दस फीट दूर भी खड़ा होना मुश्किल था।

एवैल बराबर आगे की ओर बढ़ रही थी और टेलि-विजन कैमरे उसके एक एक क्षण को कैद कर रहे थे सारा स्टेडियम स्तब्ध सा देख रहा था, प्रेस गैलरी खचाखच भरी हुई थी और एवैल बिना किसी हिचकिचाहट के आगे की ओर बढ़ रही थी, स्टेडियम का आलम यह था कि उसमें तिल रखने की भी जगह नहीं थी ऐसे



लग रहा था कि जैसे सारा यूरोप उमड़ पड़ा हो, यूरोप ही नहीं अपितु संसार के ऊंचे से ऊंचे श्रीमन्त इस दृश्य को देखने के लिए विशेष रूप से चलित आए थे।

दहकते हुए अग्नि कुण्ड के पास कुछ क्षणों के लिए इवैल रुकी, उसने अग्नि कुण्ड की परिक्रमा की और सारे उपस्थित समुदाय को प्रणाम किया और उसके बाद अग्नि कुण्ड में नंगे पांव उतर गई।

सारा स्टेडियम सांस रोके हुए दृश्य देख रहा था उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि इतना कोमल शरीर इस दहकती हुई आंच पर अंगारों पर मचल सकता है, पर इवैल निश्चिन्त थी उसे नृत्य का पहले से ही अनुभव था और वह तल्लीनता के साथ इन अंगारों पर नृत्य कर रही थी, जैसे कि कोई सुन्दरी मखमली कोमल गलीचे पर नृत्य कर रही हो, वह अपने हाथों में दहकते हुए अंगारे लेती, उछालती, पांव से ठोकर मारती और बराबर नृत्य करती जा रही थी।

अपने आप में अद्भुत दृश्य था अविस्मरणीय क्षण था जो सम्भव ही नहीं हो सकता था वह आंखों के सामने संभव हो रहा था, लोगों को विश्वास नहीं हो रहा था वह आंखें मल मल कर देख रहे थे और इवैल सुन्दर सुकुमार इवैल मस्ती के साथ थिरक रही थी, मचल रही थी, नृत्य कर रही थी।

लगभग एक घन्टे तक नृत्य चला और सारा स्टेडियम स्तब्ध सा यह नृत्य देखता रहा, एक घन्टा कब बीत गया कुछ पता ही नहीं चला, और पूरे सात घन्टों के बाद इवैल धीरे धीरे अग्नि कुण्ड के बाहर निकली, अंगारे अब भी दहक रहे थे और उसकी लपटें उठ रही थी पर इवैल बिल्कुल शान्त थी निर्विकार थी उसने चारों तरफ उपस्थित समुदाय को भारतीय मुद्रा में प्रणाम किया और सारे स्टेडियम के लोग खड़े हो कर तालियां बजाते रहे, तालियों के शोर में सारी मॉस नगरी डूब सी गई थी

और इस दृश्य को केवल स्टेडियम में बैठे हुए लोग ही नहीं देख रहे थे अपितु पूरे संसार के लोग टेलिविजन के पर्दे पर इस अद्भुत नृत्य को सांस रोके देख रहे थे।

और दूसरे दिन अखबार वालों ने बड़ी बड़ी सुर्खियों में इवैल के नृत्य की पूरी पूरी प्रशंसा की, इसे अद्वितीय नृत्य बताया, बताया गया कि इवैल अपने आप में अद्वितीय है और इवैल एक ही नृत्य से पूरे विश्व में प्रसिद्ध हो गई, इतनी अधिक आय हुई कि घर में रखने के लिए जगह ही नहीं रही।

इसके बाद यूरोप के अन्य स्थानों पर तीन नृत्य प्रस्तुत किये फिर बाद में इवैल का मन इस भौतिकता से ऊब गया, उसने प्रसिद्धि, सम्मान, यश, और दौलत का अम्बार अपनी आंखों से देखा और फिर वह एक दिन बिना किसी को बताये चुप चाप भारत निकल आई और गेरूए वस्त्र धारण कर सन्यासी बन गई।

आज कल इवैल आबू के महत्वपूर्ण आश्रम में तन्त्र की विशिष्ट साधनाएं सीखने में तल्लीन है।

❋

अब संसार में कोई भी स्त्री असुन्दर नहीं रह सकती

सौन्दर्य अपने आप में अत्यन्त ही मधुर और आनन्ददायक शब्द है आज से ही नहीं वैदिक काल से स्त्रियां अपने सौन्दर्य को बढ़ाने के लिए प्रयोग करती रही है, यजुर्वेद के कई मंत्रों में इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि उन्होंने सौन्दर्यमय बनने के लिए जहां देवताओं से प्रार्थना की वहीं विविध अलंकरणों से अपने आपको सजाने का भी प्रयत्न किया।

धीरे धीरे सौन्दर्य के मान दण्ड बनने लगे और पौराणिक काल में आते आते स्त्रियों के सौन्दर्य पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा, प्रत्येक स्त्री यह चाहती थी कि वह दूसरों के सामने सुन्दर दिखे, प्रत्येक स्त्री के मन में यह आकांक्षा थी कि वह इस प्रकार मन्त्रों का प्रयोग करें, जिससे उसकी असुन्दर काया सुन्दरता में बदल जाय, इस समय तक आयुर्वेद का प्रचलन काफी हो गया था, और उनके मानस में यह भी स्पष्ट हुआ था कि आयुर्वेद से संबंधित जड़ी बूटियों के सेवन से भी सौन्दर्य को निखारा जा सकता है।

इसके बाद तो इस पर नित्य नवीन शोध होती रही, नित्य नवीन प्रयोग होते रहे, और आयुर्वेद की उन जड़ी बूटियों को ढूंढ कर निकाला जाने लगा जिसके माध्यम से सौन्दर्य को बढ़ाया जा सके, जिसके माध्यम से पूर्ण स्वस्थ शरीर बनाया जा सके, और जिसके माध्यम से स्वस्थता और आकर्षण प्रदान किया जा सके।

कालीदास ने सौन्दर्य के—पूर्ण सौन्दर्य के बारह गुण बताये है जो स्त्री इन बारह गुणों से युक्त है, वही वास्तव में सौन्दर्यमयी कही जा सकती है, एक महत्वपूर्ण श्लोक में कालीदास ने अपनी प्रेमिका को सौन्दर्य के इन गुणों को बताते हुए कहा कि आज और भविष्य में भी इन बारह गुणों से युक्त स्त्री ही सौन्दर्यमयी कहला सकती है।

(१) जिसका कद पूरा हो अर्थात् लगभग ५ से सवा पांच के आस पास कद श्रेष्ठ कहलाता है।

(२) शरीर में फालतू मांस न हो, परन्तु पूरा शरीर पौष्टिक हो।

(३) जिसका वक्षस्थल और कूल्हे बराबर नाप के हो पर कमर सर्वथा पतली हो, आधुनिक समय में यों कहा जा सकता है कि यदि वक्षस्थल और कूल्हे ३६ इन्च के हो तो कमर २४ इन्च के आस पास होनी चाहिए।

(४) सिर के बाल लम्बे, घने, चमकीले और लहराते हुए हो, ऐसा लगे कि जैसे पर्वत शिखर से कोई झरना नीचे गिर रहा हो।

(५) अण्डाकार चेहरा हो, तथा चेहरे पर किसी प्रकार का कोई दाग धब्बा या मस्सा न हो।

(६) आंखें बड़ी बड़ी सुन्दर और सम्मोहन युक्त हो, पलकें भव्य हो, जिसके माध्यम से वह किसी को भी आकर्षित करने में सक्षम हो।

(७) सारा शरीर गोरा हो जिस प्रकार दूध में

केसर डालने पर दूध का रंग जैसा केसरई गोरा हो जाता है ऐसा ही रंग सौन्दर्य की परिभाषा माना गया है।

(८) उन्नत उरोज, समतल पेट और भारी जंघाएं सौन्दर्ययुक्त मानी गई है।

(९) शरीर पर बाल नहीं के बराबर हो और सारा शरीर गोरा और आकर्षक हो।

(१०) उसकी वाणी अत्यधिक मधुर और आनन्द प्रदान करने वाली हो साथ ही साथ उसके उठने बैठने और चलने का एक विशिष्ट तरीका हो जिससे कि सामने वाला सम्मोहित हो सके।

सौन्दर्य बल्ली

यह एक महत्वपूर्ण पौधा है और पौराणिक काल से इसे "सौन्दर्य बल्ली" के नाम से पुकारा जाता है, इस पौधे की ऊंचाई लगभग तीन साढे तीन फीट होती है, इसके पत्ते लम्बे नुकीले और पीलापन लिये हुए हरे रंग के होते है, इसका तना अत्यधिक चिकना और आकर्षक होता है, इस पर बादाम के आकार के गोल फल लगते है जिसमें गुठली नहीं होती, बसन्त ऋतु में साल में एक बार इस पर सुनहरे रंग के पुष्प खिलते है, जिससे यह अत्यधिक सुन्दर पौधा दिखाई देता है, इन फूलों की यह विशेषता है कि रात्रि में ये पुष्प दीपक की तरह टिम टिमाते हैं और रोशनी देते है जिससे दूर से ही इस पौधे की पहिचान हो जाती है।

इस पौधे के आस पास की भूमि तेल युक्त हो जाती है ऐसा लगता है कि जैसे पौधे के चारों ओर तेल बिखरा गया हो, यदि पास की मिट्टी उठाई जाय तो तैलीय अनुभव होती है, इसके तने के चारों ओर कोई न कोई सांप लिपटा रहता है या तने को खोदते समय नीचे से सांप अवश्य ही निकलता हुआ दिखाई देता है, इसी से अमृत बल्ली पौधे की पहिचान होती है।

यह सांप अत्यधिक जहरीला, काला, और लम्बा होता है, फुफकार छोड़ने पर पास में खड़ा व्यक्ति जहर के प्रभाव से समाप्त हो जाता है, यदि यह सांप किसी को काट ले तो निश्चय ही उसकी मृत्यु हो ही जाती है, इस पौधे की जड़ को प्राप्त करने के लिए सांप को निकालना या पकड़ना जरूरी होता है।

लोहे का एक पिंजरा बना कर व्यक्ति पास में ही बने मचान पर बैठ जाता है, और फिर लोहे की किसी नुकीली छड़ से पास की धरती को खोदने की प्रक्रिया शुरू की जाती है, थोड़ी ही देर में जब फुफकारता हुआ सर्प बाहर निकलता है तो उस पर वह लोहे का पिंजरा डाल दिया जाता है जिससे वह सांप कैद हो जाता है, और फिर इस सांप को पिंजरे में ही कैद कर दूर ले जाया जाता है और तब इस पौधे की जड़ को खोद कर बाहर निकाली जाती है।

यह मणिधर सर्प होता है, कुछ लोग इसे मार कर इसके मस्तिष्क से मणि निकाल लेते है जो सर्पमणि कहलाती है, और जिसे संसार की दुर्लभ मणी कही जाती है, यह रात में हीरे की तरह चमकती है।

(११) ललाट चौड़ी, नुकीली नासिका, गुलाब की पंखुड़ियों की तरह होंठ और थोड़ी सी निकली हुई ठुड्डी आकर्षक मानी गई है।

(१२) सारा शरीर एक विशेष [illegible] में ढला हुआ सा हो, जिससे देखने वाले को कोई खामी नजर न आवे।

उपरोक्त बारह विशेषताएं, सौन्दर्य की विशेषताएं मानी गई है, और इन विशेषताओं से युक्त तरुणी ही सौन्दर्यमयी कही जा सकती है।

कालीदास के समय में वैश्याओं को नगर वधु कहा जाता था, वे बदचलन नहीं होती थी अपितु जीवन भर किसी एक पुरुष की ही होकर रह जाती थी, और वह पुरुष उसके रहन सहन, खान पान और जीवन निर्वाह का पूरा व्यय उठाता था वह उस समय में सभ्यता का एक माप दण्ड माना जाता था, उच्च वर्ग के लोग इस प्रकार नगर वधु से युक्त होकर अपने आप को गौरवशाली महसूस करते थे, जिसकी उप पत्नी या नगर वधु या प्रेमिका जितनी ही ज्यादा सुन्दर होती थी, समाज में उसका स्तर उतना ही ऊंचा उठ जाता था।

उस समय दिव्यांगना की चर्चा धारा नगरी में होने लग गई थी, मात्र १७-१८ वर्ष की आयु में ही उसकी चर्चा और उसके सौन्दर्य की बात चीत जन साधारण में फैलने लग गई थी, इससे पहले ही कालीदास दिव्यांगना की माँ के पास पहुंचे और दीर दिव्यांगना को अपनी प्रिया बनाने का प्रस्ताव रख दिया।

कालीदास जैसा समाज का प्रतिष्ठित और सम्माननीय व्यक्ति दिव्यांगना को अपना ले, इससे ज्यादा आनन्द की क्या बात हो सकती है, दिव्यांगना की माँ ने सहर्ष स्वीकृति दे दी।

कालीदास अन्तःपुर में पहुंचे और पहली बार दिव्यांगना को देखा,वास्तव में ही वह सौन्दर्य की साकार पुंज थी, सौन्दर्य के जो मानदण्ड होते है, उस पर वह लगभग खरी उतर रही थी, परन्तु कालीदास तो कालीदास ही थे, उन्होंने मन में सोचा कि दिव्यांगना एक ऐसी सौन्दर्य पुंज बने, जिसे पाने के लिए हजारों सम्माननीय व्यक्ति तड़फते रह जाय, जिसकी झलक देखने के लिए घन्टों इन्तजार करें जो अपने आप में बेदाग सौन्दर्य हो, पर इसके लिए कुछ और भी उपाय जरूरी है, और उसने दिव्यांगना को कहा निश्चय ही तुम सौन्दर्यमयी हो, और अपने आप में प्रबल आकर्षण रखती हो, परन्तु तुम्हें यह स्मरण रखना है कि तुम कालीदास की गणिका हो, और ऐसी गणिका अपने आप में अद्वितीय होती है, मैं इसके लिए जल्दी ही कोई उपाय करूंगा और निश्चय ही मैं तुम्हें संसार की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी बना दूंगा, एक ऐसी सुन्दरी जो अपने आप में बेदाग और अद्वितीय हो, एक ऐसी सुन्दरी, जिसको देखने के लिए मनुष्य तो क्या देवता भी तरसे, एक ऐसी सुन्दरी जिसका नाम होंठों पर आते ही, युवक तड़फ कर रह जाय, और मैं तुम्हें ऐसा लावण्य देना चाहता हूं जो अपने आप में आश्चर्य चकित करने वाला हो।

उस समय आयुर्वेदाचार्य सुधन्वा का नाम धारा नगरी में ही नहीं अपितु पूरे भारतवर्ष में विख्यात था, आयुर्वेद का उन्हें अद्भुत ज्ञान था, कालीदास ने स्वयं उन्हें आजमाया था और अनुभव किया था सुधन्वा अपने अपने आप में अद्भुत वैद्यराज है, जिनके पास महत्वपूर्ण प्रयोग है।

कालीदास सीधे सुधन्वा के पास पहुंचे, कालीदास को अपने घर आया देख कर सुधन्वा गद्गद् हो गये, गले से मिलते हुए बोले, आज मैं और मेरा घर धन्य हो गया है जबकि आपके चरण यहां पड़े, परन्तु जरूर आप किसी विशेष उद्देश्य से आये होंगे, आप मुझे आज्ञा दें, अवश्य ही आपकी इच्छा को पूरी करने का प्रयत्न करूंगा।

कालीदास आसन पर बैठ गये और धीरे शब्दों अपने मन की बात, सुधन्वा को बता दी, कालीदास कहा, आप कोई ऐसी औषधि तैयार करें, जो अपने आ

में अद्वितीय हो, और मैंने अपने श्लोक में सौन्दर्य की परिभाषा लिखी है, सौन्दर्य के बारह गुण बताये हैं उस पर विश्वांगना खरी उतरे, यद्यपि इसमें कोई दो राय नहीं कि विश्वांगना सुन्दर है, आकर्षक है, सम्मोहक है परन्तु मेरे मन में तो कुछ और है, मैं तो यह चाहता हूं कि वह विश्व की अद्वितीय और अजेय सौन्दर्य शालिनी

सौन्दर्य वटिका

सुधन्वा ने जो फार्मूला सौन्दर्य वटिका के लिए प्रयोग किया था वह काफी वर्षों तक गोपनीय रहा, भारत के अधिकतर आयुर्वेदाचार्यों का प्रयत्न इस फार्मूले को प्राप्त करने से संबंधित था और उन्होंने इसकी खोज भी की।

पिछले दिनों मंडी (हिमाचल प्रदेश) में रहने वाले एक पंडित वैद्य को सुधन्वा की लिखी हुई एक पुस्तिका प्राप्त हुई है जिनमें कई नुस्खे लिखे हुए हैं, ये सभी नुस्खे पुरुष सौन्दर्य और विशेष कर नारी सौन्दर्य को उजागर करने के लिए हैं, इसी पुस्तिका में सौन्दर्य गुटिका का भी प्रयोग एवं विवरण दिया है जिसे मैं पत्रिका पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहा हूं।

सौन्दर्य वल्ली पौधे के पांचों मूल प्राप्त किये जायें, यदि सौ तोला सौन्दर्य वल्ली जड़ी हो तो पच्चास तोला तना का गूदा लिया जाय, पच्चीस तोले पत्ते, बारह तोले पुष्प तथा छः तोले उसके फल लिये जायें, और इन सब को छाया में सुखा दें, सूखने पर इन सब को अलग अलग पीस कर बारीक पाउडर बनावें।

फिर एक किलो हरे आंवले ले कर उसका छिलका तथा उसकी गुठली निकाल दी जाय, और फिर उनको दो किलो पानी में भिगो दें, तीन दिन तक पानी में भीगने के बाद उनको उस पानी में ही मसल कर एक रस कर दें और किसी मलमल के बारीक कपड़े में छान ले।

फिर उस पानी में जो मैंने सौन्दर्य वल्ली के पांचों मूल बताये हैं वे उसी क्रम से मिलाते हुए घोटते रहें और फिर इसमें जायफल, जावंत्री, हल्दी, विरोचन, लौंग, पाषाण भेद तथा रस कपूर बराबर मात्रा में ले कर बारीक कर इस में मिलावें और इसको अत्यधिक धीमी आंच में पकावे तथा लकड़ी की डण्डी से आंच पर इस घोल को घुमाते रहें, जब यह घोल गाढ़ा हो जाय, और पानी भाप बन कर उड़ जाय तब उसको किसी स्टील के पात्र में रख दें और जब गोली बनाने के लायक हो जाय तब चने के आकार की गोलियां बना ले।

सेवन करने से पूर्व छः दिन तक त्रिफला का चूर्ण ले कर पेट साफ कर ले और फिर नित्य दो गोली सुबह और दो गोली शाम सेवन करें, कम से कम यह दस दिन का कोर्स ले और ज्यादा से ज्यादा तीस दिनों का।

सेवन के समय खट्टी चीजें, तली हुई चीजें या गरिष्ठ भोजन न करें, तो वास्तव में ही इसके हाथों हाथ चमत्कारी परिणाम देखने को मिलते हैं।

बने जिसके सामने रम्भा, उर्वशी और मेनका भी तुच्छ लगने लगे, पर ऐसा सौन्दर्य मात्र आयुर्वेद के द्वारा ही संभव है, और मैं इसी लिए आपके घर पर उपस्थित हुआ हूं।

सुधन्वा ने कहा, मैंने इसका प्रयोग किया है, और जो कुछ आपने कहा है, जो कुछ आपके मन में है, तथा दिव्यांगना को जिस प्रकार से आप बनाना चाहते हैं, उसके अनुसार उसको सौन्दर्य युक्त बनाई जा सकती है, मैंने "सौन्दर्य वल्ली" पौधे के द्वारा सौन्दर्य गुटिका का निर्माण कर अपनी पुत्री पर ही प्रयोग किया था, और आप स्वयं इस प्रयोग का प्रमाण देख सकते है, ऐसा कहते कहते सुधन्वा ने अपनी पुत्री को आवाज दी, और ज्यों ही सुधन्वा की पुत्री सुवासिनी उपस्थित हुई, काली दास ठगे से रह गये, ऐसा लगा कि जैसे हृदय की धड़कन रुक गई हो, आंखे उसके चेहरे पर टिकी तो हटने का नाम ही नहीं ले रही थी, एक ऐसा सौन्दर्य पुंज सामने खड़ा था, जिसके आगे दिव्यांगना तुच्छ थी, नगण्य थी।

सुधन्वा के संकेत पर सुवासिनी अन्दर चली गई, और तब कालीदास चैतन्य हुए, संयत होते होते उन्हें कुछ समय लग गया, बोले सुधन्वा! वास्तव में ही आप अद्वितीय आयुर्वेदाचार्य है, मैंने आपके आयुर्वेद को पहली बार प्रत्यक्ष देखा है, और मैं ऐसा ही सौन्दर्य, ऐसा ही आकर्षण दिव्यांगना में चाहता हूं।

सुधन्वा ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया, मैं एक सप्ताह के भीतर भीतर संबंधित औषधि बना कर आपको दे दूंगा और इसकी सेवन विधि भी बता दूंगा, नित्य एक गोली सुबह और एक गोली शाम को लेने से कुरूप से कुरूप स्त्री भी संसार की श्रेष्ठ सुन्दरी बन सकती है; यह गुटिका ही ऐसी है, जिसके माध्यम से शरीर के रोग और दोष समाप्त हो जाते है, शरीर का भारीपन और बढ़ा हुआ मांस कम हो जाता है, वक्षस्थल अपने सही आकार में आ जाते है, और चेहरा बेदाग, लावण्य युक्त बन जाता है, यही नहीं अपितु इस गुटिका की यह विशेषता है, कि यदि कद छोटा होता है तो वह बढ़ कर एक निश्चित लम्बाई को प्राप्त कर लेता है; यदि बाल छोटे हो या चमकीले न हो या फटे हुए हो, तो वह लम्बे, आकर्षक और घने हो जाते है, इस गुटिका के द्वारा कमर का फालतू मांस दो तीन दिन में ही समाप्त हो जाता है, और आंखों के नीचे जो कालापन होता है, वह दूर हो जाता है, यही नहीं अपितु इस गुटिका की यह विशेषता है कि यह चमड़ी के काले या सांवले रंग को गोरे रंग में परिवर्तित कर देती है, इसलिए तो यह संसार की बहुमूल्य और अद्वितीय औषधि है, जिसका प्रयोग मैंने अपनी पुत्री पर किया है, और वह आपके सामने है, ।

कालीदास उठ कर चले गये, पर चौबीसों घंटे उनकी आंखों के सामने सुवासिनी का सौन्दर्य मंडराता रहता,

तंत्र द्वारा अद्वितीय सौन्दर्य प्राप्ति

आयुर्वेद के माध्यम से तो सौन्दर्य प्राप्त होता ही है, तन्त्र के माध्यम से भी आश्चर्यजनक सौन्दर्य प्राप्त किया जा सकता है।

मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त सौन्दर्य गुटिका प्राप्त कर ले और शुक्रवार की रात्रि को यह प्रयोग उस गुटिका के सामने प्रारम्भ करें, इससे अन्य उपकरणों की या दीपक आदि की जरूरत नहीं होती, केवल स्फटिक माला से मन्त्र जप पर्याप्त होता है, कुल छः दिन में सवा लाख मन्त्र जप किया जाय।

मन्त्र

ॐ रतिक्रियायै कामदेवायै मम अंगे उपांगे प्रविश्य सुदर्शनायै फट्।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है और इस प्रयोग को प्रत्येक पुरुष या स्त्री सम्पन्न कर सकती है।

क्षण के लिए भी सुवासिनी को भूल न सके, वास्तव में ही वह अद्भुत सौन्दर्य की साम्राज्ञी थी और जिसको देखने के बाद भुलाना संभव नहीं है,

सुधन्वा ने सौन्दर्यवल्ली पौधे को ढूंढ निकाला उस समय घने जंगलों में ऐसे पौधे प्रचुर मात्रा में थे और उसके पांचों मूल- जड़, तना, पत्ते, फल, और पुष्प लेकर उनको घोट कर मन्त्रोक्त जल में मर्दन किया और उससे तीस गोलियों का निर्माण किया जो चने के आकार की थी, और एक दिन सुधन्वा ने कालीदास को सम्मान पूर्वक बुला कर वे गोलियां उन्हें दे दीं और बता दिया कि इस गोली का सेवन नित्य प्रातः और सायं करना है।

कालीदास उन सौन्दर्य गुटिकाओं की मन्जूषा ले कर गणिका के पास गये, और उसे सोने के वर्क में लिपटी हुई वे गोलियां उसे दे दीं और उसकी सेवन विधि भी समझा दी।

दिव्यांगना ने उसी दिन से उन गोलियों का सेवन प्रारम्भ किया, कालीदास लगभग नित्य उसकी प्रगति देखने के लिए दिव्यांगना के यहां जाते रहते, और महसूस करते कि वास्तव में ही गोलियों का असर हो रहा है।

पर इसके बाद वे लगभग किसी अन्य कार्य में उलझ जाने के कारण पन्द्रह दिन तक दिव्यांगना के यहां नहीं जा सके, धारानगरी से बाहिर होने के कारण वे प्रगति भी नहीं पा सके, और यह एक ऐसा नाजुक मामला था कि किसी को कह भी नहीं सकते थे।

जब वे बाहर से वापिस लौटे तो स्नान आदि से निवृत्त होकर सबसे पहले दिव्यांगना के यहां पहुँचे, अन्तःपुर में जाते ही सामने दिव्यांगना को खड़े देखा, अपने आपमें अद्भुत और देवताओं को भी लजाने वाला सौन्दर्य था दिव्यांगना का, सारा शरीर जैसे बदल गया था, एक अद्भुत चमक, एक आश्चर्यजनक गति, और अनिन्द्य सौन्दर्य आ गया था, दिव्यांगना को देख कालीदास को सहसा अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ कि यह वही दिव्यांगना है जिसे पन्द्रह बीस रोज पहले छोड़ गये थे, हजार हजार गुना अन्तर आ गया था दिव्यांगना में, एक ऐसी विधाता की सृष्टि दिखाई दे रही थी दिव्यांगना में, कालीदास ठक् से खड़े के खड़े रह गये, उन्हें अपने शरीर का भी होश नहीं रहा, आंखें झपकने का नाम ही नहीं ले रही थी, कितना समय बीत गया, कुछ पता ही नहीं चला, वास्तव में ही इन गोलियों के सेवन से दिव्यांगना अद्भुत सौन्दर्यमयी बन गई थी, सुधन्वा की पुत्री से भी ज्यादा सौन्दर्ययुक्त, ज्यादा कामोत्तेजक और ज्यादा आकर्षण युक्त।

अचानक दिव्यांगना की वीणा के झन्कार की तरह आवाज सुनाई पड़ी-बैठिये।

कालीदास चैतन्य हुए, और वास्तविक स्थिति में आये, बोले दिव्यांगना, तुम वास्तव में ही अद्वितीय सौन्दर्यवती बन गई हो, इस समय पूरी पृथ्वी पर तुम्हारे जैसा सौन्दर्य और आकर्षण किसी के पास नहीं है, मनुष्य तो क्या ऊंचे से ऊंचा योगी, सन्यासी और देवता भी तुम्हारे सौन्दर्य का वेग सहन नहीं कर सकता, किसी को भी तुम विचलित करने की सामर्थ्य रखती हो, चेहरे पर एक ऐसा ओज, एक ऐसा सौन्दर्य और ऐसी आभा आ गई है, कि उसका वर्णन करना भी मेरे वश में नहीं है, तुम्हारे सौन्दर्य के आगे मेरी वाणी मूक है, वास्तव में ही तुम ताजे खिले हुए गुलाब से भी ज्यादा कोमल, सुगन्धित, आकर्षक और अद्वितीय हो,-और ऐसा कहते कहते कालीदास ने खड़े हो कर दिव्यांगना को अपनी भुजाओं में भर लिया।

इतिहास साक्षी है कि आने वाले समय में दिव्यांगना करोड़ों दिलों पर शासन करती रही, उसके सौन्दर्य की एक झलक पाने के लिए सेठ, श्रीमन्त और भद्रजन आंखें बिछाए रखते, उसकी एक आवाज पर अपना सब कुछ न्यौछावर करने के लिए युवक तैयार रहते, और दिव्यांगना भारतवर्ष की अद्वितीय सौन्दर्यमयी बनकर हमेशा हमेशा के लिए अपना नाम इतिहास में अंकित कर दिया।



इक्कीस वर्षीय भैरवी "हीनू" जिसके पास दुर्लभ तन्त्र है

वर्तमान काल ''तन्त्र काल'' कहलाता है, समय का चक्र बराबर घूमता रहता है, और उसी प्रकार से युग परिवर्तन होता रहता है, वर्षों पहले पूरे भारतवर्ष में तन्त्र का बोलबाला था और तांत्रिकों को भारतवर्ष में अत्यन्त ही सम्माननीय रूप से देखा जाता था, गुरु गोरखनाथ, मत्स्येन्द्र नाथ योगी भैरवानन्द स्वामी औघड़ानन्द आदि को आज भी हम सम्माननीय दृष्टि से देखते हैं जिन्होंने भारत की प्राचीन तन्त्र विद्या को जीवित रखा और हमारे पूर्वजों की ख्याति को सुरक्षित रूप से हमें प्रदान कर के गये।

पर बाद में कुछ तो पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति हम पर हावी हो गई और इन चीजों को ढकोसला तथा पाखण्ड माना जाने लगा, और फिर कुछ ऐसे पाखण्डी और ढोंगी तांत्रिक भी भारतवर्ष में चारों तरफ फैल गये जिन्होंने पेट पूजा को तन्त्र मान लिया, लम्बी लम्बी जटाएं, विचित्र वेशभूषा और ऊट पटांग कार्यों से जनता का विश्वास इन पर से हटने लगा, और तांत्रिक शब्द अपने आप में घटिया, डरावना, और घृणित बन गया।

पर फिर अब युग परिवर्तन हुआ है, भारत की जन चेतना में तांत्रिकों के प्रति आस्था पैदा हुई है, भारतीय जन मानस ने यह समझा है कि भारतीय तन्त्र तो अपने आप में सही है, उचित है और प्रामाणिक है परन्तु कुछ भ्रष्ट तांत्रिकों के हाथों में यह विद्या चली जाने से, बदनामी हो गयी है, अब उन्होंने पुनः तन्त्र की ओर अपना आकर्षण दिखाया है, उन्होंने तन्त्र साधनाएं सम्पन्न की है, ये भारतीय किसी मठ या मन्दिर के चक्कर में न पड़े, ये किसी औघड़ या बाबाओं के झंझट जाल में न उलझे और न इन्होंने कोई तन्त्र की दीक्षा ही ली इन्होंने तो इस बात को समझने की कोशिश की, क्या भारतीय तन्त्र सही और प्रामाणिक है, क्या हम पूर्वजों ने जो विद्या भारत में प्रस्तुत की थी वह प्रामाणिक है और क्या उन विद्याओं को जन साधारण सम सकता है।

और इसी भावना के फलस्वरूप उन्होंने कुछ क्रिया साधनाएं प्रारम्भ की थी न तो वह श्मशान में गये, उन्होंने मांस और मदिरा का सेवन किया, और न अप गृहस्थ जीवन में किसी प्रकार का व्यतिक्रम आने दि उनका अपना गृहस्थ जीवन सुचारु रूप से चलता र और साथ ही साथ अपना व्यापार या नौकरी करते इन साधनाओं की ओर प्रवृत्त हुए तथा अपने घर में मामूली उपकरणों के माध्यम से मन्त्र जाप एवं साध सम्पन्न की, और इनके माध्यम से उन्होंने आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त किये।

इन सब के करने से उनका तांत्रिक बनने का स्वप्न नहीं थे तो अपने समस्याओं से ग्रस्त थे और समस्याओं का निराकरण विज्ञान के पास नहीं था, मानसिक रूप से परेशान थे, अपने पुत्र के व्यवहार दुखी थे, पुत्री के विवाह में विलम्ब होने से परेशान पति-पत्नि के मतभेद से चिन्तित थे और इनका उत्त तो विज्ञान के पास था और न अध्यात्म के पास, इ

उत्तर तो तन्त्र के द्वारा ही सम्पन्न हो सकता था और उन्होंने इससे संबंधित मन्त्र जाप करना शुरू किया, और उन्होंने आश्चर्य के साथ देखा कि वे अपनी स्वयं की समस्याएं स्वयं हल कर सकते हैं, इसके लिए न तो पाखण्डी गुरुओं के चक्कर में पड़ने की जरूरत है, और न मठों, आश्रमों पर माथा रगड़ने की आवश्यकता है, और इसीलिए जन साधारण में इसके प्रति उत्सुकता और चेतना प्रारम्भ हुई, सामान्य और मध्यम स्तर के व्यक्ति ही नहीं अपितु उच्च स्तर के प्रबुद्ध व्यक्ति भी इन साधनाओं में रुचि लेने लगे, अपने आप को भारतीय और तान्त्रिक कहलाने में गौरव अनुभव करने लगे, उनके मन से हीन भावना दूर हो गई और वे पहले से ज्यादा सुखी पहले ज्यादा सफल और पहले से ज्यादा सम्पन्न हो सके।

ऐसी स्थिति में कुछ जिज्ञासु साधकों ने आगे बढ़ कर ऐसे व्यक्तियों की खोज प्रारम्भ की जो अखबारों में चर्चित तो नहीं थे जो आश्रमों के महन्त और मठाधीश तो नहीं थे, परन्तु जो सही अर्थों में साधक थे और उनके पास जाकर उन्होंने उन साधनाओं को सीखने की कोशिश की जो उनकी दैनिक जीवन की समस्याओं को सुलझा सके, जो उनके जीवन की कठिनाइयों में मार्ग प्रस्तुत कर सके, जो उनकी बाधाओं और विपत्तियों का निराकरण कर सके।

और मैंने देखा कि इन मामलों में स्त्रियां आगे रहीं, प्रकृति ने हठ और स्वाभिमान का विशेष गुण स्त्रियों को दिया है, जब वे किसी बात का निश्चय कर लेती हैं तो उसे पूरा करके ही छोड़ती हैं, तन्त्र के क्षेत्र में भी स्त्रियों ने जब भाग लेना शुरू किया तो पिछले कुछ ही वर्षों में कई स्त्रियों के नाम उभर कर सामने आये जो अपने आप में साधना के क्षेत्र में अद्वितीय है।

यह आवश्यक नहीं है कि कोई प्रौढ़ा या वृद्धा स्त्री ही, साधना में सफलता प्राप्त करें, साधना के लिए न तो किसी वर्ग, जाति और न आयु का बन्धन ही है, कोई भी स्त्री या पुरुष साधना सम्पन्न कर सकता है, इस में तरुणियों ने भी रुचि ली, और जब उन्होंने साधनाएं सम्पन्न की, उनके द्वारा चमत्कार दिखाये जाने लगे तो प्रबुद्ध वर्ग, बुद्धिवादी और महत्वपूर्ण व्यक्ति भी साहस करने लगे कि वास्तव में तन्त्र पुरुषों की ही बपौती नहीं है, अपितु स्त्रियां भी साधना में सफलता पा सकती हैं, ऐसी ही साधिकाओं में एक नाम उभर कर आया है, जिसे हीरु कहते हैं।

मैं नहीं कहता कि उसका पूरा नाम क्या है, वह किस की शिष्या है, ये विद्याएं उसने कहां से सीखी पर अखबारों में छप कर इसकी प्रशंसा हुई है, वैज्ञानिक लोगों ने उसका परीक्षण किया है: उसके चमत्कारों को देखकर उन लोगों ने दांतों तले उंगली दबाई है, वे यह मानने के लिए बाध्य हुए हैं कि भारतीय तन्त्र अपने आप में समृद्ध और जीवित है।

मनाली हिमाचल प्रदेश का एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है, यहां हजारों सैलानी घूमने जाते हैं यहीं से एक सड़क रोहतांग दर्रे की ओर जाती है, जो व्यास गुफा के पास से होकर आगे की ओर जाती है, व्यास मन्दिर से इसी सड़क पर लगभग १५ मील आगे, एक महत्वपूर्ण आश्रम है, जिसमें दो तीन वृद्ध स्वामी रहते हैं और उसके पास में ही यह हीरु नाम की तरुणी अपने माता पिता और भाई के साथ अत्यन्त सामान्य तरीके से रहती है।

पर यह अत्यन्त ही उच्च कोटि की तांत्रिका है, शायद पूर्व जन्म में यह कोई महत्वपूर्ण तांत्रिका रही है, यों भी हिमाचल में तन्त्र अभी तक जीवित है, और कई स्थान तो ऐसे है जहां आज भी विज्ञान उनके चमत्कारों को देख कर आश्चर्य चकित रह जाते हैं।

पिछली यात्रा में मैंने इस हीरु को देखा, तो मुझे उसका पूर्व जन्म स्मरण हो आया और मैंने उसके यहां लगभग दो घण्टे बिताये, उसको भी कुछ ऐसा आभास हुआ कि पूर्व जन्म में इस व्यक्तित्व से किसी न किसी रूप में संबंध रहा है।

मेरे साथ दस बारह सन्यासियों और गृहस्थ शिष्यों की टोली थी, और उसने मेरे कहने पर ऐसे कई तांत्रिक कार्य पल भर में सम्पन्न कर दिखाये जो अपने आप में आश्चर्यचकित कर देने वाले है, ये ऐसे चमत्कार है जिन पर सहसा विश्वास नहीं होता, उसने कुछ ही पलों में सौ-सौ के नोटों की वर्षा कर दी और मेरे साथ जो गृहस्थ शिष्य थे, हरीलाल, कृपा राम, मिवंडी राम, रत्न लाल आदि के पास ये नोट आज भी रखे हुए है, भूतों के द्वारा उसने कई कठिन और असंभव कार्य पल भर में करके दिखा दिये, जब रत्न लाल ने कहा कि तुम ऐसी ही तांत्रिका हो तो मेरे घर में एक बक्सा पड़ा है वह ला कर दिखाओ तो मैं तुम्हें जानू, और हीरू ने मात्र दो मिनट में ही वह बक्सा रत्न लाल के सामने रख दिया और उसकी आखें फटी की फटी रह गई, यही नहीं अपितु जब मैंने कहा 'हीरू' तुम्हें जमीन पर नहीं अपितु जमीन से छः फीट ऊपर शून्य में ही आसन लगाना है, और साधना करनी है, तो उसने मेरे सामने ही शरीर स्थित सभी चक्रों को जाग्रत किया और अचानक वह जमीन से ऊपर उठ गई, हवा में ही उसने पद्मासन लगाया और ध्यानस्थ हो गई।

तीन चार सन्यासी शिष्यों ने उसको नीचे झुक कर आ-जा कर देखा तो वास्तव में ही वह शून्य में स्थिर थी, एक दो गृहस्थ शिष्यों ने तो उसके इस प्रकार के फोटो भी लिये।

उसने कहा मैंने ये साधनाएं कामाक्षा मन्दिर में और उसके पास श्मशान में रह कर सम्पन्न की है, मेरे जीवन का एक मात्र उद्देश्य तन्त्र को सम्पूर्णता के साथ समझना है, सीखना है, और आज के इस विज्ञान के सामने चुनौती के साथ खड़े हो कर दिखा देना है कि तंत्र वास्तव में ही प्रामाणिक और महत्वपूर्ण है, तन्त्र के माध्यम से धनाढ्य और सम्पन्न बना जा सकता है, किसी भी प्रकार के कार्यों को सम्पन्न किया जा सकता है, और

प्रिय वशंकर यन्त्र

इसके माध्यम से विज्ञान को चुनौती दी जा सकती है।

फिर उसने तांत्रोक्त विधि से गुरु पूजन किया और अपने आप को पूर्ण समर्पण भाव से विनीत हो कर कहा ये सब विद्याएं तो पूर्व जन्म के संस्कारों के फलस्वरूप जल्दी ही प्राप्त हो गई है, पर अब मैं गम्भीरता से उच्च-कोटि की साधनाएं सम्पन्न करना चाहती हूं, सीखना चाहती हूं, मुझे आपका सानिध्य और संरक्षण चाहिए।

आज भी कोई भी व्यक्ति उस स्थान पर जाकर हीरू से मिल सकता है, और इन आश्चर्यों को तन्त्र के इन अद्भुत चमत्कारों को भारत की गौरवशाली इस प्राचीन विद्या को अपनी आंखों से देख सकता है, समझ सकता और अपनी कसौटी पर परख सकता है।

वास्तव में ही भारत को अपने पूर्वजों पर, तन्त्र पर, और हीरू जैसी साधिकाओं पर गर्व है।

★

देव दुर्लभ

शीघ्र सिद्धिदायक

भगवती साधना शिविर

१८-३-८८ से २५-३-८८ तक

दुर्लभ अवसर

चैत्र नवरात्रि तो वास्तव में ही देव दुर्लभ मानी गई है, और फिर इस बार तो ज्योतिष की दृष्टि से पूर्ण सिद्धिदायक योगों से सम्पन्न इस नवरात्रि का सूर्यग्रहण से भी पूर्ण संबंध बना है फलस्वरूप साधना की दृष्टि से यह एक दुर्लभ, शीघ्र सिद्धि दायक एवं अद्वितीय पर्व बन गया है।

दस महाविद्या साधनाएं भी

इस दुर्लभ शिविर में केवल भगवती दुर्गा जगदम्बा साधना ही नहीं, अपितु दस महाविद्याओं से संबंधित दुर्लभ साधनाएं भी सम्पन्न कराई जायेगी, जो कि आपके जीवन का अविस्मरणीय अवसर होगा, फिर भला कौन ऐसा साधक होगा, जो इस साधना शिविर में भाग लेने से वंचित रहे।

लक्ष्मी प्रत्यक्ष सिद्धि

और फिर इसी शिविर में (१) लक्ष्मी प्रत्यक्ष सिद्धि (२) हरिद्रा गणपति सिद्धि प्रयोग (३) सूर्य सिद्धि प्रयोग और (४) नवनिधि-अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा जैसी दुर्लभ गोपनीय और महत्वपूर्ण साधनाएं भी सम्पन्न कराई जायेगी।

घर पर नहीं

ऐसी साधनाएं घर पर सम्पन्न होना संभव नहीं, क्योंकि ये गोपनीय साधनाएं है, जो गुरु चरणों में बैठकर ऋषितुल्य जीवन जीते हुए ही सिद्ध की जा सकती है, आपके लिए ही तो यह साधना शिविर लगाया गया है।

स्थान रिजर्व करा लें

स्थान-न्यूनता की वजह से भारतवर्ष के साधकों एवं पाठकों को शिविर में भाग लेने देना संभव नहीं है। फिलहाल, "साधना शिविर अनुमति प्रपत्र" की प्रतिलिपि कर उसे भर कर सौ रुपये के मनिआर्डर, चैक, ड्राफ्ट के साथ हमें भेज दें, तब आपका स्थान रिजर्व माना जायेगा, शिविर की शेष धनराशि वहां आने पर जमा करा दें।

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान डॉ० श्रीमाली मार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

रजि० नं० २५३०५/८१ पोस्टल एल० आर० नं० ३६६७/८६-

संसार का सर्वाधिक दुर्लभ एवं अप्राप्य

पारद शिवलिंग

(बारह तोले का)

जिसके घर में स्थापित होने से ही जीवन का पूर्ण सौभाग्य प्राप्त हो जाता है

- संसार में सब कुछ सुलभ है, प्राप्य है, पर पारे को ठोस बनाकर शिवलिंग का निर्माण कठिन असंभव अप्राप्य ही है।
- और फिर द्वादश रुद्रों के प्रतीक बारह तोले का सजीव सप्राण, व चैतन्य सिद्धि शिवलिंग हो तो फिर उसका कहना ही क्या?

- और आप इसे प्राप्त कर सकते हैं, पत्रिका के आजीवन सदस्य बनकर।

नियम:-

- आप पहले मात्र ६००)रु० भेज दें, मनिआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से हम आपको ९००)रु० की वी० पी० से यह दुर्लभ शिवलिंग उपहार स्वरूप भेज देंगे।
- इस प्रकार आपके १५००)रु० पत्रिका कार्यालय में जमा रहेंगे, व आपको जीवन भर पत्रिका मुफ्त मिलती रहेगी।
- और ये १५००)रु० भी आपकी धरोहर धनराशि है, नियमानुसार सूचना देकर इस धरोहर धनराशि को आप वापिस प्राप्त कर सकते हैं।

यदि शिवलिंग पसन्द न आवे, तो पूरी धनराशि वापिस प्राप्त कर सकते है

एक दुर्लभ [illegible]सर

मात्र २१-४-८८ तक ही। इस तारीख तक [illegible] उपहार आप प्राप्त कर सकते है।

सम्पर्क

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)